श्री

जिनाज्ञाप्रदीप.

सिद्धमूर्ति विवेकविलास.

भाग दूसरा.

कर्ता

युक्तिवारिधि उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणि

२२ टोळोंके ७४ प्रश्नोंका जवाब

प्रकाशक

वैद्य पण्डित जीवण मह्लमुनिः हक विद्याशाला
के मालक उपाध्यायजी के शिष्य प्रेमचंद अमरचंद
बीकानेर.

मुंबई-"निर्णयसागर" प्रेसमें बालकृष्ण रामचंद्र
घाणेकरद्वारा मुद्रित

विक्रम संवत् १९६६ आवृत्ती १०००

जाहिर खबर

तपागच्छी मुनि वल्लभ विजयजी संवेगीने पालणपुर सं० १९६६ के चोमासमें ढूंढियोकों सप वावत कप दिखाणे चोपडी छपायके भेजी उसमें लिखा है बाईस टोलेवालोंका सप करणेका विलकुल दिल नहीं दिखता क्योंके २२ सम्प्रदायके तरफसें जो समाचार अहम्मदावादमें निकलता है उसमें दत्तसूरजीकों कोकशास्त्रका वणाणेवाला लिखता है, इसवास्ते हमारा जवाब है श्री जिनवल्लभसूरि के पट्टप्रभाकर लाखों घरोंकों जैन धर्म धराणेवाले दादा गुरुदेव जो जगे २ जैन संघसें पूजनीय इन श्री जिनदत्तसूरि ने तो कोईभी कोकसबंधी ग्रंथ वणाया नहीं क्या समझके लिखते हो दत्तसूरि' इस नामके दो तीन और भी आचार्य हो गये हैं वेगड खरतरमें भये है उनोंने कोइ ग्रंथ वणाया सुणा नहीं एकदत्तसूरि वायड गछमें भये है उनोंनें विवेक विलास शकुन ग्रंथ जो की हीरालाल हंसराजनें गुजरातीमें छापा है इत्यादि ग्रंथ इनोंनें वणाया है न तो ये दत्तसूरिः परकाय प्रवेशनी विद्या सिद्ध थे न इनोंकै नामकै पिछाडी जिन संज्ञा है नहीं कोई इनोंनें राजन्य वसी अन्य मतियोंकों माहाजन वणाया है नदादाके नांमसें इनोंकी चरण थापना पूजे जाती है वायड गछी दत्तसूरि, संवत विक्रम १२७५ में भये हैं जिनोंनें वस्तुपाल तेजपालकों उपदेश देकर द्रव्य भेषधारियोंका वंदन सत्कार सरू कराया है ये वात प्रबंध चिंतामणीमें लिखा है और दादा गुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरि' खरतर गछ नायक जिनोंनें संदेह दोलावली चर्चरी आदि अनेक धर्मो उपगारी ग्रंथ वणाया

है उनोंका स्वर्गवास तो सवत १२११ में अजमेर नग्रमें हो गया इसवास्ते खरतर गछी श्री जिनदत्तसूरीश्वरनें तों कोई कोकसवपी शास्त्र वणाया नहीं अगर वणाया होय तो वो ग्रथ कहा है क्या नाम है सो वाईस सप्रदाइयोंनें नाम प्रगट जाहिर करणा लेकिन् दुसरा जवाब यह हैकी ८४ गछके किसीभी आचार्यनें पूर्वाचार्योंके वचनोंके प्रमाणसें कोई भी ग्रथ रचा होय तो सब गछवालोंकों यथार्थ माननीय है जेसे भद्रबाहू स्वामीनें जोतिषके निमित्तके भद्रबाहू सहितादि ग्रथ वणाया सामुद्रक वणाया तो इसमें दोष क्या है तीर्थंकर परमात्माके ज्ञानमें कोईभी विद्या वाकी नहीं चवदे पूर्वसें वाहिर कोई भी अक्षर विज्ञान वचा नहीं २२ सप्रदाई द्वेषबुद्धि छोडके ३२ सूत्रमें ही हृदय पट खोलकै तो देखे क्या इन सूत्रोंमें वेस्याओंका वर्णन विपाक सूत्रमें नहीं है और सुदर स्त्रीका वर्णन क्या उवाई सूत्रमें नहीं है नगरकोट खाइ घोडा हाथी कोनसा वर्णन वाकी है जरा तत्व दृष्टीसें विचारो चार अनुयोग रूप सूत्रोंमें कोनसी बात वाकी है तो क्या अर्थ कहणेवाले तीर्थंकर सूत्र रचणेवाले गणधरोंकों २२ सप्रदाई दोषारोपण करेगें ७२ कला ऋषभ प्रभूनें जाहिर किया और उस शास्त्रोंका साराश प्रकरण आणेसें सूत्रकारोंनें जगे २ दरसाया है उपदेश सब अनुयोगका होता है आदेश एकात निरवद्यका तीर्थंकर गणधरकी आज्ञा मुजब होता है इसवास्ते हे पक्षपातियों बहुश्रुतियोंकी सेवाकर शास्त्र रहस्य समझो जती साधू डड रखते हैं वो ओपग्राहिक उपगरण सूत्रों की आज्ञा मुजब है थिवर कल्पमें दड रखणा सिद्ध है भगवती सूत्र तथा दसवैकालिक सूत्रमे दडवा १ कुडवा २ पडिलेहण करणा लिखा है बारे कालीमें नहीं चला है, एसी बात लिखणी चाहिये जो की

शास्त्र सूत्रसें विरुद्ध नहीं होय एसे २ लेख अज्ञपणा सिद्ध करता है और हम तो तुमको मित्र भावसें यथार्थ उत्तर लिखा है जो प्रश्न पूछेगा और झूठा आक्षेप करेगा उसकू क्षयोपशम मुजब जवाब देणा जैन पंडितोंका धर्म है जो २२ सम्प्रदाई तथा मताध लोक एक बडी जैन कोग्रेंस भरके सुधारा और संपका प्रयत्न बाधे तो बहोतही कल्याण कार्य हो जाय पहला पक्षवादी जन पक्ष उठाता है तब यथार्थ प्रत्याव स्थान करणा होता है तुम पक्षपातकै नमूने दरसाते हो इसकू तदन बंध करो तो सब मिसल बैठ जाती है ।

हमारे इहां छपे भये तइयार ग्रंथ.

दादा गुरु देव मत्र युक्त गायन पूजा परचोंका सक्षेप वृत्तात १

सोलेचाणाक्यका अर्थ,शकुन,काम होगान होगा पासाडालणेका,स्वरोदय॥।

सिद्धमूर्त्ति विवेक विलास मूर्त्ति स्थापना कायदेसें सिद्ध प्रथम भाग ॥

दूसरा भाग जिसमें ढूढियोंके ७४ प्रश्नोका जवाब द्रव्यपूजा३२सूत्रसें ॥।

रत्नसमुच्चय (रत्नसागर) सें अनेक वस्तुयें जादा प्रतिक्रमण चैत्य वदनादिक स्तोत्र बारे मासी तपस्याओंकी विधि मडल पूजा खरतरगच्छतपागच्छका एसा कोई कर्त्तव्य बचा नहीं सो इसमें नहीं हो एक पुस्तक पासमे होणेसें दुसरी धर्म क्रिया बाबत श्रावगोंकों २० पुस्तक नहीं चहिये ८०० पन्ने अठ पेजी पक्के पूठे ग्लेज कागज कम कीमत। ४।

पूजा महोदधी खरतरगच्छतपा गछकी गाणेकी ३७ पूजा मत्र तथा विधियुक्त २॥

श्रावक व्यवहार चमत्कारी धर्मकै साथ रुजगार धन पैदा करणेका ग्रथ १

वैद्यदीपक इसमें ७ प्रकाश है प्रथम प्रकाशमें जगत्का अनादि स्वरूप जीव कर्मका संबंध दरसाया है प्र० २ में वदनकै सप सर्चेका खुलासा अंग्रेजी देसी दोनोंका सामिल किया है नाम देसी अंग्रेजी दोनों है प्र० ३ में, हवा, पाणी, विगडणेका कारण, पहचाण, सुधारणेकी तजवीज, प्लेग नही होसकै, वेमारी कोई भी नहीं हो सके, मकानके विगडी हवाकू पहचाणना, साफ करणा, अनाज फल फूल साग दूध दही मखन छाछ मसाला तेल घी चा इनोंका गुण अवगुण केसें खाणा पीणा जिससें तनदुरस्त रहै एसी विधि, स्नान, कसरत, मर्दन, दातन, पानसुपारी इन सवोंका तनदुरस्तीकै साथ वर्त्ताव, छ ऋतुओंका पथ्य षट्ट रसका गुण अवगुण इत्यादि प्र० ४ था अपणी तासीर वायुकी है, या पित्तकी, कफकी, या खूनकी है, इसकी पहिचाण, वात पित्त कफ खून काहेसें खरान होकर, वेमारी आती है, वो सब दरसाया है फेर- नाडी, पेशाब, जीभ वगेरे, देसी, डाकदरी, दोनु परीक्षा रोग पह- चानकी लिखी है, अपणी वेमारी आप पिछान सकता है प्र० ५ में घी, दवाका तेल, पाक, मुरब्वा, गोली, सरवत, काढा, चटणी, मह्लम, लेप, रस, गुलकद, वगेरे सब चीजोंकै वणाणेकी विधि, जुलाब, उलटी कराणेके रोग, तथा विधि, गरम पाणीसें तथा ठंढे पाणीसें पेटमें विगर दवा दिये रोग मिटाणा, सब दवाइयोंकै गुण, अवगुण, तेतीसही अक्षर १४ स्वरोंकै दवाका नाम अनुक्रमसें, देसी दवा सोधनविधि, अनुपान रोग २ का जुदा २, अंग्रेजी तोल माप, माना ऊमर मुजव देणेका प्रमाण, रोग २ प्रति मिटाणे

काढा, गोली, चूर्ण, देसी, तेसे अंग्रेजी मिक्श्चर,मुसलमानी यूनानी नुसकै, होमियोपथी क्रोमोपैथी, इलाज सब रोगोंपर, प्र० ६ में रोगके कारण लक्षण २० इलाज देसी डाकदरी हकीमी ओर होमीयोपथी पथ्य कुपथ्य फैर स्त्री रोग लक्षण इलाज पथ्य सतान पैदा करणा ऋतुधर्म बधनका इलाज बचोंके रोग लक्षण इलाज पथ्य, जानवरोंकै रोगोकै इलाज, जगम जहरोंका इलाज, थावर सोमल अफीम पारा हरताल धतूरा कणेर डाकदरी जहर सबोका इलाज, मरदमीका इलाज, ब्राम्ही मोहरा गुटिका वणाणेकी विधि, पुत्र पैदा करणा इत्यादि ग्लेज कागद ८०० पन्ने, ३५०० करीब ग्रथ, जिसकी तारीफ लिखणे कलम बेहाल है हर गृहस्थियोंको घरमें रखणेकी जरूरी है, क्योकै पहली सुख निरोगी काया, दिव्य अक्षर, निर्णयसागर, मुबईका छपा. ५

इन किताबोंकै जो दाम लगाये हैं उसका कमीसन काटकै लिखा है शकुन ग्रथ खरतर गछाचार्य दादा साहिब विरचित मूल भाषा छद कर्त्ता उपाध्यायजी इसमें विदेश विदा होते या हरकाम जाते जो शकुन समुख आवै उसका फल देस छींकका अग फुरकणेका वर्षात इस वर्षमें किस महीने वरसेगा पहले मालम होणा घर कराणे जमीन लेणा उसकी अच्छी बुरीकी परिक्षा नींव खोदते पदार्थ निकले उसका शुभाशुभ फल इत्यादि दरसाकर गुरुदेवनें एसा अजबी परीक्षा धरी है के कोई किसमका व्यापार करणेवाला चेत सुदि २ वरस बैठते चद्रमाका ढग देखो मजाल क्या है सो धन न पैदा करै उस मुजब करे तो जरूर लाभ उठावै मारवाडी

भाषाके सुभाषित राजियेके दोहे १२४ किताब रत्न छोटा मगर गुणका रत्न यथार्थ है

अब छपता है सो ग्रंथ ओसवंश मुक्तावली. १

जैन धर्म चलता कम कैसें पडा फेर क्रिस २ आचार्योंनें गोत्र माहाजन किये प्रथम १८ गोत्र ओसियामें होणेका इतिहास साल सवत, बाद भोजकोंका इतिहास राजपूतोंकी जात तातेड वगेरे अठारोंकै नाम आचार्य रत्नप्रभसूरि प्रतिबोध बहुत विवरण है, सुहचिंती गोत्र, वरडियागोत्र, कोठारी वडेर चोपडा गाधी साख १२ धाडेवाटाटिया कोठारी, झावक झामड झवक, चोरडिये पारख गोलछे सावसुखा साखा प्रतिसाखे मिलकै ५० तीर्थभाई १८, भणसाली चडालिया भूरावद्दाणी, लूकड, आयरिया लूणावत, बहु फणा बापना गोत्र ३७ नाहटा पटवा साखा प्रतिसाखा, डागा मालू भाभू पारख छोरिया, राका सेठी सेठिया जात ७ साखा प्रसाखा, राखेचा पूगलिया, लुणिया, डोसी सोनीगरा, साखला सूराणा सियाल साड सालेचा, आघरिया, दूगड सेखाणी कोठारी सुघड, मोहीवाल गाग दूधेडिया साखा १६, चोयरादसाणी फोफलिया वछावत साखा ९, गेलडा जगतसेठ, लोढा २ तरेके, चोरड, नाहर, सिंघी नवलखा, सालेचा बोहरा, बागाणी, भडारी डागा तिलेरा बोहरा ढढा श्रीपती, पींपाडा, घोडावत छज लाणी, कठोतिया, मूतेडिया, जडिया काकरिया आ डा खटोल श्रीश्रीमाल बावेल सघवी गडवाणी भडगतिया रूणवाल बगाणी पोकरणा कोचर मुहतोका विस्तार वर्णन, वैद, मीनीखजानच। मुगडी, मुहणोत पींचा, चाकचकारी खबर, कच्छ देसी श्रावकोंका वृत्तात, श्रीमालगोत्र उत्पत्ती १३५ नख, पोरवालगोत्र उत्पत्ती २४ नख, हूंबडगोत्र,

श्रावगीगोत्र ८४ वघेरवाल गोत्र ५२ नरसिंघपुरा गोत्र २८ गौरारा गोत्र २२ अग्रवाला गोत्र १७॥ सतरे इन सबोंका इतिहास कोण राजपूत किसतरे जैनश्रावक भये सो कारण सवत् किस आचार्यनें प्रतिबोध दिया इत्यादिक बहुत विस्तार वाला अद्वितीय प्रमाण युक्त छपता है लेणेकी सीघ्रता करणा एसा दुनियामें कोण होगा सो अपणे पूर्व बडेरोंकी वातोंसें वाकबकार न होय ८४ वणियोंकी जात १२॥ न्यात भोजेकोंके ऋषीगोत्र गाम वेद साखा प्रवर माता भेंरू गणेश सारी सोलेही गोत्रोंका विवरण इस ग्रथमें निर्णय यथार्थ दरसाया है प्रथम मूल्य भेजणे वालोंसें टपालखर्च माफरू १।) सवा कलदार लिया जायगा जती पडतोंके वास्ते ये कल्पवृक्षही समझणा इसग्रथकू रजीष्टर कराया सर्व हक्क कर्त्ता स्वाधीन है सो कोईभी लिखेगा या छापेगा वो दडका भागी होगा

इसकेबाद स्वप्न जो प्राणियोंकू आता है उसका फल मिलाणेका शास्त्र और पुरषोंके बदनके सब शुभ अशुभ लक्षण चार जातके पुरुष फेर स्त्रियोंके शुभाशुभ लक्षण चार जातकी स्त्री इसके सग अनेकानेक वर्णन दुनियामें कामके अर्थी प्राणियोंके हजार नेत्रका उजाला ये ग्रथ कराणेवाला है छद भाषा दोहा सोरठा बध उपाध्यायजी रचित है १) ये सब पुस्तक मिलणेका ठिकाणा बीकानेर राजपूताना मोहल्ला रांघडी उपाध्याय श्रीरामलालजी माहाराजकी विद्याशाला, पत्र देणा, प्रकाशक मनी पडित वैद्य श्रीजीवणलालमुनि सर्वहक्क मालक शिष्पपेमचद अमरचद ॥ टिकट भेज सूचीपत्र मगा लीजिये वैरग नाटपेट पत्र न भेजें पुस्तक लोटायगा परदेससें वो परमेश्वरसें गुनहगार होगा लायकोंकै बस है ॥

सूचना.

इस जिनाज्ञा प्रदीप (सिद्धमूर्ति विवेकविलास) भाग दूसरेमें जो प्रतिमा उत्थापक मतकी उत्पत्ति लिखी है सो विक्रम सवत् १६०० सें में त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी अकब्बरबादसाहकों सब दर्शनियोंसें पहले पहल खरतर गछाचार्य श्रीजिनचद्रसूरीश्वर लाहोर नग्रमें दयाधर्मका उपदेश देकर अनेक तरेसें जैनधर्मका उद्योत करा, सर्व प्रजाका असाचार दुख, जो हुमायू बादसानें जारी किया था सो सब बधकरवाया इसबातका निवरण हमारा सग्रह किया भया ओस वशमुक्तावली अथमें बोथरा बछावत वशावलीमें लिखा भया देखणा, उन महाराजाके साधू शिष्यनें चोपई बणाकर लिखा वेसा हमनें लिखा है इन सूरीश्वरके दोय साधू महाविद्वानोंकों बादसा अकब्बर गुरूकों अर्ज करकै अपणेकों धर्म शिक्षा होती रहै इसवास्ते दिल्लीमें सग रखगया था एक तो वेष हर्षमुनि दुसरे परमानदमुनि. । तपागछ खरतर गछके आपसमें बहोत सप चलता था इन दोनों खरतर गछी 1
जतियोंनें बादसाह अकब्बरसें सुपारस करके तपागछ नायक हीर विजयसुरि को गुजरातसें बुलाकर बादसाहसें अरज करकै मोहर छापके कागद फुरमाण पन पचतीर्थ जैनश्वेताबरोंके कबजाके लिये करवा दिये कारण ये समझके की जेसें श्रीजिनचद्रसुरि युगप्रधान जैनधर्मके प्रभावक तेसें ही हीरविजयसुरि प्रभावक इससें अवल फुरमाण करमचद बछावतकू गुरूमाहाराजनें सौंपा था सो बीकानेर बडे उपाश्रयमें बडे भडारमें मोजूद है नकल खरतर गछ श्रीपूज्यजीमाहाराजजी पास मौजूद है एसा २ विचार देख फुरमाण लिखवादिया तपागछी उसकी नकल यथार्थ सागर तपागछके पाटियादार नाणचदजी मुबईसें मासि

कपत्र विवेक प्रकाशमें छापी वो यथार्थ है, श्रीजिनचद्रसूरि. परमत्यागवान बादशाहनें जो जो फुरमाण नजर किये वो सब करमचद वछावतकों बादसाहसें दिलादिया वो अरज्जीका लिखा हमनें आखोंसें देखा है फेर दिखा सकते हैं,

(प्र०) आपने तो वेष हर्ष परमानद जतीकों खरतर गछका लिखा है और हमनें एक प्रसिद्ध मोटेमाहाराजकै छापे भये और बणाये भये ग्रथमैं पढा हैं कै वेष हर्ष परमानद जती तपागछी आचार्यके चेलेथे सो ये क्या बात है एसे जगप्रसिद्ध माहाराजका लेख मानता तुमारा लेख कोण मानेगा (उ०) अगर प्रमाण युक्त वचन किसीभी बुद्धिवानका हो माननेमें हरजा नहीं वे प्रमाण अहकार बस फक्त अपणी बडाई रूप वचन कोइ लिखेतो माननीय कभी नहीं होसकते चाहै मोटे माहाराज हो चाहै छोटे माहाराज (प्र०) आप प्रमाण देकर उण जतियोंका खरतर गछीपणा सिद्ध करदोगे तो निरापेक्षी तो मानही लेगें पक्षपाती नहीं माने तो क्या वो न्यायवत कहलायगें, कभी नहीं, लिख बताइये, (उ०) हे मित्र! सब प्रमाणोंमें प्रबल प्रमाण कोनसा है तो सब दुनियोमें मसहूर हैकी, प्रत्यक्ष प्रमाण, हे मित्र ले हम प्रत्यक्ष प्रमाणसें वो दोनू साधू खरतरकै थे एसा सिद्धकर देते हैं वेपहर्षमुनि.के शिष्य विजयहर्ष उनोंकै शिष्य शातिहर्ष इनोंका शिक्ष जिनहर्ष यो चारों पीढियोंकी निसाणी ये क्रिया उद्धारी रहै जिनहर्ष जीनें महाबल मलयासुदरीकी चोपई श्रावककी करणी लघु चोपई अनेक चोढालीये अयवती सुकमालका नोढालीया सिझायों वगेरे अनेक भाषा ग्रथ सस्कृत प्राकृत ग्रथमें खरतर गछ श्रीजिनचद्रसूरि चोथे पट्ट धर पूर्वोक्त चंद्रसूरीका राज्य शासन लिखते हैं क्योंकी खरतर

गछमें । परपरा है सो चोथे पाटधारी आचार्यका नाम श्रीजिनचद्रसूरि. होता है जब रगविजयगणीनें रगविजय खरतर शाखा फांटी तब शातिहर्ष और जिनहर्षजी उस साखामें चलेगये बाद इनोंके केइ शिक्ष भये जिनोंकी नदी (नाम) भिन्न २ श्रीजिनचद्रसूरि उस साखा- वालोंकीया पना फेरदी कारण खरतर गछमें चोरासी नदी चलती है चोरासी गछ इसमेंसें भये इसवास्ते मगर जो त्यागव्रत उत्कृष्टता रखता हैवो किसी कारण नदी आचार्यसें लेता है जैमें उपाध्याय क्षमाकल्याण- गणि दीक्षाकी कल्याणनदी है इनोंके धर्मानद धर्मविशाळ दीक्षानदी सुगणगणि सुमति मडण दीक्षानदी ये सवेगी साधुओनें खरतराचार्य पास नदीली और कोई नहीं लेकर अपणे पूर्वजोंको आचार्यनें नदी दी उसीपर ही चलता है इस वखत क्षमा कल्याणजी माहाराजके सिंघाडे वाले जैसे राजसागर ऋद्धिसागर सुखसागर भगवानसागर सुमति- सागर मणीसागर इत्यादि प्रणाली चला रखी है वेसेंही चार पीढीतक वेपहर्ष साधूके सतान जिनहर्षजीतक हर्षनदी चलाई बाद इनोंके शिक्ष प्रशिक्षोकी नदी क्रम मुजब पदलाई गई जिनहर्षजीके एक महा- विद्वान शिष्य श्रीसार जिसनें आनद श्रावगकी गायनरूप सधी बनाई उसमें जिनहर्षगणीका आपशिक्ष लिखता है इसनें रगविजय खरतरमेंसें श्रीसार गछ खरतर शाखा फेर फाटी एसे खरतर साखा ११ मूल खरतर १ एव १२ आचार्य सबोंकी प्ररूपणा सामाचारी अभी भी एक है कोई बातका फरक किसीनें नहीं किया, इस प्रमाणकी प्रत्यक्ष सबूती उनोंके शतान रगविजय साखा खरतर गछमें मौजूद है अब श्री परमानदजी जैनधर्मके महाप्रभावीकरू उपाध्यायपद श्रीजि

नचद्रसूरि ने स । १६२५ में इनायतकी और फुरमाया तेनें जैनधर्मके सघमें परमानद ही वरताया इसवास्ते तेरे संतानोंकी दिक्षा की नदी आचार्य वदलायगें मगर प्रसिद्धनाम तो नदही रहेगा तबसें उनोंके शिक्ष प्रसिक्षोंकी वो प्रनाली चली इसमें कलकत्तेमें खरतर भट्टारक गछके आदेशी दुर्गानदजी जिनोंके शिक्ष रत्नानदजी उनोंका शिक्षविद्वान सदानद नामका २५ वर्षमें देहात भया तब रत्नानदजी सवत् विक्रम १९३० में किया उद्धारी ५० हजारका द्रव्य त्याग महाव्रती होगये श्रीजिन मुक्तिसूरीश्वरके मवईके श्रीमाहावीर स्वामीके पाटियादार आ देशी सदानदजी ज्ञानानदजी सं । १९५७ में देहात भया कमलानद मुनिका पोत्रा श्रीजिन कीर्त्तिसूरीश्वरका आज्ञाकारी हेमानद अभी जालणे सहर दक्षण १९।६६ वर्त्तमान मोजूद है मवई हमसें मिलणे सघयुक्त आया था उस वखत राय बद्रीदासजीके मुनीम श्रीजमनालालजी कोठारी हमारेसें धर्मचर्चा प्रश्न पूछता था मेंनें कहा प्रत्यक्ष देखलो ये परमानदजीका सोलमाशतान प्रत्यक्ष हाजर है मनमें सका होय तो चिठीद्वाराया प्रत्यक्ष देख निश्चयकर सकते हो ये मेरा लिखा प्रतक्ष प्रमाण वडे २ कलकत्तेके यती सब गछके और श्रावक सब रत्नानदजीकों देखणे वाले मोजूद है रायसाहब बद्रीदास-जीने तो दुर्गानदजीका हजारों दिनोंतक धर्मध्यान सुणा हैं और भी बुढ्ढे श्रावक वाकबकार मोजूद है एसाई मवईमें मोजूद है न मानो तो इहाके रातदिन रहणेवाले सागर गछी नाणचदजी अखैचदजी जतीसें निश्चय करलो इस बातकू अहम्मदावादी सूरती गोढ वाडिये सब सघ ‸ है क्योंकी ९।१० वर्षही उनोको मरेवीता है

मोटे माहाराज अगर इस अपेक्षासें लिखते होयकी खरतर गछ तपगछ दोनू एकही है और तत्वदृष्टिसें एकही है तब तो कोई दुसरी बात नहीं अगर अहकार द्वेपापत्तीसें लिखा है अपणे पक्षकी महत्वता दिखाणे तब तो जो कुछ प्रमाण युक्त है सो हमनें लिखदिया है इसमें कोई दलील नहीं है और हे श्रावको तुमारा तो ये हाल इस वखत पक्षपात दृष्टि रागसें बणरहा है जैसें एक किसीनें कहा अरे बैठा क्या देखता है तेरा कान वो कउआ अभी लेकर उडगया तब वो कउएके तरफ देखता है मगर घरका कान नहीं समालता जरा किसीनें त्यागीपणेकी अथवा कडाकै निकालणे शीतउष्ण सहणे आदि ढग दिखाया जब एक चला तो दुसरा तीसरा एव गडर प्रवाह सरू होजाता है जेसें (दोहा) एक भेड आगेचली, पीछै चली कतार, एक भेडकूएपडी सबी भेड उसलार इसवजे भारतवर्षकै बुद्धिहीन केइ अद-म्योंपर इतिहास तिमिर नासकमें लिखा हैं एक सेठसाहबकों जोतसी जीकै वचनोंका पूरा विश्वास था मानू परमेश्वरही है उनोंनें जन्मपत्रीमें ४५ वर्षहीकी ऊमर सेठजीकी वर्त्तीथी अमुक लग्नमें उसदिन देह छूटेगा बस लोकोंसें सेठसाहब फुरमाणे लगे हम उसदिन निश्चै मर-जायगें घरवाले रोणे पीटणे लगे किसी बुद्धिमाननें समझाया अरे क्यों रोतेहो एसा क्या जोतषी कुछ केवली तो है ही नही ५ बात मिल जाती ५ नहीं भी मिलती रागद्वेशका भरा महत्वपणेका भरा एसेंकों एका एक परमेश्वरतुल्य मानना ये कोई बात है किसी आपके पडेरेकी बनाई पोथी योथीसें लिख मारा होगा एसा समझाकर धीरज दिया बस वोदिन निकल गया महीनावरस निकलगया लोक कहणे लगे

क्यों सेठसाहिब जन्मपत्रीका लेख कैसा है सेठसाहिबनें फरमाया सच सच है हमतो उसीदिन मरचूके थे जो दिन पडितजीनें फरमाया था क्या कभी पडतजीका लेख झूठा होसकता है आगू उनोंकी लिखी वीसों वात सच निकली तो ये बात कभी झठ नहीं है, बस भाई विश्वासधारियोंका एसा ढग इस वखत चलता है चाहै केसाही हो बस मोटेमाहाराज लिखगये गप्पसप्प ग्रथपर धप्प लगाणेवाला लिखता है कल्पित पट्टावली मोटे महाराजनें लिखी है सो प्रमाण करणे लायक नहीं ये लिखणेवाले भी जगप्रसिद्ध पुरुष है बस विचार करो गुरु अगर असत्य बात लिखदी है तो चेलेजी ज्ञानवत न्यायवतकै खटकती ही है इसवास्ते हे धर्मबधुओ एकता कर सप करो आनद-घनजी क्या लिखते हैं, गछना भेद बहु खेद निहालता तत्वनी वात करता नलाजे उदरभरणादि० जिम २ बहुश्रुत बहुजन सम्मत बहु शिष्यैपर यरियो तिम २ जिनसासननोवैरी निश्चै भवजल दरियो १ यशो विजयोपाध्याय इस वचनमें कमाल करगये हैं जो बहुश्रुती बहु-तोंका पूजनीक बहुत चेलोंवाला होता है तेसें २ जिनआज्ञा विरुद्ध प्ररूपणा करणेवाला होकर भवसमुद्रमें गोते खाता है सो हाल प्रत्यक्ष देखा बणगया इसवास्ते सर्व सघकै त्यागी एकता कर जैनधर्म चढै एसा प्रयत्न चाबो सामाचारी निज २ का झगडा छोड एक जिन-आज्ञा स्याद्वादसें चलो ५० ग्रथकी सम्मती भद्रबाहूस्वामी प्रमुख श्रुतकेवलीकी आणा जो सामाचारी प्रमुख आचरते हैं एसे खरे साधूकों असाधू कहणा भूल है जिनवाणीकै अनुयोगकै पढणेवाले क्रियावत तपेश्वरीकों असाधू किस न्यायसें कोइ कहसकता है साधूकू असाधू कहणा भूल है जैसें ८४ गच्छाचार्यनें जैनधर्म सपसें चलाया एसे

चलाणा ही उदयका कारण है इसवखत खरतर गछ तपगछ कमला गछ आचल गछ विजय गछ तथा जिनप्रतिमाके माननेवाले गुजराती नागोरी उत्तराधी ये सब मिलके लोंकागछ सर्वोकों अपणे प्राणवत् समझो ये सब गछवाले जिनप्रतिमाके जैनसूत्रागमके वदक पूजक माननेवाले हैं क्योंकै गुजराती लोंकागछी नरपति चद्राचार्यकै हुकमसें मनसुखलालजी ऋषीनें धर्मसिंधु पुस्तक छापा है उसमें सर्व विद्यमान लोंकागछ कुवरजी पक्ष धनराजजी पक्ष तथा नागोरी उत्तराधियोंकी सर्व सम्मती जिनप्रतिमा जिनसारखी मानते हैं कोई सका नहीं इसवास्ते सम्यक्ती धर्म नधु है ॥

(प्र०) जतीलोक श्वेतावरी तो आपसमें मिलते हैं तव तो हमने पूर्वाक्त गच्छीयोंको बहोत ही सप करते देखा है एक २ कों वदन आपसमें आहार पाणी आदि एकही मानू देखा है भिन्नता देखी ही नहीं कोण जाणे प्रमादी गुणठाणे वर्त्तने लगे इसवास्ते सामाचारीका झगडा नहीं करते होंगें और नहीं करते हैं मगर हमने तो इसवखत नई रोसनीवाले जो त्यागी वैरागी बडे २ माहाराज विजयजी सागर-जीकै तो आपसमें वडाई ही सामाचारीकै झगडेकीही देखी है माहाराज आत्मार्थी होकर दोनों ८४ गछमेंकै एक गूरूके चेले होकर द्वेषभाव क्यों रखते ई ये होणा बुरा है (उ०) हा भाई तदन बुरा है इनाकों चाहिये गृहस्थोंकों अपने मतव्यकों पचागी सिद्धात प्रमाण उपदेस करते रहै आपसमें न झगडै श्रावककों सका पडे तो दोनोंका प्रमाण पूछ निश्चय करलेनै जिसकै पास जादा ग्रथोंकी सम्मती वो तो यथार्थ खरा और नयवादका कारण अपेक्षाकै कोई वचन किसी ग्रथमें

होय तो वो नयवाद भी सच्चा मगर कारण विचारणा सका त्याग श्रद्धापूर्वक धर्म करते रहणा सामाचारीका झगडा वृथा है ग्रंथसूत्रके वचनोंमें नयवाद है, आगे २ पूर्वाचार्योंका लेख देखते हैं तो एकांत पक्ष नहीं लिखा देखते हैं एकक्रिया लिखकर लिखा है केइयक आचार्य फेर एसा भी कहते हैं, एसा लिखा है मगर आजकल वालोंकी तरे एकात पक्ष ठहराणा नहीं दिखता क्योंकै एक तपागच्छमेंसें १३ सम्रदाय निकली, केइ आगमिया पाटणिया काजा कडुआ साकर कोथला आत्म इत्यादिक १३ से भी ओर २ मतातर निकले ये सब गुजरातमें, रविसागरके चेले शातिसागर सवेगीनें इछामत निकाला अहम्मदाबादमें, प्रतिमा उत्थापकमत भी गुजरातमें, तपागछकी समाचारीकों क्या समझ २ छोड २ कै नई २ कल्पना करते गये इसतरे पचमकालका स्वरूप वर्णणेसें एसा २ हाल बणता गया पार्श्वचद्रजी भी तपागछमेंसें भिन्न सामाचारी निकाली इसवखत वड गछके आचार्य स। १९।६६ कार्त्तिकमें सिंहसूरी हमसें मवईमें मिले और अपणा प्रवाह पट्टावली अविछिन्न परपरा वडगछमें मिलाई तब हम तो अचरजमें रहगये की मोटे महाराज तो लिखते है तपागछ है सो ही वडगछ है और फेर ये वडगछ कहासें आगया इसतरेका स्वरूपमें क्या समझमें आणेकी बात है केवली भगवान ही जाणे चम आखिरकों सब गछवालोंसें में अल्पबुद्धि क्षमापन मागता हू चार चोकडी उपशमावै क्षयोपशम करै क्षय करै वो अन्यदर्शनी भी परित्त ससारी होता है तो क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ घटाणे वाला जैनधर्मी मुक्ति जावै इसमें सका नहीं। आपका अभिन्न हृदय उपाध्याय श्रीरामलालगणि शिष्य पेमचद अमरचद

हमारे छपे भये ग्रंथ.

रत्नसागर (रत्नसमुचय)	५
जैन सूत्रोंमें वैद्यदीपक भाग पहिला	५
पूजा महोदधी खरतर गछ तपागछ पूजा ३७	२॥
श्रावकोंका रुजगारी ग्रथ	१
चाणक्य १६ अर्थ, जैन स्वरोदय, शकुनावली	॥।
मूर्त्ति मडण प्रथम भाग	॥
मूर्त्ति मडण भाग २	॥।
तेजी मदी काल जमाना शकुन वगैरे वहोत सग्रह	१
दादा साहबके परचैका मंत्र गायन पूजा	।

छपेगासो ग्रथ.

ओसवस १४४४ गोत्र इतिहास उत्पत्ती	१
स्वप्नेका फल अगके शुभाशुभ चिन्ह फल जैन	१
धूर्त्ताख्यान १८ पुराणोका	।
ईश्वरकी परिक्षा	१

परदेसी ग्राहकोंकों पोष्ट खरच जुदा लगेगा नाटपेट पत्र नहीं लिय जायगा अछे निर्णयसागर छापेके मनोहर टाईप, ग्लेज वढिया कागद मजवूत पूठे तारीफ पढणेसें मालम होगा पुस्तक मिलणेका ठिकाणा-वीकानेर राजपूताना विद्याशाला उपाध्याय श्रीरामलालगणि मत्री प० श्री जीवणमल प्रेमचद अमरचद प्रकाशक ॥

श्रीजिनाय नम॰

अथ विज्ञापन ॥

॥ मालमकरणेमें आता है श्रीयुत पारसगयवरचदजीने साडकेसरी-चदजीके सग पजाबके ढूढियोंकी तरफसें छपी जो पुस्तक सो हमारे पास भेजकर उसमें लिखे ५ प्रश्न उसका जबाव मागा सो प्रश्नका सारांस एसा है (प्रश्न पहिला) २४ तीर्थंकरोंके चक्रवर्त्तादिक घणे श्रावक भये उसमेंसें किसने मदिर वणवाया वणवायगा सो पूजेगा और कोण विधिसें वणवाया उनोंका नाम सूत्र और अध्ययन लिखणा (प्रश्न दूसरा) आचाराग सूत्रमें कहा है ससारके जीवछकारणसें हिंसा करतें है प्रथम आजीविकावास्ते १ दुसरा प्रससाके वास्ते २ मानके वास्ते ३ पूजाके वास्ते ४ मुक्तिकेवास्ते ५ छठे रोगादिक मिटाणेवास्ते उनोंकों अहितका कारण होगा बोधबीजका नास होगा मिथ्यात्वका कारण होगा तो तुम मूर्तिपूजांसें धर्म केसें मानते हो २ (प्रश्न तीसरा) प्रश्न व्याकरण सूत्रमें पाच आश्रवद्वारमें मदिर प्रतिमा चरणपादुका आश्रवद्वारमें लिखा सवरद्वारमें मदिर प्रतिमाका नाम नहीं दया सजमकू सवर लिखा है तो तुम मदिर प्रतिमा धर्ममे केसें मानते हो ३ (प्रश्न चोथा) कामदेवजी श्रावगकू पोसामें देवताने उपसर्ग कीया तो भी डिगे नहीं तब भगवाननें तारीफ किया लेकिन किसी प्रतिमा पूजणे वालेकी तारीफ करी होय तो बतलावो ४ (प्रश्न ५ मा बहोत जीवोंकों तपस्या करते लबधिया उपजी अव धिज्ञान उपजा लेकिन् प्रतिमा पूजणेसें किसकू लब्धि और ज्ञान उपजा सो

जवाब लिखो भगवानकी द्वादशागी वाणी प्राकृतमे है लेकिन् सस्कृत और भाषामें नहीं है इसवास्ते हम तुमको सस्कृत तथा भाषा निर्युक्ती टीका वगेरा नहीं पूछते हैं सूत्रका अध्ययनका उद्देसाका नाम लिखणा ये ५ प्रश्नोंका जवाब भव्यजीवोंके उपगारार्थ आत्मकल्याणार्थ सूत्र-सिद्धातकी साक्षीसें न्याययुक्त जवाब लिखा है, सिद्धमूर्ति विवेक विलास जिन आज्ञा प्रदीपका भाग दूसरा है, जिन २ धर्ममूर्तियोंनें इस ग्रथकू छपाणे पहली मदत करी है उनोंकों धन्यवाद और धर्मलाभ स्वर्ग मुक्तिके लिये होगा, जो कोई पापडी निन्हवोंके खोटे उपदेससें तीर्थंकरके कहे सनातन धर्मसें डिगता होय, उन २ जीवोंकों स्थिरकर-णेकों एकेक पुस्तक दे दे कर मुक्तिसुख उपार्जन करो श्रीरस्तु श्रीजिनाय नम श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नम श्रीसरस्वत्यै नम

अथ भूमिका हितोपदेश

अहो जैन धर्म्मियो धर्म भाइयो तुम लोकोंने पूर्व पुण्यके उदयसें आर्यदेस मनुष्यजन्म उत्तमकुल माहाजनवश श्रावक धर्म पाया है श्रीमहावीरतीर्थंकरके उपदेशानुसार उनोंके चेले गणधरोनें जो द्वाद-शागी रची उसमें छउ भाषा विज्ञान सर्वतत्व भरा है बोप्रवाहसें चलती २ काल दोष बुद्धिकी हीनतासें ज्ञानका तिरोभाव होणे लगा तब बाराकालीके अतमें खद्दिलाचार्यजी तथा दुमरी बार देवर्द्धिगणी क्षम श्रमणनें शत्रुजयतीर्थके अधिष्ठायक गोमुख कवडयक्षकों आराधकर उसकी मदतसें राजादिक महर्द्धिक श्रावकोंसें ज्ञान द्रव्य एकठा करा-कर देवतानें १२ हज्जार स्वेताबर यती साधुओंकों सोरठ देसकी वलभी नगरी (वला) में एकठे किये उस जगे साधुओंकों जो जो

कठाग्र पाठ सिद्धांत याद था सो ताडपत्रोंपर लिखा जो थलपूरा न मिला छोडदिया एसे क्रोड ग्रथ लिखे जिनोंका नाम नदीसूत्र मेंदरज है फेर चौद पूर्वधर श्रुतकेवलीभद्रबाहू स्वामीके बनाये सूत्र निर्युक्तियें लिखी दस पूर्वधर उमास्वातीके बनाये पाचसे ग्रथ लिखे इसतरे द्वादसागी वाणीका रहा भया जो असभाग याद था सो लिखा तात्पर्य इय हेकी श्वेताबर मात्र जैन उस ग्रथोंकों मानना फर्ज है उसमे विवरेवार श्रावकके सम्यक्तकी करणीमें जिनराजकी मूर्तिको साक्षात् जिनराज तुल्यमानना लिखा है और द्रव्य भावसें पूजा करणी लिखी है बस पाचमा आरा कलियुगके प्रभावसें एक लिखणेके रुजगारीने द्वेषबुद्धिसें लिखाई वावत रत्नशेखरसूरि आचार्य तथा अहम्मदावादके सघसें तकरार कर अपणी प्रतिष्ठा जमाणेकू जिनप्रतिमा निषेधरूप मत कदाग्रह खडा किया विक्रमसवत् १५३१ में उसका उपदेस माननेवाले लोपक कहलाये लोपक शब्दका अर्थ एक पडित व्याकरणीनें एसा क्रिया (लोपयति जिनाज्ञा इति लोपक) इसके गच्छमें विक्रम सवत् १७०९ में अहम्मदावादमे वजरग लोपकका चेला लवजी गुरूकों भ्रष्ट समझ लोपकमतका वाना छोडकर नया भेप वनाया लोपकजती ओघेकी डडी २४ अगुलकीरखै, ढूढकलवजीनें वे प्रमाण दोहाथकी डडी ओघेमें डाली, निसीत सूत्रमें लिखा है जो साधू ओघेकी डडी वे प्रमाण रक्खे तो प्रायश्चित्त आवै, इस सूत्रकों जलाजली दी, लोपक मुखपर पट्टी नहीं बाधता लवजीनें मूपर वस्त्रकी पट्टी बाधी डोरा डालके, आचाराग सूत्र दुसरा श्रुतस्कध तीसरे उद्देसेमें कासलेते छींकलेते डकार लेते इत्यादिवेगोंकी वखत साधू हाथ मुख सामने देवै, या वस्त्रसामने देवै

इसवास्ते सिद्ध भयाके मूपर वस्त्र वाधणेकी आज्ञा नहीं, हाथमें वस्त्र रखकर वोलते समय यतना करै, इस सूत्रकी मर्यादा लोपी, लोपकजती गोचरीलाते वखत हाथकी कलाई पर झोली धरके वस्त्रसें ढकफरलाता लवजीनें मुसलमान फकीरों की तरे हाथमें लटकती झोली भिक्षा लाणे लगा, एक घरका आहार दुसरे घर दिखाणे लगा, ओघ निर्युक्ती सूत्र के विरुद्ध वरतान करणे लगा, लोपकजती दसहाथकी चद्दर ५ हाथकी पागरणी ५ हाथका चोल पट्टा रखता, लवजीने भीलोंकी तरे गाठे लगा २ कर पाचहाथके टुकडे या कम वेसी वाधणा सरूकरा, ओघनिर्युक्ती सूत्रकी आज्ञा तोडी, चवदे उपगरण सूत्र मुजब नहीं, इसतरे न तो तीर्थंकरगण धरोंका कहावाना (छाप) रखा, न अपणे लोंके गुरूका, इत्यादि अनेक आचरणा सूत्रविरुद्ध धारण कर मतचलाया कोइ वदन करे तो हाजी माई, अथवा दयापालो कहणा सरू करा, और व्यवहारसूत्रमें लिखा है साधू धर्म लाभ विगर गृहस्थके घरमें नहीं घुसें इस सूत्रमर्यादाकों लोप किया, क्यों के हाजीपठाणनें वरदानदिया था, मेरा नाम लेते रहणा और वुतपरस्ती नहीं करणा तेरा मत चलेगा इसवास्ते वदन करे ताकू हाजी भाई कहणे लगा जव मत वढगया तव कहणेलगा हाजी दया-पालो तेरापथी अभी फकत हाजीभाई इतनाही कहते हैं धर्मकों ढूढताहू सो मिला नहीं तव लोक ढूढक कहणे लगे, सूत्रोंमें एक पात्र पाणीलाणे, एक भिक्षालाणे, एक मात्रक पात्र सो दुसरासभोगी साधू आजावै तो तीसरे पात्रमें भिक्षा उस साधूकों लादेवै तव वो साधू आया भया अपणे पात्रमें लेके भोजन करै मगर तीसरे पात्रकू मुनि अपने भोगमें न लेवै अनामतरखै, लवजीनें भिक्षाके पात्रमेंही दस्तपे

सावका काम लेणा सरू करा, जहा साधू चोमासा करै उहा गृहस्थसें मट्टीका तीन पात्र अलग लेवै दस्तकू १ पेसायकू २ और खखारकफथू-कणेकू ३ सोलबजीनें सूत्र मर्याद लोपी, इसतरे अनेक विरुद्ध क्रिया सूत्रोंसें सरूकी निसीत सूत्रमें लिखा है आहार करते दस्तपेसावा-दिकरते जो लोकीकमें साधू धर्मकी हीलना करवावे तो बोधबीजरहित दडका भागी होय, इस लवजीके देखादेख विना गुरू धर्म दास छींपा वगेरे २२ अदम्योंनें नई २ कल्पना और मनोक्त क्रिया सरू की, बगचूलिया सूत्रमें लिखा है २२ गोठीला जिनप्रतिमाकी हीलना निंदा गर्हणा करणेवाले कल्पित उन्मार्ग लोकोंकों परूपेंगें सो बाइसगोठीलाशब्दकों विगाड लोक बाईसटोला कहणे लगे जेसें सुणा हो प्रतिष्ठाशब्दकों बहोत लोक पिष्ठाकहते हैं, माहावीर स्वामीके निज सतानी ८४ गच्छ जो है सो आपसमें वदना आहार पाणी एक मडलमें वैठ करते हैं लौंका गछके २ नागोरी दोय २ गुजराती तथा उत्तराधी जिनप्रतिमाका वदन पूजन भावसें करणे लगे इसवास्ते ८४ गच्छके साथ आहार वदनके सगसामिल वर्म भाईमाने जाते हैं लौंका पूर्वोक्त पाचोंमें नामी विद्वान पीछेसें जती होगये उनोंनें झूटाक-दाग्रह आत्मार्थीपणेसें बहुतोंनें छोडदिया, जैनहितेच्छु पत्रसपादक मताभिमानी ढूढकमतकों सनातन धर्मलिखता है कुछभी परभवका डर लिखते नहीं रखा सनातन जैनधर्म उसका नाम है जो की ऋषभ देव भगवतसे यती साधूका है तुम खुद अकवाल हो १५३१ में लोपक, स १७०९ बाईस गोठीले, १८१८ भीपमपथी, सनातन जब माना जावे ... ...ल परपरा तीर्थकरोंसें मिले लोपकके गुरूका

नाम क्या है और कोनसा धर्म वो मानता था इत्यादि सवूत तुमारे पास कुछ नहीं सो तुमारे लिखणेसें ढूंढक धर्मकों सनातन, को नबुद्धि- मान मान सकता है गौतमगणधरके विद्यमान वखतकी गौतम वगेरे इग्यारे गणधरोंकी मूर्ति गुणशिल पुर और राजगृही आदि पहाडों पर मोजूद है उसमूर्तिके मूपर कपडावधा नहीं है हाथमें मुखवस्त्रिका दीखती है मूर्तियाहजारों लाखों वर्षकी प्रत्यक्षमें मोजूद है हजारों वर्षके बनाये भये मंदिर मोजूद है तो बुद्धिवान आपही जाण सकता है के सनातन धर्म जिनमूर्ति माननेवालोंका है, जरा पक्ष- पात छोडके विचार करणा चाहिये जो जिनेश्वर देवके भक्त थे उनोंने जिनमंदिर बणवाया है या और किसीनें इस हिसाब एसा प्रश्न करणे- वाला जैनधर्मका अजाण मूर्ख ठहराया नहीं के २४ तीर्थंकरोंके घणे श्रावक भये सो किसनें मंदिर करवाया मुख बाधणेवालोंकी सबूती अन्यदर्शनी वेदधर्मी गेरूरंगित भेषवाला सोमल सन्यासी तो देता है उसने काष्ठकी पट्टीसें मुख बाधा था ये लेख भगवती तथा निरयावली सूत्रमे है स्यात् इसकी परंपरा २२ गोठीलोनें चलाइ होय जैनके किसी भी साधूने मुपर वस्त्र नहीं बांधा है लेकिन सोमल सन्यासीनें मूर्ति बाबत कोई भी दलील नहीं की है लेकिन ढूंढकोंनें दलीलकी इसवास्ते आत्मारामजी संवेगी महाव्रती साधू ढूंढक मत विनापरंपरा गुरू विनाका देख समुर्च्छमपंथ लिखा है जेसें लवजीनें बजरंग लोंपक अपणे गुरूको भ्रष्ट कह के ढूंढक मत खडा किया तेसें इसरु गनाथढूंढककाचेला भीषमनें रुघनाथकों भ्रष्टाचारी कुगुरु बाईसटोला जिनाज्ञाविराधक कह कर प्रथम तेरे वातमें मन कल्पना

लगाई सो तेरे वात भीषमपंथीयोंके समाधान रूप तीसरा भागमें लिखेंगें, तेरे आदमी एकठ होकर पथ चलाया तेरा पथी इनोंको लोक कहणे लगे, ढूढकका मूका पट्ट चौडा, तेरे पथियोंका लवा ये उडदी यदलाई, वाकी तो जेसे भूतनाथ, वेसाई प्रेतनाथ, इन भीषम मार मलको भृष्ट समझ चद्रभाण अलग भया रायचदकों भ्रष्ट समझ फतेचद अलग भया जीतमलकों भ्रष्ट समझ छोटाछोगमल वडा छोगमल वगेरे अलग भये एसें वहुतसें निकले किसीकी दालगल गई किसीकी नहीं लेकिन सर्वोनें अपणी २ खिचडी अलग २ ही पकाई इसीतेरे वाईसोंमें अजीब पथी अठकोटी पचखाणवाले नव कोटीवाले इन वाइसोंकी श्रद्धामें आपसमें वहोत फर्क है एक टोलेवाला दुसरे टोले वालेकों साधू नहीं मानता नहीं वदना व्यवहार करते इसतरेका फजीता देख किसकों साधू समझाजावे फेर भी न मालम कालातरमें ये अल्पज्ञ रागी द्वेषी क्या क्या मनकल्पनासें फजीता करते जायगें एक झूठ वोलणेवालेकी ओलाद अनेकानेक झूठ वोले इसमें ताज-वही क्या इसवास्ते सनातन धर्म जती साधुओंका जिनोंके लिखे सूत्र सिद्धात और जिनोंके प्रति वोधे राजन्यवसी श्री श्री माल श्री माळ ओसवाल पोरवाल वायडे इत्यादिकोंसें सनातन धर्म पचम आरेके अततक चलेगा अब वुद्धिवानोंनें सोचना चाहिये सो क्या जैनधर्मका सम्यक्तकु जडोंकी तरकारी है सो किसीनें किसीसेलिया और किसीनें किसीसें कोई तो माहाजन केता है मेनें समकित पूजक चोरी मलजीका लिया है और कोई कहता है मेनें पूजपकोडी मल-जीका सम्यक्त लिया है सच है दुकानेंभीतोकूजडोंकीतरे अलग

२ मडगई है और वो ऊहा भी करते हैं लोरेवाया भाया हमारो समकितलेलो अरे मोले भाइयो सम्यक्तचीज एक और ही रत्नपदार्थ है सो पूरे ज्ञान विगर वोरल प्राप्त होणा दुर्लभ है आप दलद्री दूसरें कों केसें धनवान कर सकताहै बाह्य क्रियाका आडवर देख गडर प्रवाही परमार्थशून्य वाडेके वछडे बन बैठते हैं सम्यक्त उसका नाम है जो की राजन्य वसीपणेमें तुमारे वडेरोंकों मदिरामास सिकार रात्री भोजनवाईस अभक्ष छोडाकर श्रीचोवीस तीर्थकरोंकी जिनमूर्त्ति द्वारा द्रव्य भावभक्ती नवतत्वका जाणपणा श्रावग धर्मका आचार और भगवत वीरके परपरागत शिष्य शुद्ध उपदेशक यती धर्मपालणे वाले गुरु एसा श्रीरत्नप्रभसूरि तथा दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने तुमारे वडेरोंकों जोश्रद्धा देकर जब क्षत्रीधर्मसें महाजन कुलस्थापन किया बस सम्यक्त रत्न वो था अब तो तुम लोक निन्हवोकी पट्टीमें चढकर उस रत्नकों मलीनकरतेहो अथवा गिराते हो फक़त कायक्ले सादिक तप करणेंसेंही साधू तीर्थ करनें नहीं फरमाया है सूयगडाग सूत्रमें लिखा है नगा रहै मासक्षमण तपकरे डास मच्छरा दिठढ उसका परी सहस है, एसा दर्शनी देवलोकादिकका सुख भोगके अनत ससारमें रुलै जहातक वीत रागकी आज्ञा नहीं आराधे उहातक कभी मुक्ति नहीं जावै तो विचारलो इस क्रियासें क्या होणा है जहातक सब सूत्रोंकों नहीं मानते अपने मन कल्पित मतसें मिलती बातें कोई तो आचार्योंके बनाये ग्रथोंकी कोई २ मान लेते और जो कोई बात ढूढक-मतकों धक्का लगाणेवाली होय तो अपणे माने ३२ सूत्रकी भी नहीं मानते अर्थोंका अनर्थ करणा व्याकरणकोशविरुद्ध उत्सूत्र बोलके मृषा वाद-

सें दुर्लभ बोधीपणा उपार्जन करते हो जिनप्रतिमासें द्वेषबुद्धिपणा करते हो सो साक्षात् जिनराजसें ही तुमारी बुद्धी द्वेषकी सिद्ध होती है जिनभक्ती गृहस्थकों नहीं करणे देणा इस अभिप्रायसें अनेक कुयुक्तियें लगाते हो देव मूर्तिको रायप्पसेणी जीवाभिगम सूत्रमें गणधर देवजीनें साक्षात् जिनराज फुरमाया है उस मूर्तिकों तुम कहते हो पत्थरकी मूर्ति शिलावटेकी बनाई हमकू क्या तारेगी एसे २ कठोर वचन कहकर जिनाज्ञा विराधते हो सच है अभव्वीकों जिनराज भी नहीं तार सकते हैं कोइ तो गृहस्थीं ढूढकों की क्रीया कष्टता देखकर कोई भागवानकी खुसामदीसें कोई आजीनिका वास्ते यानें सेठजी साधोंके जाते हैं में भी जाउगा तो प्रसन्न हो कर साधर्मी जाण गुमास्ता रखलेंगें यारकमकी मदत देकर व्यापार करा देंगें कोई स्त्रीके प्रेमसें कहणेसें कोई बहुत लोकोंकी जमात देखके कोई मदिरकी भक्तीमे धनका खरच देखकर केइएक अक्कलकी अजीर्णतासे द्रव्य पूजामें हिंसा मानकै इत्यादि अनेक कारणसें चिंतामणी स्वरूप सनातन धर्मकों छोड जिनमूर्तिकी द्रव्य भावभक्ती छोड ढूढकोंके उपासक हो जाते हैं तुमारे ढूढक साधू जब किसी सनातन धर्मीके घर वहिरणे जाते हैं तब वो गृहस्थ आहार देणे लगता है तब कहते हैं वखाण सुणणेका सोगन लो अथवा अमुक चीजकी सोगन लो तो वहरता हू इसतरे हठकरकै सोगन आगू भी किसी साधूनें दिलाया है या तुमाराही चलाया भया अपणा मत वढाणेकू ये जाल खडा कियाहै आहार देणेकू गृहस्थी जब वखाण सुणणेका सोगन ले लेता हैं आता जाता है तब सब बाकी गृहस्थ मिलकै उसें दबाते हैं पजजीरोसम

कितलेलो पूजजी फुरमाते हैं, अरे माया भगवान मुगत गया उणारी मूरति वनाय फूलफल चढावे त्यागीनें भोगी करे छकायांरी हिंसा करता धर्म किम नीपजे, तब सब गृहस्थ क है तहत्तसामी, इसतरे उस गृहस्थकू उलटा फदेमें डालके अपणा समकित झलावे, तीर्थंकरोंका सम्यक्त छुडावे, हम तुमें पूछतें है आहार लेते गृहस्थकू सोगन दिलाणा किस सूत्रमें लिखाहै, सो तुमारे साधू दिलाया करते है तव एक जिज्ञासूनें कहा हम तो दयामें धर्म मानते हैं और जैनधर्मका यैही सार है इसवास्ते ढूढक मतकों सच समझ दया धर्म कबूल किया जिनमूर्तिकी द्रव्य पूजामें हिंसा है इसवास्ते हमने छोडी वाकी धर्म तो हम लोकोंनें अगलाइ रखा है जवानमें मालम होय असक्षावर्ष भया इस अव सर्प्पणीमें ऋषभ देवतीर्थं करसें जैनधर्म चला तव ऋषभ प्रभूके उपदेससें भरत चक्रवर्त्तने अष्टापद पर मदिर करवाया सत्रुजयका सघनिकाला बाहूवळजी प्रमुख अनेक मुनि सगथे शत्रुजय तीर्थपर पहला उद्धार कराया रत्नमई मूर्तिस्थापनकीयेसर्व अधिकार अठारेसें वर्षका लिखा भया सत्रुजयमाहात्म तथा युगादिदेसना ग्रंथमें है भरतराजाके पाट असक्षाराजा सूर्य यश वगेरोंने जिनमंदिर जिनमूर्ति भरवाई और चोवीसही तीर्थंकरोंके शिष्य आचार्य उपाध्याय साधुओंनें उस मदिर मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा करी हजारो ग्रथोंमें ये वात लिखीभई है तो तुम दो सो चार सो वर्षके निकले महाभिमानी अणपढोंकी मूकी कही कल्पित वात मानें या त्यागी वेरागी महाव्रती श्रुतकेवली आचार्योंकी लिखी वात सच मानें लिखा तो दूर रहा लेकिन् चोदे पूर्व धारी रत्न प्रभसूरि जोकी पार्श्वनाथके छट्टे पाटधारीके-

श्री कुमारजीके पोतेकी हाथकी प्रतिष्ठित महावीर भगवानकी मूर्ति ओसिया नगरमे मोजूद है वैदगोत्र इस वखत वजता है इनोके वडेरे राजा उपलदेव पमार माहाजन भये वाद मदिर वणाया सका होयतो जाके देखलो दस पूर्व धारी श्रुतकेवलीकी प्रतिष्ठित महावीर भगवानकी मूर्ति १५ वर्ष भये जर्नल कर्निक होम साहवकों मिली शिला लेख समेत एसे हम प्रत्यक्ष हजारों तुमे आखोंसें दिखा सकते हैं उन चारत्रधारियोंकों हिंसा प्रतिष्ठा कराते सूझी नहीं सो श्राव-कोंकों उपदेस देकर मदिर करवाया और प्रतिष्ठा हाथसें करी इस अपेक्षा तुम बुद्धिसें विचारो असक्षावर्षसें जैनधर्मी सम्यक्ती श्रावग मदिर कराते प्रतिमा पूजते चले आये वोतो सव २४ तीर्थंकरोंका कहा भया धर्मकों तुमनें मिथ्यात्व और हिंसा ठहराई और ४०० से वर्ष भये सो सम्यक्त रूप जैनधर्म लोपक ढूढककों मिला अगले जिनमूर्तिकी द्रव्य भाव पूजा करके सव तुमारे वडेरे नरक गये लोपक ढूढकनें तुमारे वास्ते स्वर्गका विमान हाजर कर दिया और मुक्तिका दरवज्जा खोल दिया बुद्धिमान श्रावग होगा सोतो इतनेमें ही समझजाता है सो लिखा और एक वका सो मूर्त्ति पूजकोंके पास तो हजारों वर्षका लिखा भया सास्त्र हाजर है, तुमारी फकत मुख-जवानी दलील है, कहो हा कम इनसाफकी डिगरी किसकू देगा विचारलों सास्त्रमें इनसाफ है जवरन नहीं है इसवास्ते हे मित्र धर्म खाली दया २ में नहीं है धर्म तीर्थंकर केवलीकी आज्ञारूप दयामें हैं केवली जिन वातोंकों करणेका हुकम देते हैं वो दीखतमें चाहै हिंसाही दीखती होय वो स्वरूप हिंसा कहलाती है भावमें दया है जैसें

साधु पडक्रमणा करते ऊठेवेठे वायूकायहणीजै, मासकल्पसें विहार करणेकी आज्ञा रस्तेचलते पचेंद्रीतक जीवोंकी हिंसा, नदी उतरणेकी आज्ञा पचेंद्रीजीवों तककी हिंसा साधवीकू मकानके दरवजा बधकरणेकी आज्ञा इसतरे वहोत साधुओंके वास्ते हिंसादीखती है लेकिन केवलीका हुकम हे सो भाव दया है इसीतरेही साधु घरपर आवे तो ऊठनैठ नदना आहार देते जीव हिंसा होती है लेकिन गृहस्थकों लाभका कारण, इसतरे जो फल दानशील तप भावनाका सोही फल जिनमदिर कराणेका इस पुन्यसें १२ मेंदेवलोक श्रावक जावे ऐसी केवलीकी आज्ञा दीसतमें हिंसा इसतरे वहुत वातोंका हुकम साधु श्रावकोंके लिये शास्त्रोंमें लिखा है व्यवहार दया तो अन्य दर्शनी तथा निन्हवभी पालते हैं उसदयासें फकत पुन्यरधता है दया नाम ही पुण्यका हेतु है व्याकरणीसे दया शब्दका अर्थ कराकर सुणोगे तो मालम होगा तीर्थंकरकी आज्ञा है सो अहिंसा है गृहस्थ श्रावग वहोत निवेकी समझा होय तो सवाविश्वा दया पालसकता है थसत् गारमी गृहस्थकों जिनमूर्त्तिकी द्रव्य भावभक्ती ससारसें तारणेवाली तीर्थंकर फुरमाते हैं, ढूढक पथ कबूल कर तुमनें जिनमूर्तिकी द्रव्य पूजा छोडकर स्वरूप हिंसाके त्यागी वणवैठे, मगरकेवली भगवाननें श्रावककों सम्यक्तकी करणीमें द्रव्य भाव पूजा करणेकी आज्ञादी उस आज्ञाकों तोडणेसें भाव हिंसक अनत ससारी जरूर तुम लोक हो वेठै, इतना सुणतेही भडक उठाकी सूत्रोंमें किमी भी जगे श्रावगकू मंदिर कराणेका तथा द्रव्य युक्त पूजा करणेका अधिकार हेही नहीं तुम हमें भाव हिंसक केसें कहते हो, अगर होयतो क्या हमारे

साधुजी सूत्र नहीं वाचते हैं ३२ सूत्रमें किसी भी जगे मदिर प्रतिमाका अधिकार हेही नहीं घरवारधानमाल जिनोंनें छोडा सूत्रोंमें लिखा होता तो वे क्यों छिपाते, हे मित्र द्रव्य परिग्रह छोडा होय तो ताजन नहीं सो वात तुलछीदासजीनें कही है (दोहा) कचन तजवो सहज है, सहज त्रियाको नेह, परनिंदा परईरपा, तुलछी दुरलभ एह, और छोडासोधन्य, इसवास्ते हे मित्र इसमतकी जडही अभिमान इर्प्यासें पैदा भई है सो पीछे लिखादेखलै चलाणेवाला चलागया पिछले तो गडरप्रवाही है इतना व्याकरणादि पट्शास्त्रका ज्ञान कहा है सो सच झूठका इनसाफकर डालै और वहुतोंनें कर लिया इनसाफ, तब तो सत्यधर्म कवूल करही लिया, सइकडोंनें, इसवास्ते वाजे जन समझ लेते हैं तव भेप चाहे ढ्ढककाही रखते मगर इस वातकी तकरार नहीं करते एसा हमने कैइयक ढूढियें साधोंकों देखा है अपणे पक्षके श्रावकोंसे डरते जाहिरामें उपदेस नहीं करते हैं, क्योंके ढूढियोंके श्रावकोंका ये स्वभाव है जो ढूढिया साधु उत्कृष्टी क्रियावाला भी होय मगर मदिर तथा जिनप्रतिमाकी निंदा नहीं करै, नहीं उत्थापै तो, उसकी विशेप भक्ती मानता भी नहीं करै, अगर भोले भाव मदिरोंकी पुष्टिका शब्द किसी ढूढिये साधुके मूसें निकल जाय तो फेर तो वो गृहस्थ लोक ढीला पासत्था भ्रष्ट उसकों कहणासरू कर दे नहीं वदना नहीं आहार देवै, इसवास्ते वाजे ढूढिये जाणके भी अजाणपणे चलते हैं इसवास्ते हे मित्र तेरा झूठा पक्ष तो इतने परही सिद्ध होता है तू कहता है मदिर तथा जिनमूर्ति पूजा तो ३२ सूत्रोंमें नहीं लिखीहै, ३२ सूत्र सचे हैं वाकी सूत्र ग्रथ झूठे हैं ये वात तेनें और

किम ज्ञानसें जाणी है तब बोला हम मिलती बात मानते हैं सो मिलती बात ३२ सूत्रोंमें हैं बाकी सूत्र आपसमें मिलते नहीं, हे मित्र तेरे लोपकनें जोमत निकाला उससें मिलती बातही तूं मानता है तीर्थंकर गणधरके कहे सूत्रधर्मकू नहीं मानता तब बोला अजी हमारे मतकी मिलती नहीं ३२ सूत्रोंमें तों आपसमें विरोध नहीं आता बाकी सूत्रोंमें एकसे एककी बात मिलती नहीं इसवास्ते ३२ ही मानते हैं, इस तेरे माने भये ३२ सूत्रोंके जो आपसमें विरोध आता है सो हम आगे लिखेगें मगर तु बतला इस ३२ सूत्रोंकों किसने लिखे और बाकी सूत्र किसने ताडपत्रपर पहले पहल लिखे, तब बोला लिखातो उनही आचार्योंने है जिसका तुमने पेस्तर नाम लिखा है तो हे मित्र क्या ३२ लिखते उन आचार्योंकों केवल ज्ञानका स्वरूप दरसगया था बाकी लिखते विभग तब बोला लोंकेजीने ३२ ही कबूल किये इसवास्ते पीछले भी ३२ ही मानते है, हा मित्र ये बात सच है लोंकें जी की मोहर छापके ३२ है गणधर देवजीकी छाप तो क्रोड ग्रंथ लिखे उन सर्वोपर है देखलोंकेजीने ३२ माने उसका पूरा खुलासा खरतर गछाचार्य युग प्रधान अकबर बादसाहकों दयाधर्म धारण कराकरहिंदमें अमार उद्घोषणा फिराणें वालोंने जो विक्रम सवत् १६०५ की सालमें लोंपककी उत्पत्ती लिखी सो हम इहा लिखते हैं लका नामका पुरुष अहम्मदाबादमें जैनधर्म वालोंकी पुस्तक लिखणेसें लकानाम उसकू गुजराती भाषामें कहते थे सस्कृत और कुछ नहीं पढाथा तब रत्नशेखरसूरि तपागच्छाचार्यनें लकेकों भगवती लिखणे दी लिखतदोससे जंघाचारण विद्याचारण

मुनिः जो लब्धिसें उडकर साश्वत असाश्वतचैत्य (जिनमदिर) वांदे सो अधिकारके सात पन्ने नहीं लिखै पुस्तक आचार्यनें तपासी तव बोले ये प्रति अशुद्ध लिखेगई हमारे उपयोगकी नहीं लकेने श्रीसंघसें लिखाईके रुपे मागे संघ बोला तेरी अशुद्ध लिखतकी प्रति तू लेजा रुपे नहीं मिलेगा, लका बोला खोट नहीं है, मेनें इस अपेक्षासें येअधिकार छोडा है, कभी जघाचारण विद्याचारण साधु उडकर जावै नहीं, लब्धि फोरे नहीं, और आगू फेर उडकै जायगें नहीं, ये तो फकत गति बताई है कै इस लब्धिकी एसी गती है, कारण लवण समुद्रकी वेल सोलेसे जोजन उची जाती है तो मुनि अप्पकायाकी विराधना केसें करै इसवास्ते ये पाठ कोन जाणे किस अपेक्षा लिखा है या पीछेसें किसीने डाला है इसवास्ते मेनें नहीं लिखा, उस वखत बहोत सघ एकठा भया, तब आचार्यनें कहा हम जाणा सावत कर देते हैं, तब समवायाग सूत्रका पाठ दिखाया, जघाविद्याचारण सतरेसे जोजन कुछ अधिक सीधे आकाशमें उडकै फेर तिरछी गति करै, तबना जवाब भया, दुसरे दिन फेर ढूढढाढके प्रश्न कराके, ठाणागके चोथे ठाणेमें मानुपोत्तर पहाड पर चारही कूट कहा उहां सिद्धायतन है नहीं तो फेर भगवतीका पाठ केसें सिद्ध होय, जघा विद्याचरणमुनि मानुपोत्तर पर्वतके चैत्य वादै, तब आचार्यनें कहा ठाणागमें चोथे ठाणे चार २ वात गिणाते चारु दिसाके चार कूटोंका नाम गिणा दिया मगर और भी कूट मानुपोत्तर पहाडके बहोत है देख जबूद्वीप पन्नत्ती सूत्रमें मानुपोत्तर पर्वतके १२ कूटोंका नाम गिणाया है उन सब कूटोंपर देवतोंके भवन भवन में सिद्धायतन है तन ?

किम ज्ञानसें जाणी है तब बोला हम मिलती बात मानते हैं सो मिलती वात ३२ सूत्रोंमें हैं बाकी सूत्र आपसमें मिलते नहीं, हे मित्र तेरे लोपकनें जोमत निकाला उससें मिलती बातही तू मानता है तीर्थंकर गणधरके कहे सूत्रधर्मकू नहीं मानता तब बोला अजी हमारे मतकी मिलती नहीं ३२ सूत्रोंमें तों आपसमें विरोध नहीं आता बाकी सूत्रोंमें एकसें एककी बात मिलती नहीं इसवास्ते ३२ ही मानते हैं, इस तेरे माने भये ३२ सूत्रोंके जो आपसमें विरोध आता है सो हम आगे लिखेगें मगर तू बतला इस ३२ सूत्रोंकों किसने लिखे और बाकी सूत्र किसने ताडपत्रपर पहले पहल लिखे, तब बोला लिखानो उनही आचार्योंने है जिसका तुमने पेस्तर नाम लिखा है तो हे मित्र क्या ३२ लिखते उन आचार्योंकों केवल ज्ञानका स्वरूप दरसगया था बाकी लिखते विभग तब बोला लोंकेजीने ३२ ही कबूल किये इसवास्ते पीछले भी ३२ ही मानते हैं, हा मित्र ये बात सच है लोंके जी की मोहर छापके ३२ है गणधर देवजीकी छाप क्रोड ग्रथ लिखे उन सर्वोपर है देखलोंकेजीने ३२ माने ... पूरा खुलासा खरतर गच्छाचार्य युग प्रधान अकबर बादसाहकूं दयाधर्म धारण कराकरहिंदमें अमार उद्घोषणा फिराणें वालों जो विक्रम सवत् १६०५ की सालमें लोंपककी उत्पत्ती लिखें सो हम इहा लिखते हैं लका नामका पुरुष अहम्मदाबादमें जैनध वालोंकी पुस्तक लिखणेसें लकानाम उसकू गुजराती भाषामें कहते सस्कृत और कुछ नहीं पढाथा तब रत्नशेखरसूरि तपागच्छाचार्यनें एकेकों भगवती लिखणे दी लिखतदोससें जघाचार क्रियाचारण

भे धक्को मान्यो छै तेना फल तू इवे देखजैजोधारी आजीवकाने धक्को लगाइतो, यू कहता गालीगुसा करता अपणे घरगया दाय उपाय सोचता २५ वर्ष वीते कोई पजेमें नहीं आया उपदेस जिन मदिर निषेधरूप करता रहा आखिरकों नीमडी वढवाणके राजाका कामेती लकेका सगा था उसके पास जाके कहणे लगा में दयाधर्म सच्चधर्म परूपता था सो अहम्मदाबादवालोंनें मेरी आवरू खोई लखमसी घोला तुम निसक इस इलाकेमें उपदेस करो इस मदतसें जिन प्रतिमाकी पूजामें हिंसा कहता भूणेकू भेषदिया आप गृहस्थी रहा अपणे नामका गच्छ चलाया इतनेमें पार्श्वचद्रसूरिनें जो टीकाके अनुसार सूत्रोंपर टब्वा घणाया वो पुस्तक लकेके हाथलगा उसकू वाचकर जिस २ सूत्रोंमें पूजा जिनमदिरका जादा विस्तार लिखा देखा उसकू त्यागते गया ३२ सूत्रोंमें मदिरोंका सक्षेप सारास देख चैत्यशब्दका जिनमदिर अर्थकों पलटाकर झूठे मत कदा ग्रहरूप मनमाने वकवाद करणे लगा घस ३२ सूत्र माननेका ये कारण था वाकी सब सूत्र एक सदृश है ये जाल ब्बहकार इर्ष्यासे उसनें चलाया मगर जतीके भेषमें जादा फरक नहीं किया पच कल्पसूत्र महाकल्पसूत्र महानिशीतसूत्र दसों पयन्ना इनोंमें श्रावकोंके लिये विस्तारसें मदिर कराणा लिखा उन २ सूत्रोंकों लकेनें नही माना टीका निर्युक्ति भाष्यचूर्णीमें मदिर मूर्त्तिका पाठ देख वोभी छोडदिया तिसके बाद पार्श्वचद्रसूरिसें लकेके चर्चा भई लका हारगया इस चर्चाके पन्ने हमारे पास मोजूद है पार्श्वचद्रसूरिनें बहोत समझाया मगर भारी कर्माजीवनें वो द्वेष छोडाही नहीं बाद ढूढकमत खडा भया इसनें मनकल्पित भेष और मनकल्पित

ढग चलाया इन २२ ढूढकोंकों झूठा कहणेवाला भीपम पैदा भया इसने वो मिसाल सचा किया (मामेजीनें रातींधो म्हानें मजलों ईराम) सो इसने मदिर प्रतिमाका झगडा तो वोही रखा मगर अनु-कपा दानदया निषेधरूप अनेक कुयुक्तियें चलाई इसवास्ते हे मित्र अहकार इर्ष्यासें अल्पज्ञ पुरुषोंकी मनकल्पित कुतर्ककी प्रतीति करणा ससार बढाणेका हेतूं है ज्ञानयुक्त किया मुक्तिकी दाता है इसतरे भूमिका समाप्त कीजाती है तब पारख गेनरचदनें अपने प्रश्नोका जवाब मागा और भी अनेक प्रश्न २२ टोलोंकी तरफका उन सर्वोका समाधान सूत्रसिद्धात न्याययुक्तिसें लिखता हू द्वेष बुद्धिसें नहीं ज्ञानवत त्यागी वैरागियोंका तथा श्रीसघका सुनिजर वाछक उपाध्याय श्रीरामलालगणि ।



जिनाज्ञा प्रदीप प्रश्नोत्तर.



दोहा, वर्द्धमान मंगलकरो तुम वचनामृतपान जिन प्रतिमा जिन-सारखी कही सूत्रपरिमाण १ जिन आगम जिन मूर्तिमें जो नर राखे संक जिनमत नहीं वे मनमती झूठे धेरै कलंक २ जिन आज्ञामें धर्म है आज्ञा दयाप्रमाण और दया द्रव्यें कही भावदया जिन आण ३ क्रिया कष्टसें क्या हुवै स्वर्गादिक सुखभोग निन जिन आज्ञा भवभ्रमण चउगतिमाहे सयोग ४ ज्ञानयुक्त तपजप क्रिया देवै भवजलतीर सूत्रनिधीसें जो करै थोडा गुणगंभीर ५ पंचम आराभरतमें नहीं केवली कोय जिनप्रतिमा जिनसूत्रसें भवजल तारण होय ६ सब जिन आगम छोडकै मुखसें कहै बत्तीस वेभी सब मानें नहीं द्वेषभावसें रीस ७ जिन प्रतिमाके द्वेषसें रचैजाल सब फंद जिनपूजाहिंसा कहै बुद्धिहीण मतिमंद ८ जिन मूर्त्तीकी पूजना दया कहै जिनराज सो सब इहा दिखात हू सुणियो जैनसमाज ९

प्रश्न०—साधू तीन करण तीन योगसें जो काम करते हैं सो ही काम कहकर औरोंमें करवाते हैं और उसही काम करतेंको अछा समझते हैं इसवास्ते जो साधू जिनप्रतिमाकी द्रव्यपूजा आप करै नहीं तो उपदेश देकर गृहस्थसें केसें करवावै और द्रव्यपूजा करतेको भला केसें समझै (उत्तर) हे मित्र ये सवाल करणेसें मालम

सूत्रोंका आशय तेरे खयालमें स्नात् नहीं है इस किसमकी केईएक बाते तेरे मानेभये सूत्रोंमें मोजूद है सो आपतो करै नहीं लेकिन् कह-कर करवावै और करते कू अच्छा समझै सो हम दिखाते हैं महावीर प्रभूके विद्यमानमे पार्श्वप्रभूके साधू विचरते थै (प्र०) हा विचरते थे (उ०) महावीर प्रभूके साधू उनोंकों साधू सरदहते थे या नहीं (प्र०) सरदहते थे (उ०) तो तुम बतलावो उन पार्श्वप्रभूके साधुओंकों महावीर प्रभूके साधू आहार पाणी लाके देते थे या नहीं एक मडलीमें बैठ आहार पाणी करते थे या नहीं बेमार होणेपर टहल चदगी करते थे या नहीं इत्यादिक (प्र०) आपसमें चार महाव्रत तथा पचरगे वस्त्र इत्यादिक सामाचारी भेद होणेसें आहार लाके देणा वदना करणा इत्यादिक काम माहावीर प्रभूके साधू उनोंके सग नहीं करते थे (उ०) तो तुम बतलावो उन पार्श्वनाथके साधुओंको गृहस्थी दान देवै तथा वदना करै तो अच्छा समझै या नहीं गृहस्थीकों उपदेश देकर दान दिलावै या नहीं वदना करवावै या नहीं तथा पार्श्वनाथके साधू आपसमें एक साधूकू दुसरा साधू आहार पाणी लाके देवै तथा वदना करै तथा चदगी करै उसकू अच्छा समझे या नहीं पार्श्वनाथके साधुओंकों कहकर टहल चदगी करवावै या नहीं (प्र०) ये सब काम उपदेश देकर गृहस्थसें तथा साधुओंसें यथा योग्य करवावै और करतोंकों अच्छा समझै (उ०) तो हे मित्र तूने प्रश्न करा था जो काम साधू आप करै सोही करवावै वोही अच्छा समझै सो सवाल तेरा झूठा पडा जेसें ये काम साधू आप करते नहीं और करवाते हैं अनुमोदते हैं तेसेंइ साधू जिनराजकी द्रव्यपूजाकों अच्छी समझते हैं

लेकिन् जलचंदन पुष्पधूपादिक सामग्रीके अभावसें तेसेंइ द्रव्यपूजा करणा साधूका विनहार नहीं इसवास्ते आप द्रव्यपूजा करते नहीं कराते हैं और अनुमोदना करते हैं (फेर जबाब दूसरा) साधवीकू साधू पच महाव्रतधारणी जाणता है तथापि वदना करता नहीं लेकिन् गृहस्थकों उपदेश देकर वदना करवातें हैं और वदन करतेकों अच्छा समझते हैं साधू साधवीको वेयावच्च आप करते नहीं लेकिन् दूसरी साधवीकू उपदेश दे कर वेयावच्च करवाते हैं करतेकी अनुमोदना करते हैं साधवीकू आहार साधू लाकैदै नहीं मगर दातारकू कहकर दिलावै और अछा समझै २ (जवाब तीसरा) साधू अपणे दीक्षित शिक्षकों महाव्रती समझै मगर आप वदना नहीं करै और गृहस्थकों उपदेश दे वदना करवावै और करतेकू अच्छा समझै इम न्यायदृष्टात साधू आप द्रव्यपूजा करै नहीं करवावै अनुमोदै (प्र० दूसरा) श्रावकके चारे व्रतोंमेंसें जिनमूर्तिकी द्रव्यपूजा कोनसे व्रतमें है (उत्तर) जिस विगर सर्व व्रत निरफल एसा जो सम्यक्त उस सम्यक्तकी करणीमें श्रावककू गृहस्थावासमें वसतेकू जिनमूर्तिकी द्रव्यभाव पूजा है श्रीअरिहतदेव चारों निक्षेपे वदनीक पूजनीक जैनधर्मके शुद्ध उपदेशक साधू चारों निक्षेपे वदनीक यथायोग्य पूजनीक धर्म केवलीका कहा भया चारों निक्षेपे यथा योग्य वदनीक पूजनीक सूत्रसिद्धात जो की श्रीनदीसूत्रमें लिखा है (दव्वसुयज पत्तयपोत्थियलिहिय) यानें द्रव्य श्रुत वो है जो की पन्ने और पुस्तकोंमें लिखाभया, भावश्रुत उसका परमार्थ, इसतेरे श्रुतज्ञानके चार निक्षेपे होते हैं सो वदना पूजा करणे योग्य सम्यक्तीके [illegible] इसवास्ते सम्यक्त पहली व्रत पीछे (प्रश्न तीसरा)

सिद्ध भगवान अरूपी है उनोंकी मूर्त्ति कैसें षणे इसवास्ते निराकारकी मूर्त्ति षणाणेवाले मूर्ख ठहरते हैं (उ०) हे मित्र जैनधर्मके सूत्रोंमें सिद्ध भगवानकी मूर्त्ति तीनलोकमे साश्वती विद्यमान है चारों फिरकै श्वेताम्बर १ दिगाम्बर २ बाईस टोले ३ भीषमपंथी ४ इसनातकों मानते हैं वैताढय चुलहिमवत मेरू मानुषोत्तर नदीश्वर रुचकद्वीप इत्यादि पहाडोपर जम्बूवृक्षादिपर सिद्धायतन (जिनमंदिर) जिनराजके सिद्धभगवानके मौजूद है अंब बतलावो हे मित्र सिद्धोंके तो शरीर हैं नही तथा रूपरंग है नहीं तो फेर असक्षा सिद्धभगवानकी मूर्तिया कैसें विराजमान है अब कहो मूर्ख कोण ठहरा उन साश्वती सिद्धोंकी मूर्त्तिकीही नकल भरतक्षेत्रोंके वासिंदे सिद्धपरमात्माके भक्त श्रावकलोक असाश्वती जिनप्रतिमा बनाते चले आये शाश्वती मूर्त्तिया है ये बात कबूल कियेबाद फेर मूर्त्तिबाबत तकरार करणा क्या अकल वरोंका काम है गुड खाणा और गुलगुलेका परेज करणा (जबाब दुसरा) तुमकों विचार करणा चाहिये चोवीस तीर्थंकर देहधारी होते है तो फेर देहधारीकी मुर्त्ति बणाणेवाले मुर्ख ठहरे या नहीं माननेवाले इस अवसर्प्पणी कालके तीसरे अरेके अंत श्रीऋषभ तीर्थंकरकेवलीकों प्रथम चक्रवर्त्ति श्रीभरतराजानें भगवानसे पूछा हे प्रभू इस अवसर्प्पणीमें कितने तीर्थंकर कितने उचे केसा रंग कोण २ लंछन धारी होंयगें तब ऋषभ प्रभूनें जेसा बतलाया उस मुजब अष्टापद (केलास) पहाडपर सिंह निषद्या प्रासाद (मंदिर) करवाके प्रभूके कहै मुजब कदलछन और वर्ण जैसी चोवीस तीर्थंकरोंकी मूर्त्ति स्थापन करी आवश्यक मूलसूत्रमें पाठ है (चत्तारि अठदस दोय वंदिया) एकेक दिसीमें

चार आठ दोय और दस ऐसे चारो दिसामे विराजमान किये इस मूलपाठकी निर्युक्ती करते श्रुतकेवलीनें सर्व बयान भरतराजाके मंदिर कराणेका दिया है चोरासी गच्छ तीर्थ करोंके चेले पडिकमणेमें देव-वदन तीसरा आवश्यक करते दोनों वखत कहते हैं तुमारे मतामलबी योंनें अपणी कल्पनाको धका लगते देख ये पाठ छोडदिया मनमाना पडिक्रमणा करणेलगे (प्र०) एक सका तुमारे लिखणेमें पैदा होती है के ऋषभतीर्थ करके विद्यमानमें तेनीस तीर्थ करके जीव ससारकी ८४ लाख योनीमें भटकते थे तो फिर उनोकी मूर्ति बणाकर वंदना पूजना करणेसें धर्म केसें सभवे वे २३ ही द्रव्य जिन है और हम तो भाव जिनके वदन स्तवनादिककों धर्म मानते हैं इसवास्ते हमारे पूर्जोनें ये बात मजूर न्यायसें नहीं कीहै (उ०) हे मित्र यही तो तुमारेमें जिनाज्ञाका विराधक पणा है, निक्षेपे चारोंही पूजनीक वदनीक है अनुयोंगद्वार सूत्रका पाठ हम आगे लिखेगें इससें सिद्ध होता है द्रव्यादिक तीनों निक्षेपें भावनिक्षेपे मुजब तीर्थकरोंके पूजनीक है द्रव्यविना नामस्थापना भाव एक भी निक्षेपा सिद्ध नहीं जिन २ जीवोंकों भगवतनें मुक्ति गामी बतला दिये सो सब पूजने योग्य है तेसठसलाका पुरुष आदीक, इसपर प्रत्यक्ष दृष्टांत है जेसें किसी मोतब्बर साहूकारकी लिखीभई मुदती हुडी सरकारी मोहर छापीकाग-दपर है और मुदत दिन ६१ की है तो परलायो मुदत पूरी होणेसें वोरकम मानीजायगी या बीचमें भी कोइ काम रुपयका निकाल सकती है तुमारे हिसाब तो उस हुडीकों मुदत पहोचणेसें पहली रदी कागद मानना चाहिये, इस न्यायमोहर छाप मूर्तीकी, ऋषभदेवकी

लिखी हुई, और उन जीवोंकी मुदत एसी हुंडीकों रकम नहीं माने नहीं सिकारै, एसा मूर्ख कोण होगा, खैर रहणे दो (जबाब दूसरा) जिस वखत ऋषभदेव स्वामी विचरते थे उनोंके साधू श्रावक आव श्यक कितना करते थे (प्र०) छव (उ०) उन छवोंका नाम कहो (प्र०) सामायक १ चउवीसत्थो २ वदना ३ पडिक्कमण ४ काउ-सग्गो ५ पचखाण ६ (उ०) चउवीसत्थो किसकू कहते हैं (प्र०) चउवीस भगवानकी स्तुति करणी लोगस्स उज्जोयगरे इत्यादिक (उ०) हे मित्र हियेका पडदा खुलाया नहीं तू तो कहता है २३ तीर्थंकर उस वखत द्रव्य निक्षेपेमें है हमारे गुरूनें न्यायसें छोडा है, ये तीसरा आवश्यक करते ऋषभदेवकी वखतमें २३ तीर्थंकरोंकी स्तुति मावी जिनोंकी करणी तेरे इनसाफसें सिद्ध होचूकी अगर दिलकी कसमसी फेर होय तो घोल इसवास्ते भरतराजाने भावी जिनेश्वरोंकी द्रव्य भावभक्ती करणेकू होणेवाले तीर्थंकरोंके बिंबवर्त्तमान तीर्थंकर ज्यू पू-जनेयोग्य भरवाये इसतरे सूत्रकी राह मुजब हमनें द्रव्यादिक चारों निक्षेपे वदन पूजनयोग्य बतलाये मगर तुम और तुमारे गुरू द्रव्य निक्षेपा तीर्थंकरका नहीं मानते तो बतलावो ऋषभदेवके साधू श्रावक चोवीसत्था करते थे या नहीं या पाचही आवश्यक करते थे आर ये लोगस्स किसने बणाया जरा विचारके जबाब देणा लारली २४ का मानोगे तो पचवीसत्था होजायगा २४ लारले २५ में ऋषभदेव इसवास्ते हे मित्र झूठकी दोड कहातक झूठा अदमी अपणी बात सच करणे तरला लेता है तुमारे गुरु न्यायवत होते तो निक्षेपा चारों एक सदस समझते मगर न्यायका जाणपणा कहां है (प्र०) हम-

लोक सूत्र मानते हैं लेकिन् निर्युक्ति नहीं मानते (उ०) हे मित्र सूत्रोंमें निर्युक्ती मांनना लिखा है जो तू निर्युक्ती टीका वगेरे पचागी नहीं मानेगा तब तो ३२ सूत्रभी तेरा मानना सिद्ध नहीं होता देख ये गाथा अनुयोगद्वार सूत्र नदीसूत्र भगवती सूत्रकी है इसमें निर्युक्ती वगेरे पचागी माननी लिखी है (गाथा) सुत्तथो खलुपढमो बीओ नियुत्ती भीसिओ भणिओ तइयो निरवसेसो ए सविही होइ अणुयोगो १ (अर्थ) सु० खलु निश्चैसेती अर्थ यानें टीकाके साथ सूत्रका अनुयोग यानें व्याख्या न होता है ये प्रथम अनुयोग १ बी० यानें दूसरा अनुयोग निर्युक्तीकी मी० यानें मिलावटसें व्याख्यान होता है त० तीसरा अनुयोग नि० वाकी भाष्यचूर्णी आदिक समस्त उनोंकै सग होता ३ अर्थात् विना पचागी सूत्रका अनुयोग नहीं होता, अभी ६१ की सालमें, मारवाड जैतारण गांममें, वाईसटोला पूज श्रीलालजीका जुहारमलजी, भीषमपथी पूजडालचदजीका फोजमलजी, आपसमें चरचा करणे लगे थे, तब दोनोंने ४ मध्यस्थोंकों चरचाका सात नियम मजूर करकै स्थापन किया था, जबाब सवालमे ३२ सूत्रोंकी पचागी दोनोंकों कबूल होगी इत्यादिक, सो हे मित्र तुमारे मतका ये क्या ढंग है सो एक टोलेवाला एक जगे कबूल करै और दुसरी जगे क्या पलटजावै इस चरचाकी सम्मती २२ ही टोलोंकी तथा समस्त भीषमपथियोंकी थी जैतारणके पचोंनें जो जैनविष्णु तथा पडित मध्यस्थ बणेथे उनोंनें भेजा चरचाका सर्व अहवालका निज पत्र श्रीबीकानेरमें सेठ सावण सूखा श्रीपूनमचदजी पास मौजूद है (जबाब दूसरा) अमोलखऋष २२ टोला जैनतत्वनामक ग्रथ

अहम्मदाबादमें छपायके प्रसिद्ध करा है और आप छती शक्ती ४ वर्षे भये हेदराबाद सहरमे गृहस्थोंके भाडे लिये मकानमें ठहरे भये हैं उनोंनें लिखा है (गाथा) सुत्तगण हररइय तहेवपत्तेयबुद्धरइयच चउदस पूवी रइय अभिन्नदसपुव्विणारइय १ (अर्थ) सूत्रगण धरोका रचा कहलाता है तेसें प्रत्येक बुद्धोंका रचा भया तेसें चौदे पूर्वधरोका रचाभया तेसे दशपूर्व धारियोका रचा भया ये सब सूत्र कहलाते हैं तो हे मित्र जैसे लिखा है वैसे मजूर क्यों नहीं करते चौदे पूर्वधारी भद्रबाहूस्वामीकी रचीभई निर्युक्ती सूत्र है तो फेर उसमें लिखी बात कबूल क्यों नहीं करते इसीतरे ही ऊमास्वाती दस पूर्वधारीके रचे भये ५०० से ग्रथ है उसकों दिगाबर श्वेताम्बर दोनों मानते हैं उसमें हम प्रत्यक्ष लिखा दिखादेते हैं के जिनेश्वरका मदिर बणाणा मूर्तिकों श्रावगने अष्ट द्रव्यसे पूजणा जाई जूई मोगरा मालतीके ताजे फ़ूल चढाणा श्रावगोनें इस द्रव्य पूजासे श्रावक भावयुक्त एकाभवावतारी होता है तो तुम मूसे तो कहते जाते हो चौदे पूर्व्वधारीका वचन दश पूर्व्वधारीका वचन केवली भगवानतुल्य है इसवास्ते किसी कवीने ये मिसला कहा है (दोहा) कहते सो करते नहीं, मूकै बडे लबाड, काला मूडा होयगा, साईकै दरबार १ कहो इस अपेक्षा दुसराव्रत रहाया गया कभी तो कहते हो निर्युक्ती टीका पचागी हम मानते हैं और असलमें देखे तो पचागी तो दूर रही मगर मत कदाग्रहसें मूल सूत्रका पाठ माननेमें भी खलल पोहचाते हो सूत्रके तुल्य निर्युक्ती तुमारे ही कहणेसें सिद्ध है तो फेर एसा क्यों कहते हो निर्युक्ती टीका हम नहीं पूछते और २४ तीर्थंकरोंके चक्र-

वर्त्त बलदेव वासुदेवादिक घणे श्रावक भये किसनें मंदिर करवाया
एसा प्रश्न करते लज्या नहीं आती है तुमारे प्रश्नमें लिखा है भाष्य
भी हम नहीं पूछते तो तुम टव्वार्थ क्यों वाचतेहो टव्वार्थ भाषा है
या और कुछ तुमारे साधोंके तो पार्श्वचद्रसूरजीकी करी भई सूत्रोंकी
भाषाही गृहस्थोंको उलटा फिराणेके लिये आधार है और कहते सो
वखत कहते भाषा भी नहीं पूछते तुमको चाहिये सो टव्वार्थ कथा
सिझाया चरित्रानुवाद सब छोडके मूल सूत्र ही ३२ का पाठ मांनना
तुम लोकोंके लिये ठीक है लेकिन् इतना ज्ञान कहा है सो मूल पाठपर
सूत्रोंका सब अर्थकरसको इस टव्वार्थके होणेसें ही तुमारे मतकी
नींमलगी नही तो तुमारे साध किसीतरे भी सूत्र २ का नाम भी नही
लेसकते फेर तुमनें कहा एक लाख गुण सठहजार श्रावक महावीर
स्वामीके भये उनमेंसें किस २ नें मंदिर करवाया जवाबमें मालम
होय उन सब श्रावकोंका जन्मसें लेकर मरण पर्यंत सब चरित्र किस
सूत्रमें हैं जिस ग्रथमें या सूत्रमें जन्मचरित्र उन लोकोंका है उसहीमें
जिस किसी श्रावकनें मंदिर करवाया उसका दाखला है वग्गुर श्रावक
पार्श्वनाथके सासनका उसनें मल्लिनाथ भगवानके मंदिरका जीर्णोद्धार
कराकर मूर्त्तिकी त्रिकाल द्रव्यभाव पूजा करता था जब महावीर प्रभू
छद्मस्थपणे विचरते थे ये अधिकार आवश्यक निर्युक्तिमें है उपाशक
दशा सूत्रके दस श्रावकोंका अधिकारकी नूंद समवायग सूत्र तथा
नंदीसूत्रमें लिखी है उहा दस श्रावकोंका दस चैत्य लिखा है फेर
महानिशीत सूत्रके चोथे अध्ययनमें श्रावकोंको लिखा है दान
तप भावना आराधनासे जो फलकी प्राप्ति होय वैसा अधिक

मदिरोंसें पृथ्वीकों सर्व जगे कराकर सुशोभित करणेवाला श्रावक थारमें देवलोक जाणेका पुण्य उपार्जन करकै जावै तुमारा प्रश्न है मदिर कराणेकी विधि किस सूत्रमें लिखी है सो हे मित्र जिनमदिर कराणेकी विधि विद्या वियाप्रवाद दशमें पूर्व्वमें गणधर देवजी रचते भये उसके आधारपर वास्तुक शास्त्र हरिभद्राचार्यनें रचा है कारण पूर्व्व तो विछेद होगये परपरा आगम मौजूदसैं सोमपुरे शिलावटे शिल्पशास्त्रमें जिन मदिर चार मडपका शिखरबद्ध बणाते हैं ब्राह्मणोंके रचे शास्त्र शिल्पमें लिखा है ब्रह्माका मदिर चार मडपका शिखरबद्ध बणाणा सो सब विधि लिखी है धनजय कोसमें समवसरणमें बैठ देशना चार मुखसें देणेवाले ऋषभदेव तीर्थंकरका नाम ब्रह्मा लिखा है जैनधर्ममें चवदेसें वर्षका बणाभया जिनमदिर कराणेकी विधिका शास्त्र मौजूद है चाहे तो आखोंके गोचर करलो बिना ग्रथ अगलोंके आधार विगर दुनियाकी कोई कारीगरी नहीं फेर तो गुरु परपरा प्रवाहसें एकसें सीखके दुसरा बणाता है जादा ग्रथ मदिर मकानादि बणाणेका शास्त्र राजा चद्रगुप्तके जमानेमें भया जो सिकदर इरानका बादसा उसनें अपणे अहलकारोंकों भेजके हिंदमेंसें सब कारीगरीके शास्त्र हासिल किया वो ईरानसें रोममें रोमसें यूरोपमें चलेगये यूरोपनें सीखके इजनेयरी पीछी फेर हिंदमें चलाई अगरेजी इतिहास पढणे वालोंसें पूछके निश्चे करलो इस बातको २२ सें वर्ष होगया (जबाब दूसरा) श्री आवश्यक सूत्रकी बडी टीकामें श्रीहरिभद्राचार्य तेसें श्री आदिनाथ दिगाबर पुराणमें श्रीसमत भद्राचार्य एसा लिखते हैं श्रीऋषभदेव गृहस्थावासमें रहे भये तीन ज्ञाननिर्मल बलसें दुनियाकूं

बहोत्तर कला सिखाई जिसमें धर्म १ अर्थ २ और काम तीनों आगयी बहोत्तर कलाके ग्रथ भगवान खुदने रचे सो दुनियां करते चली आई केवल ज्ञान पायके भी सर्व जगतका स्वरूप कला विज्ञान प्रकाशन अर्थसें करा तब गणधरोंने द्वादशांगी रची उसमें चवदे पूर्वमें ये विद्या सर्व आगई उसके आधारपर आचार्योने सूत्र ग्रथ सक्षेपसें लिखे अब कहो मदिर कराणेकी विधिका जादा क्या प्रमाण तुमे चहियै मदिर चिणना तो हमकू आता नहीं और आपकू सीखणेकी विधि चहिये तो सोमपुरे शिलावटोंकी कदमपोसी करो सो सब विधिसी खादेंगे भरत चक्रवर्त्तिने केलाश पहाडपर जिनमदिर करवाया खुद भगवान ऋषभ मौजूद थे मना क्यों नहीं करदिया के धर्मके वास्ते मदिर कराणेसें हिंसा होती है केलास पहाडपर मदिर है इस बातकी सबूती ढूढकोंका गुरू केसवराय लोंकाजती ढालसागर गायनरूप रामायण बणाई उसकू सब ढूढिये बाचके गृहस्थोंको सुणाते हैं उसमें लिखा है रावण तथा मदोदरी अष्टापद तीर्थकी यात्रा करणे आये पुष्पकविमानमें बैठके मंदोदरी जिनमदिरमे नाटक करणे लगी रावण वीण बजाणे लगा अकस्मात् वीणाकी तात १ तूटी तब रावणनें विचारा नाट कस्यात् भंग न होजावे क्योंके मदोदरीके भाव अतीव जिनभक्तीमे लीन है सो मतना भग होजावे तब लघुलाघवी विद्यासें हाथकी रगनि कालके वीणाकू सजकरदी ताल तूटनें नहीं पाई तब रावण अरिहत पदकी भक्ति आराधना करतेही तीर्थंकर गोत्र कर्मबंधा एसा लिखा है ये ढालसागर त्रेसठशलाका पुरुष चरित्र हेमाचार्यनें बणाया उसके आधार बणा है ये केसवरायजी लोंकापरमतका डर रखणेवाला था

यद्यपि उसका गच्छ लोंका था मगर एक अक्षरका भी एर फेर परमार्थमें नहीं घटाया और तुमलोक बाचते हो तब इस परमार्थकू क्यों छिपाते हो तुम कहोगे हम ये बात नहीं मानते तो बतलावो ये मदिरके मक्तीकी बात इसमें झूठी है बाकी रामायण सब सच्ची है तुमकों कोण कहगया या तुमकों कोई अतिशय ज्ञान है सो ये बात झूठी औरबाकी सच्ची तुमें दरसगई देखो प्रत्यक्ष तुमारा श्रीजिनप्रतिमाके सग द्वेषबुद्धि यातो सभी रामायण नहीं मानते तो कोई हरज नहीं था खैर तुमतो फकत इस बातकू नहीं बाचते या कुछ अडग बडग ग्रहस्थकों समझाय आगे चलाते हो मगर कद्दर बेई मान भीषमके- पड पोते चेले जीतमलनें तो ये सब अधिकारही डालसागर रामायण- मेंसे निकाल दिया ये ग्रथ कर्त्ताकी प्रत्यक्ष चोरी करकै तीसराव्रत खोदिया विनामालककी इजाजतविगर साधू किसीके मकानमें जाके बैठे नहीं ये बात सब जैनसाधू पालते हैं तो केसवरायजी लोंकेकी बिना इज्ञाजत मदिर प्रतिमाका अधिकार निकाल दुसरा परमार्थ डाल देणेसें चोरीभई या नहीं जैसें कोई साहूकार हिसाबका पना वहीमेंसें निकालके किसी सकसका हिसाब ऐर फेर करै और साबित होजाय तो कहो बुद्धिवानों सरकार उसें चोरीकी सजा देवे या नहीं यानें बराबर देवै तो सबूती जीतमलके सवालोंसेंही होचूकी है अतकी ढालमें लिखा है सावद्य २ काढ दियो छै निरवद्य दियो छै घालजी देखो बुद्धिमानो ये काम करणेवालेकों वे कूपलोक, साधू मानते हैं और एसे कै वचनोंपर प्रतीति करते हैं इस जीतमलनें बहोत सूत्रोंके टब्बार्थपर अपणे कल्पितमतके अर्थोंको घमेड दिया है पार्श्वचदसूरिकी

चोरी करी है इति । इसी तरेही रामायणमें लिखा है रावण शातिनाथ प्रभूके मदिरमें लकामे बहुरूपणी विद्या साधी है सो भी तुमलोक छिपाते हो अब तुम जरा निरापेक्षी होकर विचारते नहीं सूत्रप्रकरण चरित्रोंमें जगे २ मंदिरोंके दाखले हैं तो फिर क्या समझके पूछते हो किसी श्रावकनें मदिर कराया होय तो बतलाओ लाखों क्रोडों बलके ऋषभदेवके बखतकी असख्या वर्षकी मूर्तिया जिनराजकी विद्यमान है भरतराजाके अगूठीके माणककी बणी मूर्तिमाणक स्वामीनामकी देवाधिष्ठित पणेसें तेलग देश कुलपाक गाम दक्षण हेदराबाद पास मोजूद है केसरियानाथ उदयपुर अतरीक जी दक्षणशिवपुर सखेश्वरापार्श्वनाथ गुजरात अब तुम बतलावो ये मदिरमूर्त्ति या श्रावकोंनें नहीं बणाई तो और किसने बणवाये होंगें हाये तुम कहोके हमारा मत उस बखत नहीं था नहीं तो मदिर नहीं बणने पाते द्वेषबुद्धिसें तुमारा विवेक नष्ट होगया है सो प्रत्यक्ष विद्यमान पदार्थ हाजर रहते फेर पूछते हो किसी श्रावकने मदिर बनाया होय तो बताओ (प्र०) अच्छा टीका निर्युक्ती वगेरे पचागीसें तथा चरित्र प्रकीर्णोंसें मदिरमूर्तिया तो आपने सिद्धकरी मगर हमारे मतमें मानेभये ३२ सूत्रोंमें भीं कहां ईमूर्ति मदिरका दाखला है (उ०) जो कुछ मेनें देखा है सो थोडासा बताता हू छठा अग ज्ञातासूत्रमें द्रोपदीके अधिकारमें एसा लिखा है (तएणसे दो वईराय वरकन्ना जेणे वजिण हरे तेणेवउवा गच्छई जिनपडिमाण आलो ए पणाम करेई लोमहस्थेण परागुसई) इत्यादिक सूर्याभ देवताकी तरे सतरे भेदे द्रव्यपूजा और भावपूजामें नमोत्थुण पढा है ये जिनमदिर किसी श्रावकनें कराया भया था तब ही तो द्रोपदी

पूजा करणेकू चलाकर गई धन्य है द्रोपदीकी सम्यक्तकी निश्चलता सो एसे विवाहकी धूमधाममें भी जिनभक्ती नहीं भूली और भगवानसें यही अरज करी बुद्धाण बोहियाण याने आप बोध बीज केवल ज्ञान पाया और मुझें दो मुत्ताण मोयगाण यानें आप कर्मोंसें छूटे मुझें छुडावो इत्यादिक स्तवना सम्यक्त निगर केसें करसक्ती थी इत्यादिक, उवाई सूत्रमें चंपानगरीके वर्णनमें महोल्ले २ में जिनमंदिर लिखा है श्रावकोंनें नहीं कराया था तो किसनें कराया था २ तेसें ही विवहार सूत्रमें साधूकू जिनप्रतिमाके सामने कारण योग आलोयण लेणा लिखा है श्रावग जिनमूर्त्तिमंदिर नहीं करावे तो आलोयणकी वखत जिनप्रतिमा कहांसें आवे ३ भगवती सूत्रमें चमरेंद्रके अधिकारमें तीन सरणा लिखा अरिहंतका सरण १ अरिहंतके चैत्य (याने मूर्त्ति) का शरण २ और भावित आत्मा साधूका सरण ३ इस मुजब थोडेसें तुमारे माने भये सूत्रके मूलपाठसे मंदिर मूर्त्तियोंके दाखले सिद्धकर दिखाये हैं बुद्धिमान तो बानगी मात्र देखणेसे निसल्पपणे सब ढिगारकी परिक्षा कर सकता है जो इन २ सूत्रोंमें है तो बाकी सब ग्रथोंमें मंदिर मूर्त्तिके दाखले सब सच्चे हैं श्रावकोंके अधिकारमें जगे २ (न्हाया कयबलिकम्मा) एसा पाठ है यानें स्नानकर देवपूजा करै श्रावग यक्षनागादिक अन्यदेव पूजै नहीं भगवतीमें तुंगियानगरीके श्रावकोंके वर्णनमें प्रगट लिखा है और सुयगडांग सूत्रमें लिखा नाग भूत यक्षादिक १३ तेरे किसमके देवोंकी प्रतिमा पूजणेसें मिथ्यात्वीपणा होय बोध बीज नास होय इसवास्ते श्रावगलोगोंके तो अरिहंतकी मूर्त्तिहीकी पूजा कय बलिकम्माके पाठका अर्थ सिद्ध होता है बुद्धिसें विचारो

पक्षपातीको सूझे नहीं, देखो हम तुमें इनसाफसें कहते है ग्रथ तुमको वोस्यात् नहीं मानना चहियै जो जिनमदिर जिनराजकी द्रव्य पूजाका अफड विना प्रमाण अगले शास्त्रके विना तुमारा मत निकले वाद वणाया होय तो मत मानो, लेकिन् जब ओर अगले ग्रथोंके प्रमाणसें वनाया होय तो वो शास्त्रकू नया नहीं समझणा वो भी मानना चाहियै, तुम विचारो पद्म चरित्र १७ सो वर्षका लिखा भया मौजूद है उसके अनुसार हैमचार्यने रामायण वनाई तो विचारो विना तीर्थंकर गणधरोंके विना दुसरा कोण तेसठ शलाका पुरुषोंका जीवन चरित्र कह सकता था और पद्म चरित्र रचणेवाले सबध कहासें लाये, जब तीर्थंकरोंनें कहा आचार्योंने रचा तो राम रावणने जिनमदिरमें भक्ती करी वो नहीं मानना इससें तीर्थंकरकी आणा भगका दोष लगाया नहीं, जरा विचारके देखो, दुसरा प्रमाण एसा है, दो हजार वर्षके करीब निकली पूर्व धारियोंके वखतमें जो दिगावर साखा उनोंके रामायणमें भी इसी मुजब जिन सेनाचार्य लिखते हैं, तो हे मित्र कहो बुद्धिवान तेरीमानें जुबानकी दलीलया दो हजार वर्षके ग्रथकी, अनेक प्रमाणोंसें तेरा पक्ष झुठा है, तुम हम दोनों सरासर प्रत्यक्ष देख रहे हैं बीकानेरके श्री चिंतामण स्वामीके मदिरके भडारमै २४ से वर्षतककी मूर्ति कायम है, तुमारे मतका जब बीजभी नहीं था तब भाडासाहने भाडासर नामका मदिर कराया जिसका शिलालेख प्रतिष्ठा भये समेंका शिखरमें लगा है जिसमें विक्रम सवत् १४३२ का लिखा है इसीतरे प्राचीन सूत्र सिद्धातोंमें मदिर मूर्त्तियोंका लेख हाजर है, मग्न रहा दृष्टि राग सम्यक्त मोहनीका उदय सो जाणभी अजाण होकर

वरताव और कुयुक्तियें उठाणी, हे मित्र साधु मुनिराज श्री आत्मारामजीनें तत्वनिर्णयप्रासाद ग्रथमे केसा २ प्रमाण जिन मदिरमूर्त्ति जैनशास्त्र प्राकृत व्याकरणादिककी जैन धर्मकी पुराणीसवूती लिखी है सो सब बुद्धिमान अंगरेजोंको मिली और अंग्रेजोंनें प्रत्यक्ष देखके लिखा सो है, तुमकों जरूर हो तो देख लेणा हम ग्रथ वढ जाणेके सबब नहीं लिखते है हे, मित्र तुमारे पास क्या प्रमाण है सो जैन धर्मवाले मूर्त्ति तथा मदिर जिनराजकी आगे नहीं मानतेथे कुछभी बता सकते हो, सो तो फकत रेवडीका नाम गुलसप्फा, बस जादा किसीनें शास्त्रका मजवूत मदिर मूर्त्तिका पूरावा दीयाके बस इतनाही कहते वण आता है के ये बात हम नहीं मानते पूजामें हिंसा है फकत जवानकी दलील सिवाय कुछभी नहीं, जेसे किसी धीठ मस्करेने कहा मेरे मुकावले सब पडित हार जाते हें, तब पडित लोक जमा भये, पडितोंनें पूछा तू कोन है, धीठनें कहा ईश्वर सर्वज्ञ जगत्का कर्त्ता हर्त्ता, पडितोंने उसके मनुष्य होणेकी सईकडों सावूती बताई मगर इसनें तो यही जवाब दिया में नहीं मानता, और इतना कहते रहा उघाडे मू मत बोलो हिंसा होती है, पडतोंनें कहा किसकी हिंसा होती है बोला वायू कायकी पंडत बोले बोलणेसे वायू कायमरे एसाभी किसी जगे लिखा है तो बोला उघाडे मू बोलणेसें सौधर्मेंद्रकी सावद्य भाषा होती है एसा भगोती सूतरकेत्ता है, तब पडित बोला देवताकी करणी पाप वावत तू मानता है धर्मकी वखत देवताकी करनी मानता है यानहीं, तो बोला नहीं, तब पडित बोले इतने धर्मी गृहस्थ २४ तीर्थंकरके मये उनोंको उघाडे मुख बोलणेसें सावद्य भाषा होय एसा भी

किसी जगे लिखा है तो बोला नहीं, तब पडित बोले हम तो भाई सौ धर्मेंद्र नहीं हैं, सो उघाडे मुख बोलणेसे हमारी सावद्य भाषा होय हम तो मनुष्य हैं, हम मनुष्योंके वास्ते तो कहाई उघाडे मुख बोलणेकी सावद्य भाषा वताई नहीं, सौधर्मेंद्रको एका भवावतारीभी । भगवाननें वता दिया है, तो क्या हमारीभी एसी स्थिती होगी एकके वास्ते जो हाकम हुकम देता है वो खास हुकम एक उसीके वास्तेही माना जाता है और एक हुकम आम प्रजाके वास्ते होता है तो वो हुकमकी तामील सबको वजाणी होती है इसवास्ते भगवतीका हुकम खास सौधर्मेंद्रके वास्ते न मालम सर्वज्ञनें कोई कारणसें फुर माया आम मनुष्योंके वास्ते नहीं दिखता, सौधर्मेंद्र अचिंत शक्तीवाला है क्रोडों अष्टापद सिंहकावलसेंभी अतुल वली है, और कोई पुरुष कोई कपडेका एक वडा गूदड मुखके बांध किसीकी निंद्या करे किसीकू चोर कहै किसी परमेश्वरके कहे सतुसाधकों झूठा वतलावे देवकों कुदेव कहैं साधूकों असाधू कहे किसीकू काणा अधा कहे मर्म उघाडे तो वो सावद्य भाषा होय या निरवद्य भाषा होय, इसीतरे जो मूके आडा हाथया वस्त्र न देवे और क्रोधजीतो अहकारजीतो इत्यादिकषायजीतनेका उपदेस दे जिनेश्वरकी साधुओंकी श्रुतज्ञानकी द्रव्य भावसें भक्ती करो पच महाव्रत दसयतीधर्म पालणेका उपदेश करे इत्यादिक दान शील तप भावनाका अधिकार कहै सो सावद्य भाषा तू मानता है या निरवद्य भाषा, अगर जो तू इन वातोंके उपदेश देतेकू सावद्य भाषा कहता है तो तेरे जैसा भारी कर्मा कोई दुसरा जीव नहीं कारण २४ ही तीर्थंकर समवसरणमें बैठ देशना देते हैं और मूके सामने वस्त्र

हाथ कुछभी नहीं देते जो जननक वाणी सुणीजतीहै तब बोला तुम लाख कहोमें एक नहीं मानता है, तब सब पंडित उसें महा धीठ मूर्ख जाण उठ गये, लोकोंनें धीठसें पूछा कोण जीता, धीठ बोला में, लोकोंनें पूछा केसें, धीठ बोला पंडतोंने लाख बात कही मगर मेनें एक न मानी लोक हसणे लगे, ये हाल तुमारे मतावलंबियोंका है, चाहे कैसा भी मजबूत प्रमाण कोई देता होय, मगर हम नहीं मानते, एपाही शब्द निकलता है, तुम लोक मोले अबुझ जीवोंके सामनें कहा करते हो हम ३२ मूल सूत्र विगर कुछभी नहीं मानते, मानते तो हजारो वातें हो जो की किसीमी सूत्रमें नहीं है, इहा लिखू तो ग्रंथ बढ जाय लेकिन् भव्य जीवोंके जाननेके लियें उसमेंकी एक बात लिखता हू, तुम लोक प्रभात पडिकमणमें सामायकमें सीमधर तीर्थंकरकी आज्ञा तथा गुणानुवाद करते हो, बतलावो सीमधर तीर्थंकर माहाविदेह पुंडरीकणी नगरीमें विराजते हैं विचरते हैं ये बात कोनसें सूत्रमें है, अढाइद्वीपमें वीस विहरमान तीर्थंकरोंका नाम ढूंढिये भीषमपंथी दोनों लेते हैं इनोंका नाम आपके माने भये किस सूत्रमें है, जो तुम कहते हो हम तो सूत्रसें मिलती बात मानते हैं, सूत्रोंमें इनोंका नाम निसाण नहीं है केसी तुमारी मिलती बात है इस तरेहो श्री आत्मारामजी सवेगी साधु समकित शल्योद्धारमें २४० बात तुम सूत्रमें नहीं लिखी भई मानकर बरताव करते हो, एसा सब लिखा है, तो फेर तुमकों एसे कहते लज्या नहीं आती, एसी २ बात ३२ सूत्रोंमें नहीं तो हम केसे करते हैं फकत वोकोंके वह काणेंकों सूत्रोंका नाम लेणा है, पजेमें गठे वाद जो हठ मूढ कहो सो सब तहत्त स्वामी, हम सनातन धर्मवाले ८४ गच्छ

नदी सूत्रमें लिखे भये जितने पयन्ने सुत्र ग्रथ मिले उसकी लिखी सब वात मानते हैं, तुमारा सवाल है मदिर करायगा सो पूजेगा, हेमित्र एकात निश्चय एसा नहीं है सो सभी श्रावग मदिर करवावे ही जेसें इस वखत मदिर मूर्त्ति माननेवाले सनातन जैन धर्मी अठारे लाख श्वेतावरी है छ लाख मदिर निखेधक हो गये हैं तो क्या १८ लाख सभी मदिर वणायगें तभी श्रावक होयगें एसा नहीं है कोई समर्थ करवावे वाकी सब प्राचीनोंकी कोई पूजा कोई दर्शन इत्यादि श्रद्धासें श्रावक धर्म चलाते हैं मगर तुमारी तेरकदरवणके जैन धर्मके उपदेशक तीर्थंकरके मूर्त्तिकी निंदा हीलना नहीं करते हैं (प्र०) महावीर प्रभूके श्रावकोंनें किसीनें मदिरका दर्शन तथा द्रव्य पूजा करी हो तो कोई प्रमाण वतलाणा चाहिये (उ०) हे मित्र महाकल्प सूत्रमे एसा लिखा है।

से०तिके हे भगवान त०तथारूप स०श्रमण मा०माहण
सूत्र] सेभयवं तहारूवं समणंवा माहणंवा
चे०जिनमदिर जावै ह०हा गौतम दि०दिन२प्रते निरतर जावै
चेइयघरेगच्छिज्जा हंता गोयमा दिणे२गच्छिज्जा
से०तिके हे भगवन् ज०जो दिन २ प्रति नहीं जावै
सेभयव जइदिणे २ न गाच्छिज्जा
त०तो प्रायश्चित्त होय ह०हा गौतम पा०प्रायश्चित्त
तओपायच्छित्तहविज्जा हंता गोयमा पायच्छित्तं
ह०होय से०तिको हे भगवन् क्या प्रायश्चित्त होय हे गोतम
सेभयव किं पायच्छित्तहविज्जा गोयमा

प० प्रमाद प्रत्यय कर　　त० तथारूप　　श्रमण　　माहण
पमायपडुच　　तहारूवं　　समणवा　माहणंवा
ज० जो जिन मदिरमें नहीं जावै　त० तो प्रायश्चित　छ० बेलेकादड
जइजिणहरेनगच्छिज्जा　तओपायच्छित्त　छट्टंउवदं
आवै　　अ० अथवा पचोलेकादड प्रायश्चित्त कहणा
सेज्जा　अहवादुवालसम पायच्छित्तं उवदसेज्जा
से० तिको हे भगवन्　　के० किसवास्ते जावै　　हे गौतम
सेभयव　　केणठेणंगच्छिज्जा　　गोयमा
ना० ज्ञान दर्शन चारित्र　र० रक्षाके अर्थ　ग० जावै　जे० जो
नाणदंसण चरण　रक्खणठाए　गच्छिज्जा　जे
कोई हे भगवन्　　स० श्रमणोपासक　　पो० पोषधसालामें
केइभयव　　समणोवासया　　पोसहसालाए
पौषधब्रह्मचारी　　जो० जो जिन मदिरमें नहीं जावै　त० तो
पोसहबंभयारी　　जोजिणघरनगच्छिज्जा　　तओ
प्रायश्चित्त होय　　ह० हा　गौतम　　पा० प्रायश्चित्त होय
पायच्छित्तहविज्जा　हता　गोयमा　पायच्छित्तहविज्जा
हा गौतम　ज० जैसा साधू तेसा　मा० कहणा　छ० बेला अथवा
गोयमा　जहासाहूतहा　भाणियव्वा　छट्ट अहवा
पचोलेका प्रायश्चित्त ह० होय　　　इ० एसामाहाकल्पसूत्रमें
दुवालसमपायच्छित्तंहविज्जा　　इतिमाहाकप्पसुत्ते ॥

अथ द्रव्यपूजा करनेवालोंका नाम पंचकल्पसूत्रमें
अथ द्रव्य पूजाका पंचकल्प सूत्रका पाठ
ते० तिणकाल ते० तिणसमयमें जा० यावत् तुंगियानाम नगरीमें
तेणं कालेणं तेणं समएणं जावतुंगियाएनयरीए
ब० बहोत श्रावक बसते हैं संख सतक
बहवेसमणोवासगापरिवसंति संखे १ सयगे २
सिलप्रवाल ऋषिदत्त द्रमक पुष्कली
सिलप्पवाले ३ रिसिदत्ते ४ दमगे ५ पोक्खली ६
निविष्ट भानुदत्त सुप्रतिष्ठ सोमिल
निविठे ७ भाणुदत्ते ८ सुपइठे ९ सोमिले १०
निरूपम आणंद कामदेवादिक
निरूपमे ११ आनद १२ कामदेवाइणो १३
जे०जिके दुसरे गामोंमें वसते हैं इ०धनवान तेजवान निस्त्रीने
जे अन्नत्थगामेपरिवसंति इड्ढादित्ताविच्छिन्ना
वि० घणा है पठनादन जा० लाध्या है अर्थ ग० ग्रहण किया है
विपुलबलवाहणा जायलद्धठा गहिअठा
अर्थ चा० चौदस आठम अमावस पूनमजिनकन्याणक निर्दिष्ट
चाउदसठ मुदिठ पुण्णमासिणीसु
प० प्रतिपूर्ण पोसहपालतायका नि०साधुकू निं०मापर्वीकू
पडिपुन्नं पोसहपालेमाणा निग्गथाणवा निग्गंथिणवा
फा० प्रासुक ए० गवेषनीक शुद्ध अ० अशनादिक पा० पाणी
फासुएणं एसणिज्जेणं असण पाण

खा० खावायोग्य सा०स्वादिन जा० यावत् पडिलाभताथकाविचरै
खाइमं साइमं जावपडिलाभेमाणाविहरति
जा० जिन मदिरके विषै जि० जिन प्रतिमाकू ति० तीनकाल
जावचेइयालेसु जिणपाडिमाण तिसंझं
ग० चदन पुष्प वस्त्रादिकेकर अ० पूजा करता थका यावत्
गंधपुप्फवत्थाएहिं अचणं कुणमाणा जाव
विचरै से० तिके किस अर्थे है पूज्य जिन प्रतिमा पूजै
विहरति सेकेणठेणंभंते जिनपडिमापूएई
गो० हे गौतम जिन प्रतिमा पूजै से० तिके सम्यक् दृष्टी
गोयमा जिणपडिमाणपूएई सेसम्मदिठी
अ० दुसरे फेर मिथ्यादृष्टी मि० मिथ्यादृष्टीकै नो०नहीं ज्ञान
अण्णेपुणमिछदिठी मिछदिठियस्स नोनाण
नो० नहीं चारित्र नो० नहीं मोक्ष स० सम्यक् दृष्टीकै
नोचरणं नोमोक्खोत्ति सम्मदिठीअस्स
ज्ञान चारित्र और मोक्ष है से० तिके इस अर्थे गौतम
नाणं चरण मोक्खोत्ति सेतेणठेणं गोयमा
चे० जिन मदिरमें जिन प्रतिमाकू चदन पुष्प वस्त्रादि
चेइयालेसु जिणपडिमाणं गंधपुप्फवत्थाए
कैकर पूजा करणी इ० एसा पचकल्प सूत्रमे लिखा है।
हिंपूआकायव्वा इति पचकप्पसुत्ते ॥

हे मित्र तेरा प्रश्न सब इस जगे खतम हो चूका ये सुन लोपकनें जिन प्रतिमासें द्वेष कर छोड दिया अब तुमारे माने भये ३२ सूत्रमेंसें

ग्रंथ नाम सूत्रका है सो सूत्रके तुल्य मानना चाहिये, प्रमाणीक आचार्योंके रचे भये ग्रथ कहो चाहे सूत्र कहो सो सूत्र पाठ लिखते हैं (सूत्र) अनुयोगद्वारमें दस नाम ग्रथका है सो देखो (सुअ १ सुत्त २ गथ ३ सिद्धत ४ सासण ५ आणत्ति ६ वयण ७ उवएस ८ पन्नवण ९ आगमेय १० इति (अर्थ) श्रुत १ सूत्र २ ग्रथ ३ सिद्धात ४ सासण ५ आज्ञा ६ वचन ७ उपदेश ८ प्रज्ञापन ९ आगम १० एसे दस नाम ग्रथके हैं, तुम सूत्र २ क्या पुकारते हो तीर्थंकर गणधर माहाराज तो सूत्र और ग्रथकू एक फुरमाते हैं इस उपरात सूत्रका पाठ न मानो तुमारा इकतियार है फेर श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमें चारों निक्षेपोंकों सत्य लिखा है (सूत्र) नामसचे १ ठवण सचे २ दव्वसचे ३ भावसचे ४ (अर्थ) नामसत्य १ थापनासत्य २ द्रव्यसत्य ३ भावसत्य ४ अब तुम विचार करो जेसा भाव यानें गुण सत्य है वेसाही थापना सत्य है गुण और गुणीका सबध है जिसके गुण अछे उसके नाम थापना द्रव्य सब अच्छे लेकिन् तुमारा मत तो एकात भाव याने गुणकों सत्य मानता है तो फिर नाम क्यों तीर्थंकरोंका लेते हो इस चारों निक्षेपोंका समवाय सबध है एक विगर एक नहीं ठहरता अगर तुमारे गुरु योगी नाम धराते हैं तो ध्यानभी करते होंगें तो हम निरापेक्षी होकर तुमारेसें पूछते हैं हमारे कोई जिन प्रतिमा पूजाणेका पक्ष नहीं है तुम लोक प्रतिमा पूजो तो तीर्थंकर सिद्धकी भक्ती करणेसें सम्यक्त तुमारा साफ होगा नहीं पूजो तो हमारी क्या हानी है मगर हमनें हजारो ग्रथ सूत्र देखा है और जोगाभ्यासका भी कुछ नमना देखा है और जाणता हू इसवास्ते तुमसें ५८

है तुमारे साधोंसें पूछो तो पिंडस्थ १ पदस्थ २ रूपस्थ ३ रूपातीत ४ इसका क्या स्वरूप हैं जब इन चारोंका स्वरूप समझा देवे और जिन प्रतिमाका ध्यान आ जावे तो हमारा लिखणा सब सत्य समझणा अगर तेरे साध इन चारोंका स्वरूपही नहीं जाणतें हैं तब तो योगी नही जोग स्वरूपके जाणकार नहीं फक्त भेप उपजीवी याने भेपधार पेट भरणेवाले है इन चारोंका स्वरूप जो जाणें और ध्यावै सो कर्म खपाय १ भव दो भव आखर ७।८ भवसें मुक्ति जायगें इस चारोंके अतर्गत जरूर २ जेन योगी जिन प्रतिमाका ध्यान करते हैं, ये धर्म ध्यान १ शुक्ल ध्यानका अभ्यतरी स्वरूप है (प्र०) जिन प्रतिमाकों जन नमस्कार जिनराज समझके करतें हो तब नमस्कार तो मूर्त्तिकू होता है सिद्ध परमेश्वर तो मूर्त्तीसें अलग ठहरे और सिद्ध परमेश्वरकू नमस्कार करोगे तब मूर्त्ति अलग ठहरी (उ०) हे मित्र हम तो जिनराजकी मूर्त्तिमें जिनराजका भाव रखके नमस्कार करते हैं श्री तीर्थंकर गणधर देवजीके आज्ञा मुजब क्योंकै सिद्धोंकी जहा मूर्त्ति विराजमान है उस जगेकों सूत्रोंमें सिद्धायतन यानें सिद्धोंका घर फुरमाया है मगर मूर्त्ति घर नहीं फरमाया है इतना विनय रक्खा है और तुमारे मतमें केई अभव्वियोंसें सुणा है मूर्त्तिकू पत्थर भाठा अजीव पुद्गल इत्यादि लञ्ज कहते हैं, श्रीरायपसेणी सूत्रमें जीवाभिगम सूत्रमें सूर्याभ देवताके तथा विजय देवताके अधिकारमें द्रव्य पूजा करती वखत एसा पाठ है (धूव दाऊण जिन वराण) यानें धूप उखेवता है जिनवरकू अब जो तुम आत्मगवेपी होकर सूत्रोंका लिखा यथार्थ मानते हो तो विचार करणा चाहिये जिन प्रतिमाकू गणधर

देवजीने जिनवर लिखा है या नहीं तीर्थंकर गणधर देवजी तो जिन प्रतिमाकू जिनवरही समझते हैं इसवास्ते हम तो आज्ञा मुजब जिन मूर्त्तिकी स्तुति पूजा जिनवर समझ करते हैं इसवास्ते जो तू हठ रखता है तो हम तुझें पूछते है बाईस टोलेभीषम पथी प्रभातकी सामायकमें माहा विदेहवासी श्री सीमधर तीर्थंकरकू वदना करते हैं तब रस्तेमें वेगिणतीके घर पशूपखी अदमी पहाड नदिया दरखतकी आड सामने हैं तुमारा नमस्कार इण पदार्थोंकू होता है या सीमधर स्वामीकू जो कहोगे हमारा भाव उन परमेश्वरकी वदनाका है घर पहाडादिक वदनाका नहीं, वो केवल ज्ञानसें हमारा वदन स्तवन देखते हैं तो मित्र इसी तरेही हमारी पूजा स्तवना वदना उसी परमेश्वरकू है के जिसकी वो मूर्त्ति है केवल ज्ञान दर्शनसे भक्ति पूजा हमारी देखते हैं (जबाब दूसरा) तुमारे माने भये साधजीकू जब नमस्कार करते हो तो शरीरकू करते हो या जीवको कायाकू नमस्कार करते हो तब तो जीव पदार्थ जुदा है और साधूके जीवकू नमस्कार करोगे तो कायाकी आड है और पुद्गल द्रव्य जुदा है तब कहोगे काया साधूजीकी है तो विचारो मूर्त्तिभी जिनराजकी है (प्र०) अमोलख ऋषजी जैनतत्व नाम ग्रथमें लिखते हैं जिनराजकी भाव पूजा करणेसें सिद्धी है मगर मूर्त्तिकू पुष्प नैवद्य चढाणेमें क्या लाभ है (उ०) हे मित्र तो फेर साधू लोकोंकीभी भाव पूजा ही करणी चाहिये आहार औषधी वस्त्र पाटा वा जोट देते हो इसमें प्रत्यक्ष हिंसा है साधू दिसा जाता है पैसाब करता है दिसाकी भिष्टामें असक्षा जीव हलते चलते पचेंद्रीतक पैदा होते हैं, चोमासेमें मेहकी झडी जब मच जावै तब साधू पेसाब

करे पैसानकू रख छोडणेका हुकम नहीं भगवानकी आज्ञा नहीं तब वरसते मेहमें परठै उससें जलके असक्षा जीव नीलण फूलण आ श्री अनता जीवोंकी हिंसा होय ये हिंसा आहार पाणी देणेवालेकू लगै फेर साधुओंके अजीर्णादि रोग होकर वेइद्री कृमि शरीरमें पैदा हो जावे तो ये सब पाप आहार देणेवालेकों लगै तुमारे साधू मलीनता वहोत रखते हैं इसवास्ते जूलीख चमजू पैदा हो जाती है उस जीवोंके मरणेसें वस्त्र देणेवालेकू पाप लगै, इत्यादिक प्रत्यक्ष हिंसा दीख रही है तो फेर सावद्य द्रव्य पूजा छोडके निरवद्य वदना स्तवना भाव पूजाही क्यों नहीं किया करते हो (प्र०) एसा तुमनें वताया सो सब जीवोंका पैदा होणा और हिंसा होणा दीखता तो है मगर सूत्रोंमें साधुओंकों दान देणा लिखा है और सूत्रोंमें साधूओंकों दान देणेमे पाप नहीं लिखा है इसवास्ते देते हैं (उ०) तो हे मित्र तीर्थंकरकी मूर्त्तिपर पुष्प जल दीप धूप फल इत्यादिक जो अग पूजा अग पूजामें चढाया जाता है ये तो सब एकेंद्री अव्यक्त चेतन है इसमें तो तेरे साधोंने तेरेकू हिंसा वताकर छोडा दिया और आपके माल मसाला दूध घी वगेरे चार प्रकारके आहार देणेमें लाभ वताया भला तू कुछ बुद्धि वराता है या नहीं भगवत तीर्थंकरोंने फरमाया है एकेद्रीसें वेइद्रीके मारणेमें पाप जादा उससें तेइद्री चोरेंद्री पचेद्रीका क्रमसें जादा २ पाप है, विचारले तीर्थंकरकी द्रव्य पूजामें जादा पाप है या तेरे साधोको द्रव्य दान देणेमें जादा पाप है, तू कहता है सूत्रोंमें पाप साधूकू दान देणेमें नहीं वताया, देणेका हुकम लाभका कारण वताया तो हे मित्र वस समकामतै हो चूका अब हमकों तू किसीभी शास्त्रमें जिन

मूर्त्तिकी द्रव्य पूजा करणेमें हिंसा और पाप लिखा वतला देवे तो हम तुझें और तेरे मानें साधोंको सचे जिन धर्मके जाणकार महाव्रती समझें, तेरा कहा धर्म हम हमारे संवेग सनातन धर्मवालोंकों मजुर करा देवें और नहीं लिखा दिखावे तो तेरे मतकों झुठा समझ तूं और तेरे साधू सनातन सचाधर्म कबूल करे या नहीं इस वातका लेख दिखायेवाद तूं और तेरे गुरू अपने झुठी वातकू जलाजली देया नहीं, तू ये लेखकभी नहीं दिखा सकेगा जेसा मूकी दलीलसें जिन मूर्त्तिकी द्रव्य पूजामें तेनें हिंसा वताई तेसी हमनें भी मू की दलीलसें तेरे साधोंके आहार पाणीके दानमें पचेंद्री तकके जीवोंकी प्रत्यक्ष हिंसा सिद्ध कर कर वताई तू कहता है साधूकू दान देणेकी सूत्रोंमें आज्ञा है तो हे मित्र तीर्थंकरके मूर्त्तिकी द्रव्य पूजा करणेकीभी सूत्रोंमें श्रावगकू आज्ञा है उसमें लाभ उससें अधिक लाभ द्रव्य पूजा जिनमूर्त्तिकी समझ (प्र०) साधुओंको दान देणा तुम भी तो मानेते हो और लाभका कारण वताते हो (उ०) हम तो पहले सम्यक्तकी करणीमें जिन मूर्त्तिकी द्रव्य भाव पूजा व्रतोंकी नींव याने जड वताते हैं और पोसेके पारणे साधुओंकों दान देणेवाले श्रावककू वारमा अतिथि संविभाग व्रत पैदा भया वताते हैं अन्यथा दान साधुओंकों देणेसें पुन्यानुबंधी पुन्य होता है एसा मानते हैं मगर विनापोसे दान देणेवाले गृहस्थकों वारमा व्रत होय एसा नहीं मानते (जवाब दूसरा) हे मित्र तू वतला इच्छावालेकू दान देणा श्रेष्ठ या इच्छा रहितकू दान देणा श्रेष्ट सकर्मीकू दान देणा श्रेष्ठ या अकर्मीकू देणा श्रेष्ठ इस वातकू समझ लेगा ` ''धुओंकी द्रव्य पूजा करणेसें आहारादिकसें तीर्थंकरकू

करै पैसानकू रख छोडणेका हुकम नहीं भगवानकी आज्ञा नहीं तब
वरसते मेहमें परठै उससें जलके असक्षा जीव नीलण फूलण आ श्री
अनता जीवोंकी हिंसा होय ये हिंसा आहार पाणी देणेवालेकू लगै
फेर साधुओंके अजीर्णादि रोग होकर बेइद्री कृमि शरीरमें पैदा हो
जावे तो ये सब पाप आहार देणेवालेकों लगै तुमारे साधू मलीनता
वहोत रखते हैं इसवास्ते जूलीख चमजूं पैदा हो जाती है उस जीवोंके
मरणेसें वस्त्र देणेवालेकू पाप लगै, इत्यादिक प्रत्यक्ष हिंसा दीख रही है
तो फेर सावद्य द्रव्य पूजा छोडके निरवद्य वंदना स्तवना भाव पूजाही
क्यों नहीं किया करते हो (प्र०) एसा तुमनें वताया सो सब जीवोंका
पैदा होणा और हिंसा होणा दीखता तो है मगर सूत्रोंमें साधुओंको
दान देणा लिखा है और सूत्रोंमें साधूओंकों दान देणेमे पाप नहीं
लिखा है इसवास्ते देते हैं (उ०) तो हे मित्र तीर्थंकरकी मूर्त्तिपर
पुष्प जल दीप धूप फल इत्यादिक जो अग पूजा अग्र पूजामें चढाया
जाता है ये तो सब एकेंद्री अव्यक्त चेतन है इसमें तो तेरे साधोंनें
तेरेकू हिंसा बताकर छोडा दिया और आपके माल मसाला दूध घी
वगेरे चार प्रकारकै आहार देणेमें लाभ बताया भला तू कुछ बुद्धि
धराता है या नहीं भगवत तीर्थंकरोंने फरमाया है एकेंद्रीसें बेइद्रीके
मारणेमें पाप जादा उससें तेइंद्री चोरेंद्री पचेद्रीका क्रमसें जादा २
पाप है, विचारलै तीर्थंकरकी द्रव्य पूजामें जादा पाप है या तेरे सा-
धोको द्रव्य दान देणेमें जादा पाप है, तू कहता है सूत्रोंमें पाप साधूकू
दान देणेमें नहीं बताया, देणेका हुकम लाभका कारण बताया तो हे
मित्र बस सनकामतै हो चूका अब हमकों तू किसीभी शास्त्रमें जिन

मूर्त्तिकी द्रव्य पूजा करणेमें हिंसा और पाप लिखा वतला देवें तो हम तुझें और तेरे मानें साधोंको सचे जिन धर्मके जाणकार महाव्रती समझें, तेरा कहा धर्म हम हमारे सवेग सनातन धर्मवालोंकों मजुर करा देवें और नहीं लिखा दिखावें तो तेरे मतकों झुठा समझ तू और तेरे साधू सनातन सचाधर्म कबूल करो या नहीं इस बातका लेख दिखायेबाद तू और तेरे गुरू अपने जुठी बातकू जलाजली दैया नहीं, तू ये लेखकमी नहीं दिखा सकेगा जेसा मूकी दलीलसें जिन मूर्त्तिकी द्रव्य पूजामें तेनें हिंसा बताई तेसी हमनें भी मू की दलीलसें तेरे साधोंके आहार पाणीके दानमें पचेंद्री तककै जीवोंकी प्रत्यक्ष हिंसा सिद्ध कर कर बताई तू कहता है साधूकू दान देणेकी सूत्रोंमे आज्ञा है तो हे मित्र तीर्थंकरके मूर्त्तिकी द्रव्य पूजा करणेकीमी सूत्रोंमें श्रावककू आज्ञा है उसमें लाभ उससें अधिक लाभ द्रव्य पूजा जिनमूर्त्तिकी समझ (प्र०) साधुओंको दान देणा तुम भी तो मानेते हो और लाभका कारण बताते हो (उ०) हम तो पहले सम्यक्तकी करणीमें जिन मूर्त्तिकी द्रव्य भाव पूजा व्रतोंकी नींव याने जड बताते हैं और पोसेके पारणे साधुओंकों दान देणेवाले श्रावककू बारमा अतिथि सविभाग व्रत पैदा भया बताते हैं अन्यथा दान साधुओंकों देणेसें पुन्यानुबधी पुन्य होता है एसा मानते हैं मगर विनापोसे दान देणेवाले गृहस्थकों बारमा व्रत होय एसा नहीं मानते (जबाब दूसरा) हे मित्र तू वतला इच्छावालेकू दान देणा श्रेष्ठ या इच्छा रहितकू दांन देणा श्रेष्ट सकर्मीकू दान देणा श्रेष्ठ या अकर्मीकू देणा श्रेष्ठ इस बातकूं समझ लेगा तो सा... पूजा करणेसें आहारादिकसें तीर्थंकरकू

दान देणा द्रव्य पूजाकी वख्त अतीव श्रेष्ठ समझ लेगा उचित भक्तीकी जाती है निसीथ सूत्रमें लिखा है जिन मूर्त्तीकी पूजामें लाभ ज्ञाता रायपसेणी जीवाभिगम महाकल्प इत्यादि सूत्रोंके आज्ञा मुजब (प्र०) तीर्थोंमें श्रावग लोक साधू लोक जाते हैं ये भी किसी ३२ सूत्रोंमें लिखावता सकते हो (उ०) देख प्रथम तो ज्ञाता सूत्रमें था वचा पुत्र सुकशेलक अध्ययनमें शत्रुजय पहाडपर मुक्ति जाणा वताया कर्म शत्रुओंका जीतणेवाला इसवास्ते इस पहाडकू तीर्थंकरोंनें शत्रुजय सूत्रमें फुरमाया तीर्थंकरोंनें इस पहाडका जेसा गुण केवल ज्ञानद्वारा देखा वेसाही नाम दिया है भगवतीमें जघाचारण विद्याचारण तीर्थ वदना करणे जाते हैं सो तुम सब सुण रखा है तेरे मतका निश्चकर्मा इसी वातपर उलटी परूपणा करीथी लूकेनें, ये तीर्थों जाणेकी आज्ञा तेरे माने भये सूत्रमें मोजद है फेर देख भद्रबाहू स्वामी निर्युक्तीमें ये गाथा लिखी है (गाथा) जम्मंदिरकानाण तित्थयराण महाणुभावाण जत्थयकिरनिव्वाण आगाढ दसण होई १ (अर्थ) जन्म दीक्षा ज्ञान तीर्थंकर महानुभावोंका भया जिस जगे निश्चय करके निर्वाण भया उस भूमीके स्पर्शनसे सम्यक्त वडा मजवूत दृढ होता है एसा लिखा है और आचाराग सूत्र दुसरा श्रुतस्कधके अतकी तीसरी गाथामें इतने तीर्थ लिखे हैं (गाथा) जम्माभिसेय निक्खमण चरणत्ताणुप्पसाय निव्वाणो दियलोयभवणमदिर नदीसरव्वोमनयरेसु १ अट्ठावयउज्जते गयगायमएअ,धम्मचक्केय पासरहावत्तणय चमरुप्पायच वदामि २ (अर्थ) ज० जन्माभिषेक भूमी नि० दीक्षालीसो भूमी च० चारित्रका अनुप्रसाद यानें जिस जगे केवल ज्ञान उपजासो भूमी नि०

निर्वाणयाने जहांसें मुक्ति गये सो भूमी दि० देवलोकके सिद्धायतन भ० भुवन पतियोंके भुवनकै सिद्धायतन म० मेरू पहाडके सिद्धायतन न० नदीसर द्वीपकै सिद्धायतन व्यो० व्योम नगर कहते जोतपी देवतोंकै विमानोकै सिद्धायतन १ अ० अष्टापद उ० गिरनार ग० गजपद तीर्थ ध० धर्म्मचक्रतीर्थ पा० पार्श्वनाथका सर्व तीर्थ र० रथावर्त्त तीर्थ च० जिस जगेमें चमरेंद्र उचा गया सुसमार पुरी नगरी माहावीर काउसग्गमें रहे सो तीर्थ व० वदना करताहू, अब हे मित्र तीर्थकरोकी वाणीरूप आचाराग सूत्र मानता है तो फेर उसमे लिखे इतने तीर्थोंकी वदना कबूल क्यों नहीं करता, (प्र०) आप लोक महा निसीथ सूत्रमें मदिर कराणेका और द्रव्य पूजा करणेका हुकम वताते हो और हमारे अमोलख ऋषिजी जैनतत्वग्रथमें लिखते हैं महानिशीथ सूत्रका पत्राकट गया था सो आठ आचार्योंनें मिलकै फैर लिखा है इसवास्ते माननेमे सका है (उ०) हे मित्र आचार्योंका लिखा महानिशीथ सूत्र है तो ३२ सूत्र किसनें लिखा है फेर इनोको क्यो मानता है क्या इन ३२ सोंके ऊपर गणधरजीकी मोहर लगी है और सूत्रोंपर नही है तेरे तो द्वेष जिन मदिरका है सो इस सूत्रमे प्रगटपणें कराणेका हुकम लिखा है ये हुकम दुखता है इस सूत्रमें तो है सो है ही मगर नदी सूत्रमें लिखे भये जो सूत्रपयन्ने विद्यमान है उनोमे प्रायें मदिर मूर्त्तिकी भक्ती बहोत जगे लिखी है सो तो हम लिखतेई जाते है, पचागी जैनेंद्र व्याकरण तथा कोसोंके प्रमाणसे जो जो आचार्याने सूत्रोंकी लिखी उसमें भी मदिर मूर्त्तियोंका वर्णन भक्ती करणी लिखी है, वैसाही सना— मानते हैं ये पंचागी तीर्थ-

कर गणधरोंकी परपरागत प्रनाली सेंत्रणी है इसवास्ते महानिसीथके लिखणेवाले आचार्य आत्मार्थी गीतार्थ थे उनोंनें अपणी मन कल्पना कुछभी नहीं लिखी है उस महानिसीतमें उन आचार्योंनें लिख दिया है जो पन्नेकटणेके सबब पाठ चला गया है सो हमनें नहीं लिखा जो मिला सो लिखा इस वातसें सबूत हो चूकाकी गया सो सबध गया मिला सो लिखा इय आठ आचार्य क्या लिखते हैं तुम विचारो जैनियोंके सभी सूत्रोंका यही हाल वणा है इस वखत जो इग्यारे अग है तुम वतलानो जैसा गणधरजीनें रचा था उतनाही है याकम याने १८००० पद आचाराग ३६००० पद सुगडाग एसे ठाणदूने थे सो जितना आचार्योंको मिला सो लिखा इस वखत आचाराग २५ सय श्लोक है इसतरें सब सूत्र जाते रहे जो कुछ याद रहा सो लिख लिया तो तुम माहानिसीत माननेंमें सका करते हो तो फिर इग्यारे अग माननेंमें सका क्यों नहीं करते इसवास्ते तो दिगाबरी कहते हैं नाम तो इग्यारे अगोंका येही है मगर वो परमार्थ श्वेताबरोंके माने सूत्रोंमें नहीं इसवास्ते हम नहीं मानते तो हे मित्र उनोंके कहणेसें न इग्यारे अग झूठा केहा जावे न तुमारे कहणेसें माहानिसीथ वगेरे वाकीके सूत्र झूठे हो सकते हा इतना तो जरूर है समुद्र जेसा इग्यारे अग था सो लोटेमें समावे जितना रह गया मगर जल तो उसी स्याद्वादरूप द्वादसागीका है इसवास्ते महानिशीथ सूत्र जो इस वखत कायम है सो वाकीके सूत्रोंकी तरें अक्षर २ सत्य है तुमारी तरे कट्टर पक्षपातीवो आठ आचार्य नहीं थे सो मनोक्त कुछ मिलाके लिखा है भला तुम वता सकते हो ये आठ आचार्योंनें महानिशीथकू दूसरी वेर लिखा

उनोंकों कितने वर्षमया सो तो तुम नहीं बता सकते लेकिन् हम बताते हैं जिसकों लिखे चोदेसे वर्ष होगया वो आचार्य झुठे तो तेरे मत निकालणे वाले दोसे चारमे वर्षके लूका और लवजी सचेतेनें किम ज्ञानसें समझा समुद्र जेमे बुद्धीके धारक आचार्योंकों जिन प्रतिमासें द्वेषकर झुठा समझणा ये केसा सम्यक्त होगा सो बुद्धिवान समझ लेंगें एक अक्षरमी जिनवचनसें विरुद्ध परूपै तो अनत ससार रुलै तो क्या वो आठ आचार्योंकों परभवका डर नहींथा सो मनोक्त बात सूत्रमें डालते ये महिमा तुमारे मतमें तो हमने प्रत्यक्ष देखी है भगवती सूत्रके पहले पदका अर्थ पार्श्वचद्रसूरि नें लिखा है नमस्कार था ओ ब्राह्मी लिपी जे अक्षर थापना रूप, इस पदका अर्थ अब ढूंढक तेरा पथियोंकी लिखी पोथीमें देखलो कुछका कुछ व्याकरण विरुद्ध लिखा है जती आचार्य तो जैनधर्मके धायक थे जिनोंकी बदोलत ही जैनधर्म चलरहा है मदिर मूर्तिका दाखला महा निसीथ सूत्रमें क्या लिखा है बलके भगवती सूत्रमें भी जधा विद्याचारणके अधिकारमें शाश्वत चैत्यकी बदना करकै वो लद्धिवंत अणगार असाश्वत चैत्य श्रावक लोकोंकै कराये भये की वदना करे वो पाठ एसा है (इह मागछति इह चेइयाइ वदई इत्यादि ॥ (अर्थ) इहां आवै, इहाकै चैत्योंकी बदना करै, जरा विचार करो, इहा तो साश्वत चैत्य है नहीं, जो तुम ज्ञानकी वंदना कहोगे तो वो इहा क्या अपूर्व चीज देखी नहींथी, सो पीछा आकै देखकर अचरजपायकै वदना करै, ज्ञान अर्थ किसीतरे चैत्यशब्दका होताहीं नहीं, व्याकरणकीं रूसैं, क्योंके ज्ञानकी वदनामें एक वचन होता है, जेमें नाणं

वंदइ, एमा होता है, और इहा तो चेइयाइ वदइ, एमा पाठ है सो बहु वचन है, चैत्यानिवदति, ये द्वितीया विभक्ती चैत्यशब्दका बहु वचन है तुमारे गुरू तो व्याकरण नाम जरूर सुण रखा है लेकिन् तुमारे गुरूका वचन सच है या सनातन धर्मवालोका किसी भी निरापेक्षी व्याकरण पढेसें अर्थ कराकर सुणतोलो, केवलज्ञान एक है ज्ञानका वदन लब्धि धारी करते तो एक वचन गणधर देवजी धरते मगर जिनमूर्त्तिया अनेक है इसवास्ते चैत्यानि बहु वचन धरा है हठ छोडो जिन आज्ञामानो जादा क्या लिखें किसी भी संस्कृत या प्राकृतकोसमें ज्ञानका नाम चैत्य लिखा नहीं तो फेर तुमारी कल्पना कोण बुद्धिवान मान सकता है व्याकरण पढा कोस पढामया तुमारा कहा मया अनर्थ कभी मानेगा नहीं और भगवाननें प्रश्न व्याकरण सूत्रमें फुर माया है जो व्याकरण विनापढे सूत्र पढके लोकोंकों उप-देसदे वो मृषावाद बोलणेवाला होता है (काल्लतिय वयणतिय) इत्यादिक पाठ प्रश्न व्याकरण सूत्रमें लिखा देखलो अब तेरे साध उपदेशक तीर्थ करके हुकम मुजब मृषावादी है एसोंकेवचन बुद्धिमांन नहीं मानसकतै (प्र०) तीर्थंकर भगवाननें चार धर्म फुर माया दान १ शील २ तप ३ भावना ४ इण चारोंमें मूर्तिपूजा तो नहीं आई (उ०) हे मित्र जिन मूर्त्तिपूजामें चारों ही धर्म मौजूद है सो तू समझ, प्रथम तो सुपात्रदानके दो भेद है अकर्म्मी सुपात्रदान १ और सकर्म्मी सुपात्रदान २ पात्र भी दोतरे है रत्नपात्र १ स्वर्णपात्र २ श्रीतीर्थंकर सिद्ध अकर्मी रत्नपात्र है आसातृष्णारहित है उनोंकों उत्तम द्रव्य अर्पण करणा सो अकर्मी सुपात्रदान है १ दुसरे सकर्मी

सुपात्र स्वर्णपात्र साधू, क्यो के साधूके आठौं कर्म बाकी है कर्म तोडणेके उद्यममें लगे हैं, लेस्या भी छव है, इसवास्ते क्षुधा वेदनी मिटाणे शीत परी सहादि मिटाणे अनेक चीजोंके आस्यावत है, तीर्थंकर केवली तथा सिद्धोंके मुकावले छद्मस्थ साधू तुछ गुणधारीके दान देणेमें पुन्यानुबधी पुन्य वगेरे लाभका कारण जाण गृहस्थदान देता मुक्तीका कारण मानता है तो इछारहित परमेश्वर अकर्मीके सन्मुष उत्तम द्रव्य अर्पण करणेसें अष्टसिद्धि नवनिद्धि तथा मुक्तिपद मिलै इसमें तो सकाही क्या है सो राजनीतीमें लिखा है (श्लोक) देहीतिवाक्य वचनेषु नेष्ट, नास्तीतिवाक्य तत कनिष्ट, गृहाणवाक्य वचनेपुराजा, नेच्छामिवाक्य राजाधिराज १ (अर्थ) दे कहणा नीचावचन नहीं कहै नीच निराठ, लोकहणा राजा वचन, नहींचाहसाम्राट १ इसवास्ते आसा इच्छारहित भगवान सिरोमणी सुपात्र है इसवास्ते तीर्थंकरकी मूर्त्तिकी द्रव्यपूजामें दानधर्म भया १ पाचों इद्रियोंका वस करणा सो शीलधर्म है सो द्रव्यपूजा भावयुक्त जब गृहस्थ करता है तब इद्रिया पाचो सबर भावमें आजाती है इसतरे शीलधर्म भया २ तपका १२ भेद छबाह्य छअभ्यतर सो जिनमूर्तिकी पूजाकी वखत चारों आहारका त्याग रहता है ये तो बाह्यतप और अरिहत सिद्धोंका विनय वेयावच्च ध्यान इसतरे द्रव्यभावयुक्त पूजामें अभ्यतर तप भया ३ शुभभावना आती है तभी तो श्रावक लाखो क्रोडों रुपये परमार्थमें लगाया और लगाते हैं राजा कुमारपाल राजा सम्प्रति सवा-लाख जिनमदिर क्रोडोंमूर्त्तियां भरवाई वस्तुपाल तेजपाल विमलमत्री आबूपरमदिर कराया एक मदिरकों बारे क्रोड तेपनलाख सोनईये दुसरे

मदिरकों सातक्रोड ५२ लाख मोनइये लगाये विद्यमान समयमें
श्रीमालबदरीदासजी झवरी कलकत्तेमें लाखों रुपे लगाकर जिनमदिर
बणवाया है और सुजाणगढमें पनेचदजीसिंघी अढाईलाख रुपे लगाकर
जिनमदिर बणारहा है और हजारों श्रावक बणवा रहे हैं इस बखत नि
हालचद पूनमचदकेपुत्र फूलचदजी गोलछा फलोधीवाला जीर्णोद्धार ओ
सियाके मदिरका करवारहा है अपने कुटुबके अर्थ मकान बणाणा सो
स्वार्थ आरमका हेतू आश्रव है, और जिनमदिर कराणा परमार्थ समझ
तीर्थंकर सिद्धोंकीविनय वेयावच्च रूप शुभभावनासें जो श्रावक जिन
मदिर कराता है उसकू निर्जरा होती है बारमें देवलोकका सुखभोग
पीछे जन्ममरणसें छूटता है महानिसीथ सूत्रमें लिखा है, श्रावग द्रव्य
पूजा स्नात्र करती बखत तीर्थंकरोंके पाच कल्याणकका स्वरूप भावना
भाता है इसवास्ते द्रव्यपूजामें भावना धर्म भया ४ (प्र०) तीर्थंकरकी
मूर्त्तिकों जब तीर्थंकर जेसी मानते हो तो तीर्थंकर तो स्नान विलेपन
पुष्प धूपादिक पदार्थ तेसें गहणा वस्त्रादिके त्यागीथे तो फिर तुम वे
ऐसे पदार्थ चढाकर त्यागीको भोगी क्यों बणाते हो द्रव्यपूजा करणे
वालेकों पाप होता है जेसें कोई पच महाव्रतधारी जैनसाधूकों कचे
जलसें स्नान करवावे पूर्वोक्त गहणा पुष्प चढावे तो उसकों धर्म केसें
होसके इस न्यायसें द्रव्य पूजा करणी वाजब नहीं (उ०) हे मित्र
एसी २ बातें बणाकर तो तेरे मतावलबियोंनें विचारे अणपढ सनातन
धर्मवालेकों सत्यधर्मसें भृष्टकरदिया समझदार तुमारे पजेमें नहीं
आते हम तुझे पूछते हैं पूजाके योग्य त्यागी होता है या भोगी तुझे
कहणा होगा के त्यागी अर्हत शब्दका अर्थ व्याकरणसें एसा होता है

(इन्द्रादिकृत् पूजार्हा इत्यर्हंत) यानें इन्द्रादिक देव [illegible] पूजाके योग्य सो अर्हंत कहलाते हैं ये नामही पूजा [illegible] सिद्धकरता है जो त्यागी हैं वो किसीके दिये [illegible] अगर जो त्यागी दुसरेका किया भोगी [illegible] विवेकी कभी पूजै नहीं तुम बतलावो तीर्थंकरके [illegible] आठ प्रातिहार्य होता है यानहीं(प्र०)हां होता है (उ०) [illegible] स्वरूप, अशोकवृक्षरत्नमई भगवानपर [illegible] है, फूल पचरंगे जल थलके पैदामये [illegible] सामनें वरसाते चलते हैं, देव [illegible] हैं, चमरोंकी जोडियें भगवान [illegible] सिंघासन जहां भगवान विराजते हैं [illegible] जाता है, भगवानके पिछाडी [illegible] झलकता है, तीन ऊपर [illegible] करते कोटानकोटि [illegible] समवसरण रचते हैं [illegible] रत्नका कागरा २ [illegible] जिसके वीच [illegible] सोना करके विराजते हैं [illegible] बैठाकर तीनोंतरफ [illegible] भगवानके [illegible] अचित्त विदिशायें [illegible] कर्म केसें साक्षात [illegible] करते इन प्रभु [illegible] अचित्तसें

एसा मालम देता है एसा समवसरण प्रकरण तथा तत्वार्थसूत्रकी टीका समवायागकी टीकामें लिखा है (प्र०) ये बात हम नहीं मानते हमारे साध कहते हैं भगवानकै अतिशयसें चार मुख दिखता है मगर तीन तरफ मूर्त्ति नहीं (उ०) तुमारे साध मनमें आवे ज्यों ही गप्प मारदेते हैं किस सूत्र ग्रथमें ये बात लिखी है और हमतो शास्त्रोंके प्रमाणसें लिखा है तुमारी मूकी दलील अणपढ लोक मानेगा बुद्धिमान पडित प्रमाणीक शास्त्रोंका लेख मजूर करेगा सनातन धर्म वालोंसें मदिर बाबत सवाल पूछते हो तब तो कहते हो ३२ सूत्रमेंका प्रमाण लिखणा और तुम जो अण घड गप्पहकाल देते हो अणदीठी अणसुणी उसका ठोडनठिकाणा, बतलावो किस सूत्रमें लिखा है तीर्थकरके पास तीन तरफ मूर्ति नहीं होती समवसरणमें फकत यूही चार मुख दिखता है, बतलाणा कहासें होय जो दलीलसो सब कल्पित गपोडे, हमने प्रमाण लिखा तत्वार्थ सूत्रकी टीकाका, सोसमत भद्राचार्य दोहजार वर्षके करीबकी बणाईहै सो सच है या तेरे साधोंकी अणघड गप्प, फेर सुण भगवान चलते हैं उसबखत सोनेके नव कमल चक्र फिरते जिमपर प्रभु पावधरकै चलते हैं सुगध हवा सुगध जलका छिडकाव अनेक पुण्यवत पुरुषोंके लायक अनेक पदार्थ सुखकारी प्रगट होते हैं अब तू बतला इतनें पदार्थोंका सहवास करते हैं आप नियमान तीर्थकर जब तों उनोका त्यागी पणा गया नहीं और कर्म लगा नहीं और जो जो देवतोंने इत्यादिककामोंकों करते तीर्थ करकी भक्ती करी उनोंनें सुकृत लाभसें पूर्वकृत खोटे कर्म खपाये मुक्तिका बीज बोया तो फेर मुक्त परमेश्वर हमारी की भई द्रव्य पूजासें तीर्थ-

करकों भोगी बणाणा कहते तुझें लज्या नहीं आती है तू द्रव्यपूजा करणेवालेकू पापी बतलाता है या एसी उत्सूत्र प्ररूपणा कर लोकोंकों सच धर्मसें भृष्टकर तुम पापी ठहरते हो जो गृहस्थ अजाण होता है वोभ्रमपाकर तुमा रे झूठवचनकों सच मान लेता है

और साधूपर कचा जल डालणेका दृष्टांत जो तेनें दिया सो अरिहंत सिद्ध परमेश्वरमें घटै नहीं क्योंके साधू सकर्म्मी छलेस्या आठो कर्मवाला होता है इस कर्मोंको क्षय करणे घर छोडते है इसवास्ते जीव सयुक्त पदार्थके स्पर्शसें उन २ जीवोंकी दया नहीं रहणेके सबबनये कर्म बंध जाते हैं लेकिन् तीर्थ करकें तो चारों घन घाती कर्म क्षय होगया कर्मोंका बीज जो मोहनीकर्म सो जलगया सो नयेकर्म बिलकुल बंधेही नहीं तीर्थकर केवलीके २५ क्रियामेंसें एक इर्यावहीयानें रस्ते चलणेकी क्रिया पहले समेंमें लगे दुसरे समेमें जाणै तीसरे समेमें क्षय करदेवै तीर्थकर केवलीकों कोई भी नये कर्म लगे नहीं एसा पन्नवणा भगवती आदी आगम कहता है और तेरे हिसाब तो तीर्थकरको नयें कर्म बधणा तू मानता है इसवास्ते तीर्थकर पूजाकें योग्य है त्यागीकें भोगी नहीं होसकते (प्र०) वो प्रातिहार्य सब अचित्त सोने रत्नके होते हैं इसवास्ते तीर्थ करकू पाप लगे नहीं (उ०) हे मित्रसूत्रोंसें सुणा है कचा सोना सचित्त है और अगारपर गरम किया सोना अचित्त होता है तो तुमारे साधजीकू सोनेका सिंघासणपर बैठाकर गहणा पहिरावो तो दोष लगे या नहीं क्योके तुम कहते हो अचित्त सोने रत्नकै सहवासमें कर्म नहीं बधते हैं तो फिर साधूकू कर्म कैसें लगेगा (प्र०) साधूका व्यवहार नहीं दुसरे पचमहाव्रत उच्चरते इन सबोंका त्याग करदिया है इसवास्ते (उ०) हेमित्र सोना रत्न अचित्तसें

भी कर्म बधता है और पापकारी चीज समझी तभी तो साधुओंनें इनोंकों त्यागा तो हे मित्र तुम बतलावो तीर्थंकर परमात्मानें पचमहाव्रत उचरा जब इन २ प्रातिहार्यादि पदार्थोंका त्याग कराथा या नहीं जो कियाथा तो सोनारत्नका सहवास कैसे करा इसवास्ते हे मित्र छद्मस्थ सकर्मी साधूकी और केवली भगवानकी विधी एक नहीं है इसवास्ते कर्मरहित भगवान द्रव्यभाव दोनों पूजाके योग्य है और करणेवालेके कर्मोकी निर्जरा होय वेदांत भी ब्रह्मज्ञान प्रगटे बाद कर्म लगणा नहीं मानता ब्रह्म और केवल एकही वस्तु है मुक्ति गये परमेश्वर आठों कर्मोंसें रहित है और उनोंकी मूर्त्ति है कहो भोगी केसें बणे (प्र०) तीर्थंकर परमात्माके देवता जो जो प्रातिहार्य वगेरे रचते हैं वो सब तीर्थंकरके इच्छा विगर होते हैं इसवास्ते उन २ पदार्थोंके सेवणेसें तीर्थंकरकों कर्म लगे नहीं (उ०) हे मित्र इच्छा विगर सेवते हैं एसा सिद्ध नहीं होता क्यो कै द्रव्य मनतो केवलीके होताइ है पूर्वजन्ममें अरिहत सिद्ध वगेरें वीस पदकी भक्ति वेयावचकी आराधनासें उपार्जन किया तीर्थंकर पदकानिकाचित पुन्य सो विगर भोगे मुक्ति केसें होय इसवास्ते प्रातिहार्य समवसरण चौतीस अतिसय पैंतीस गुणवाणीके ये सब योगकी साधनासें होते है इनोंका सहवास करते पूर्व पुन्यकों निर्जराते है तू कहता है इच्छा विगर सहवास करते हैं, एसा नहीं है, इच्छा नहीं होती तो, सिंघासनपर नहीं बैठतें, जमीनपर बैठजातें, वीसहजार पैडी चढ समवसरणमें केसें जातें, सोनेंके नव कमलोंपर पाव धरकें केसें चलतें, मगर निकाचित पुन्य भोगणाही होता है भगवान कहकर देवतोंको प्रातिहार्यादि

सामग्री नहीं कराते और न सेवते न खुस होते न द्वेष करते जेसे सम्यक्ती देवता प्रातिहार्यादि रचते बोध बीज उलसाते हैं इसीतरे भव्यजीव श्रावक सम्यक्ती शक्ती अनुसार द्रव्य भावभक्ती करते तीर्थंकर गोत्र अथवा स्वर्ग मुक्तिकी आनु पूर्वी करलेते हैं (प्र०) येतो अपूर्व्वही बात सुणाते हो सो जिनमूर्त्तीकी द्रव्यपूजा करता तीर्थंकर गोत्र बांधै और क्रमसें मुक्ती जावै इस बातमें क्या प्रमाण है (उ०) हे मित्र हम विना प्रमाण कोई भी बात नहीं लिखते है हम प्रमाण लिख देते हैं श्रीव्यवहार सूत्रमें एसा लिखा है (सिद्ध वेया वचेण महानिज्जरा महापज्जवसाण सेवत्ति (अर्थ) सिद्ध भगवानकी वैयावच्च करणेसें महानिर्जरा होती है म० यानें मोक्ष होता है फेर श्रीज्ञाता सूत्रमें तीर्थ कर गोत्र बांधणेके बीस कारण बतलाये हैं उसमें अरिहंत पद आराधना १ सिद्ध पद आराधना २ ज्ञान आराधना ३ इत्यादि लिखा है अब तू बतला मुक्त गये सिद्धभगवानकी वेया वच्च केसें होसकती है (प्र०) नाम लेना गुण यादकरणा (उ०) नाम लेणा गुण यादकरणा तो स्मरण भजन स्तवन कीर्त्ति गुणगाम स्वाध्याय कहलाता है जो वेयावच्चका अर्थ एसा मानता है तो बतला प्रश्न व्याकरणमें दसवेयावच्च बालककी वृद्धकी साधुकी कुलकी गणकी इत्यादिकोंकी सो नाम लेणा गुण यादकरणेकू ही वेयावच्च मानता है या आहार पाणी औषधी पगचंपी शय्या सथारा इत्यादिककों मानता है सो बतला बाहरे मताध कुछ तो सूत्रपर ख्याल रख वेयावच्च जैनियोंमें प्रसिद्ध नाम टहल बदगी काहै सो सिद्धभगवानकी टहल बदगी द्रव्यभाव पूजाहीसें होती है सिद्धपदकी भक्तीका स्वरूप श्रीसिद्धचक्र यन्त्राधि-

राजकी महिमा दशमें विद्या प्रवाद नाम पूर्व्वसें श्रीमुनि सुंदरसूरि आचार्यनें मयणासुंदरी तथा राजा श्रीपालकूं बतलाई सो बड़े श्रीपालचरित्रमे हैं सिद्धपदकीभक्ती मंदिर करवावे बिंब भरावे दंड ध्वजपूजा आभूषण गंध पुष्प धूपदीप माणक मोती रत्नादिक चढाता अनेक भेद वेयावच्च करे अष्ट प्रकारी सतर प्रकारी पूजा करके श्रीपालराजा सिद्धमई गुणमें आत्मा तल्लीन करे इत्यादिक लिखा है ज्ञाताजीमें बीस कारणोंमें सिद्धपद आराधना लिखा है इहा स्मरणका अर्थ करो तो ज्ञान आराधना कैसें होती है साधूपद आराधना किसतरसें होती है सो स्वरूपवत लावो अब क्या उत्सूत्र प्ररूपणा करोगे चैत्य जिनबिंब अरिहंतसिद्धरूप समझणा फेर श्रीकल्पसूत्रमें सिद्धार्थ राजा द्रव्यपूजा कराई सो पाठ एसा है (तएणसे सिद्धत्थेराया सइएय साहस्सिएय सयसाहस्सिएय लभे पडिछमाणेय पडिछावेमाणेय एवं विहरई (अर्थ) तब वो सिद्धार्थराजा जिसमें सो सोनइये लगे हजार सोनइये लगे और लाख सोनइये लगे एसा लभयाने यज्ञ करा और करावता भया-विचरे (प्र०) सिद्धार्थराजानें तो यज्ञ कीया है पूजा तो नहीं करी (उ०) हे मित्र सिद्धार्थराजा पार्श्वनाथके शतानियोंका श्रावक है बारे व्रतधारीएसा आचारांग सूत्रमें लिखा है तो तुम विचार तो करो पचेंद्री घोडे बकरे गऊ मारणेका वेदका लिखा हिंसक यज्ञ केसें करे और करावे इसवास्ते लभ याने यज्ञ व्याकरणवाला, यजु, यज्ञ याजन पुजाया, यानें यज्ञ कहो यजन कहो, पूजा कहो, इसवास्ते परम सम्यक्ती सिद्धार्थराजा, जिन मंदिरमें द्रव्यपूजा कराता, भया, राजा सिद्धार्थ वैमानिक वासी देवता भया, कहाई १२ मा देवलोक गया लिखा है, कहाई

चोथा,देवलोक गया लिखाहै हिंसक यज्ञ वेदका लिखा करणेवाला निश्चै नरक जावै, और श्रावक तो जिन यज्ञ (पूजा) हीं करै सिद्धार्थ राजा मुक्तगामी है एसा भगवान फुर माया है २४ तीर्थंकरोंकै माता पिता सब मुक्ति निश्चै जाते हैं एसा दिगावर श्वेतावर दोनों मांनते हैं, फेर रावणराजा सिद्धपदकी भक्ती करता वीण बजाता केलास पहाडपर तीर्थंकर गोत्र बाधा जिसका अधिकार श्रीजिन भद्रगणि क्षमा श्रमण-कृत व्यवहारसूत्रके, भाष्यमें लिखा है हेमाचार्यकृत तेसठशलाका पुरुषचरित्रमे है और अनेक ग्रथोंमें लिखा हैं अनेक जीव जिनप्रति-माकी भक्तीसें तिरगये श्रीअतरीक पार्श्वनाथकी मूर्ति खर दूषण राजा जब अपणा पुत्र विद्यासाधता लक्ष्मणकै हाथसें मरगया तब पाताल लका (यानें अमेरिका) सें युद्धकू चढा भगवतकी सेवा भूलगया भोजनकी वखत याद आई तब रसोइयेने गोबर वेलूकी प्रतिमा बनाय मत्राभिषेककर दर्शन कराय पूजा कराय भोजन कराया प्रति-माकूकूएमें जलशरणकरी केई अरसे बाद चद्रपुरनगरका राजा चद्रसेन गलत कोढी प्यास मिटाणे जल निकाल हाथ पैर धोय जल पीतेही कचनवरणी काया होगई राजा आश्चर्य पाय मूर्तिका अतिशय जाण मूर्तिकू लाया सो पृथ्वीसें अधर ठहरी भई मूर्त्ति दक्षण देशमें विराज-मान है ये बात तीर्थकल्पमें जिनप्रभसूरिने लिखी है दवदतीनें पूर्व-जन्ममें जिनमूर्त्तिको भावसें तिलक चढाया था सो दवदतीकै भवमें सूर्य जेसा तिलक निलाडपर पाया राजन्यकुल सम्यक्त सुखकी प्राप्ती शीलपाल मुक्ति गई राजा नलकै चरित्र तथा पाडवचरित्र भारतमें लिखा है तुमारें मत निकलणेके पहलेके हजारों वर्षकै शास्त्रोंमें लिखा

है तुमारे मतावलबी चोपई सिझाया वाचते है बतलावो विना उन ग्रथोंके ये वचन तुम कहासें लाये जिनमूर्ति बाबत तुमारा द्वेष और जाल सिद्ध होजाता है बाकी बात उन ग्रथोंकी सची तो उनमें उन २ जीवोंनें मदिर बणवाया जिनमूर्त्तिकी द्रव्यभावसें पूजाकरी पुन्यका फल पाया ये बात झूठी कोन कहसकता है तुमारे जेसें कृतघ्नी टाल, इसवास्ते सिद्धपदकी विनय वेयावच्च मदिरमूर्त्तिसें ही होती है नाम लैणा एकात नयवाद है जेसें रोटी २ कहणेसें भूख नहीं मिटै मिश्री २ कहते मू मीठा नहीं होता इसतरे खाली सिद्ध २ कहते मुक्ति नहीं होती और न सिद्धोंकी भक्ती साधूजी २ पुकारणेसे क्या लाभ होता है दानमान करणेसें फल मिलता है और वस्तु देखनेंसें जीवमें भावपरिणम जाता है जेसें किसी आदमीके सामनें, नींबू देखाणेसें मूमें पाणी छूटणे लगजाता है इसतरेही जिनमूर्त्तिका स्वरूप समझो देवता जो सम्यक्ती है उनोंको दशाश्रुतस्कध सूत्रमें श्रुतसामायकवत कहा है पचकल्याणक तीर्थंकरका उच्छव करणेकू नदीश्वरद्वीप जाकर जिन मूर्त्तिकी जल चदनादिकसें पूजाकरै जिन गुणगावै जिनमदिरमें नाटक करै भाव स्तवनामें नमोत्थुण पढै इहा- मनुष्यलोकमें प्रातिहार्य समवसरण करै तीर्थंकरके सामनें नाटक गुण ज्ञान करै धर्मसें डिगते भये किसी जीवकू धर्ममें थिर करै धर्मी पुरुषोंमें जैन सासनमें आपदा होय तो मिटावै जिनमूर्त्ति जैनतीर्थकी रक्षा करै इत्यादिक जो सम्यक्तकी धर्म करणी उसका नाम श्रुतसामायक है और तुम कहतेहोये सावद्यकरणी है भला जो प्रातिहार्य समवसरण रचना जिनमूर्त्तिकी द्रव्य पूजा वगेरे सावद्य होती तो तीर्थंकर उन देवतोंको मना क्यों नहीं

करदिया कै तुम ये सावद्य काम मत करो सो तो किसी भी सूत्रमें भगवाननें जिनमूर्त्तिकी द्रव्यपूजा देवतोंकों मना किया नहीं और भगवान मनाकर देते तो वो देवता कभी एसी भक्ति नहीं करते कारण भक्ति करणे वाले देवता सम्यक्ती है तुम कहते हो देवतोका ये आचार है ये बात बिलकुल झूठ है नंदीश्वर द्वीप जाके आठाई महो छव करणे वाले देवतोंका अधिकार जीवा भिगम सूत्रमे है उहा एसा लिखा है वहवे वेमाणिया देवा इत्यादि लिखा है जो अगर सब देवतोंका ये आचार होता तो बहुतसे देवता एसा पाठ नहीं होता सव्वे वेमाणिया देवा एसा पाठ होता इसवास्ते सम्यक्ती देवतोका ये आचार है मिथ्यात्वियोंका नहीं (प्र०) तुमने लिखा समवसरणमें देवता पुष्प वरसाते हैं सो तो सच है मगर वे पुष्प अचित्त होते हैं क्योंकें सचित्त फूलोंपर साधू पगधरके कैसें चलै (उ०) हे मित्र तुम मूर्से अचित्त कह दो तुमारे इकतियार है मगर समवायाग सूत्रमें तो सचित्त लिखा है (जलज थलज) जलसें पैदाभये जलज, थलसें पैदा भये थलज इसमें शत पत्र सहस्र पत्र कमलादिक जलके पैदा भये, सेत्रती जाई जूई मोतिया चपा गुलाब वगेरे थलसैं पैदाभये, पचरगे सरस खुसबोदार वींटनीचे मुऊपर इसतरे समश्रेणी गोडे प्रमाण समवसरणमें विछाते हैं, प्राकृत व्याकरण सस्कृत व्याकरणसें एसा अर्थ होता है (जलाज्जात जलज थलाज्जात थलज व्याकरण पढेसें पूछ निश्चय करलो तुम किस सूत्रके आधारसें उन फूलोंकों अचित्त कहते होझूठ बोलणेका तुमकों कुछ भी खयाल नहीं है, वैक्रिय वस्तु सब अचित्त होती है एसा तुमलोक कहते हो तो बतलावो वैक्रिय कैसें

होता है अगर जाणते होते तो एसी बात नहीं बणाते सुणो वैक्रिय करणेवाला देवता सोलेजातके पृथ्वीकायमई रत्नोंका सार पुद्गल लेकर अपणा जीवित वैक्रिय शरीरका अंग उसमें मिलाता है तब हर पदार्थ वैक्रिय रचना होता है अब देख रत्न एकेंद्री चेतन पृथ्वी काय देवता पचेंद्री चेतन इन दोनों सचेतन पदार्थोंसे बणा वैक्रिय पदार्थ अचित्त कैसें मानता है फेर तुझें पूछते हैं देवता मृत्युलोकमें आते हैं तब मूल भव धारणीक शरीरसें आते हैं या वैक्रिय शरीरसें (प्र०) वैक्रिय शरीरसें (उ०) वो वैक्रिय सरीरी देवता धर्म सुणते हैं तीर्थंकर साधुओंकों वंदना करते हैं एक हाथसें एकसो आठकुमर इतनीही कुमारी निकालकर बत्तीस बद्धका नाटक करते हैं इत्यादि रचना करते हैं ये वैक्रिय शरीर अचित्तका काम है या सचित्तका एसी कुदरत अजीव पदार्थकी है, बाहरे अकलमद मिथ्यात्वी अल्पज्ञोंकै बहकाणेसें सत्य भी झूठ दरस रहा है तू ही तो कहता है वैक्रिय पुष्प अचित्त और तू ही सचित्त कहणे लगा - वैक्रिय शरीरकू, जो देवताके वैक्रिय किया भया पदार्थ अचित्त होता तो साधू देवताका दिया भया आहार पाणी क्यो नहीं लेता है फेर साधूकै पडिक्कमणा सूत्रमें लिखा है (देवाण आसायणाए देवीण आसायणाए) साधू देवता देवीकी आसातना नहीं करै अब विचारो वैक्रिय शरीरसें आये भये देवताकी आसातनासें पाप लगे या उन देवतोंकी मूर्तिकी बे अदबी करणेसें आसातना लगे कुछ साधू स्वर्गमें जाकर मूलशरीरकी तो आसातना करे ही नहीं इसवास्ते वैक्रिय फूल वरसाते हैं वो जल थलके पैदा भये सचित्त होते हैं अगर जो देवता अचित्त पदार्थकू

फक्त लेकर कोइ पदार्थ बणावे अपणा पुदगल नहीं मिलावै तो वो पदार्थ अचित्तकू अचित्तही कहा जावै जेमे ईशानेंद्रादिक इद्रोंने सैत्रुजयके मदिरोंका उद्धार कराया ये अचित्त पुद्गलोंसें अपणा पुदगल विना मिलाये बणाया ये अधिकार विक्रमादित्य राजाका पोता शिला, दित्यकू सुणाणे श्रीधनेश्वर सूरिःनें वि। स। १०४ में लाख श्लोकका बणाया भया अगला सेत्रुजय महात्मग्रथकू दशहजार श्लोकका बणाया उसमें लिखा है इसही आचार्यनें सारगाणी ढढा गोत्रकू प्रतिबोधा पाटण नगरके राजा गोविंदचदको वि। स। १०७ मे सो अभी प्रसिद्ध है ये आचार्य जैनियोंके सब सूत्र लिखणेके ३०० वर्ष पहली भये है उस वखतनो पूर्वकी विद्याथी, अब वैक्रिय क्रिया सचित्त होणेका पुरा वा दूसरा, चक्रवर्त्त १२ नारायण ९ प्रति नरायण ९ इनके ६४ हाजर ३२ हजार १६ हजार राणिया होती है तब वो अपणे शरीरसें वैक्रियकर औदारिक पुदगलोंका अपणे जेसाही शरीर रचकर सब राणियोंके महिलोंमें जाते है उस सरीरसें विषय करणेसें राणियोंके लडका पैदा होता है एसा २२ टोले और भीषमपथी सब मानते हैं अब विचारो वैक्रिय किया भया सचित्त यानें जीवयुक्त नही होता तो वैक्रिय शरीरसें शतान केसें पैदा होता, हे मित्र अब यू कह दोकी समवसरणमे फूल वैक्रियसें बरसाते हैं इत्यादिक जो जो हम मानै सो अचित्त बाकी सब सचित्तहै, यू कहे विगर तुमारा मत केसें चढेगा, परभवका डर तो उत्सून बोलते तुम रखतेहै नही हर सूरत कोई भी दाय उपायसे जिन प्रतिमाकी द्रव्य भावभक्ती छूडाकर अपणा पथ बढाणा प्रत्यक्ष पणे सूत्रोंसें साबित है की समवसरणमें देवता सचित्त

होता है अगर जाणते होते तो एसी बात नहीं बणाते सुणो वैक्रिय करणेवाला देवता सोलेजातकै पृथ्वीकायमई रत्नोंका सार पुद्गल लेकर अपणा जीवित वैक्रिय शरीरका अग उसमें मिलाता है तब हर पदार्थ वैक्रिय रचना होता है अब देख रत्न एकेंद्री चेतन पृथ्वी काय देवता पचेंद्री चेतन इन दोनों सचेतन पदार्थसे बणा वैक्रिय पदार्थ अचित्त केसें मानता है फेर तुझें पूछते हैं देवता मृत्युलोकमें आते हैं तब मूल भव धारणीक शरीरसें आते हैं या वैक्रिय शरीरसे (प्र०) वैक्रिय शरीरसे (उ०) वो वैक्रिय सरीरी देवता धर्म सुणते हैं तीर्थंकर साधुओंको वदना करते हैं एक हाथसें एकसो आठकुमर इतनीही कुमारी निकालकर बत्तीस बद्धका नाटक करते हैं इत्यादि रचना करते हैं ये वैक्रिय शरीर अचित्तका काम है या सचित्तका एसी कुदरत अजीव पदार्थकी है, बाहरे अकलमद मिथ्यात्वी अल्पज्ञोंकै बहकाणेसें सत्य भी झूठ दरस रहा है तू ही तो कहता है वैक्रिय पुष्प अचित्त और तू ही सचित्त कहणे लगा वैक्रिय शरीरकू, जो देवताके वैक्रिय किया भया पदार्थ अचित्त होता तो साधू देवताका दिया भया आहार पाणी क्यो नहीं लेता है फेर साधूकै पडिक्कमणा सूत्रमें लिखा है (देवाण आसायणाए देवीण आसायणाए) साधू देवता देवीकी आसातना नहीं करै अब विचारो वैक्रिय शरीरसें आये भये देवताकी आसातनासें पाप लगे या उन देवतोंकी मूर्तिकी वे अदबी करणेमें आसातना लगे कुछ साधू स्वर्गमें जाकर मूलशरीरकी तो आसातना करे ही नहीं इसवास्ते वैक्रिय फूल वरसाते हैं वो जल थलकै पैदा भये सचित्त होते हैं अगर जो देवता अचित्त पदार्थकू

फकत लेकर कोइ पदार्थ बणावे अपणा पुदगल नहीं मिलावे तो वो पदार्थ अचित्तकू अचित्तही कहा जावे जेमे ईशानेंद्रादिक इद्रोने सेत्रुजयके मदिरोंका उद्धार कराया ये अचित्त पुद्गलोंसें अपणा पुदगल विना मिलाये वणाया ये अधिकार विक्रमादित्य राजाका पोता शिला, दित्यकू सुणाणे श्रीधनेश्वर सूरि.ने वि।स।१०४ में लाख श्लोकका वणाया भया अगला सेत्रुजय महात्मग्रथकू दशहजार श्लोकका वणाया उसमें लिखा है इसही आचार्यने सारगाणी ढढा गोनकू प्रतिबोधा पाटण नगरके राजा गोविंदचदको वि।स। १०७ मे सो अभी प्रसिद्ध है ये आचार्य जैनियोंके सव सूत्र लिखणेके ३०० वर्ष पहली भये है उस वखतनो पूर्वकी विद्याथी, अव वैक्रिय क्रिया सचित्त होणेका पूरा वा दूसरा, चक्रवर्त्त १२ नारायण ९ प्रति नरायण ९ इनके ६४ हाजर ३२ हजार १६ हजार राणिया होती है तव वो अपणे शरीरसें वैक्रियकर औदारिक पुदगलोका अपणे जेसाही शरीर रचकर म । राणियोंके महिलोंमें जाते है उस सरीरसें विषय करणेसें राणियोके लडका पैदा होता है एसा २२ टोले और भीषमपथी सव मानते है अव विचारो वैक्रिय क्रिया भया सचित्त याने जीवयुक्त नही होता तो वैक्रिय शरीरसें शतान केसें पैदा होता, हे मित्र अव यू कह दोकी समवसरणमे फूल वैक्रियसें वरसाते हैं इत्यादिक जो जो हम मानें सो अचित्त वाकी सव सचित्तहै, यू कहै विगर तुमारा मत केसें चढेगा, परभवका डर तो उत्सूत्र वोलते तुम रखतेई नहीं हर सूरत कोई भी दाय उपायसें जिन प्रतिमाकी द्रव्य भावभक्ती छूडाकर अपणा पथ चढाणा प्रत्यक्ष [illegible] र्गोंसें सावित है की समवसरणमें देवता [illegible]

फल परसाते हैं अजाण गृहस्थोकों पहकाणेकू अचित्त कहते हो तुमनें तो वो मिसला सचकर रखा है (फूहवडो किरियाणो सो कोईके वटजाणै) फकत झूटके वटणा है, मगर झूठका फल परभवमें बुरा है, तुम पूछते हो, साधू केमें आवै जावै,इसवास्ते हम अचित्त कहते हैं, हे मित्र तेरे मत चलाणे वाले परंपरागत सूत्र तो पढे थे नहीं, ओर लेमगुओंकों इस रहस्यकी क्या खबर, लेहम समझाते हैं, अब ख्याल रखणा, द्वादशागीके अतर्गत, जो आचार्योनें शास्त्र बनाया, उसमें एकशास्त्र तो यू कहता है देवता तो जमीनसें अधर रहते हैं, ओर मनुष्योंकी पग तलसे पुष्पोंकों तकलीफ नहीं पोहचती, जेसे के तैसे विछे भये रहते हैं कारण भगवानका अतिशय है, जो तुम कहोगे ये बात कैसें संभवे तो विचार करो सिंहहिरण, विलीचूआ, इत्यादि जिनावरोंके जातीस्वभाव वैर है, लेकिन् समवसरणमें पास २ बैठे धर्म सुणते हैं ये जैसे भगवानके अतिशयसें विरोध रहित तकलीफ नहीं देते, तेमें पुष्पोंकों तकलीफ नहीं पहुचती है (दुसरा जबाब) स्थूलभद्रजीका चरित्र तो तुम मानते हो उसमें लिखा है, स्थूलभद्रजी दीक्षा लेकर कोस्या वेश्याके घर चोमासाकर अपना ब्रह्मचर्य, अखड पाला, तब कोस्या श्रावक धर्म लिया, चोथे व्रतकी प्रतिज्ञा करीके, राजा नदके भेजे पुरपटाल, अन्य पुरुषमें कुशीलका त्याग, राजानें अपणे रथकारकों भेजा, उससें उदासीनपणे, ससारसेवणेलगी, रथकार उसकों राजी करणेकू, अपणी चतुराई दिखाणे, मकानपर बैठे राजाके बगीचेमेंसें बाणोंकी श्रेणी बाध आवकी लूंब तोडके मूके सामने धरी तब कोस्या उसका गर्व उतारणे सरसूका ढिगारकर उस

पर सूई खडीकर उसपर गुलाबका फूल धरनाचकिया मगर सुई फूल वगैरे कोई भी जराभी अस्तव्यस्त नहीं भया ये अचरज देख, रथकार है रतमें रहा तब कोस्या बोली, हे रथकार नहीं तो आमकी लूब तोडणा दुस वार है, न सुईपर नाचना, लेकिन् कामवो, दुसवार है जोकी महामुनि थूलभद्रनें किया, तब रथकार पूछने लगा, कोस्याने जब सब वृत्तांत कहा, तब रथकार वैराग्यपाय, चारित्र लिया, अब तुम विचारो, एक वैस्यानें एसा नाच किया, सो सरसूपर सूई, सूईपर गुलाबका फूल, फूलपर एक स्त्रीका बोझा, किसीकू इजा न पहुची, तो विचारो, अचिंत शक्तीकै धरणेवाले देवता, जल थलकै फूल लेकर, पुष्पोंका बादल रचकर, बडी चातुरीसें, समवसरणमें, बिछावै, सो मनुष्योंकै पावसें उनोंकों तकलीप पोहचै, या अस्तव्यस्त होय यानें कभी न होय २ दुसरे समवसरण प्रकरणमें एसा लिखा है देवता मध्य गढकी दिवालके पास चौतरफ एसी फलोंकी पक्ती रचावें सो आणे जाणेवाले, साधुओंके पावकै नीचै, पुष्प आवे ही नही, जेसे बगीचोंमे, दोबचौतरफ समश्रेणी लगाये जाती है, सडक चौतरफ, आणे जाणे वालोंके लिये, खुली रहती है, बीच २ खुली जमीनमें बारेपरषदा बैठती है, कोटान कोट जीव समाजाते हैं मगर भीड नहीं होती ये प्रभूका अतिशय है (प्र०) आपनें दो ग्रथकी दो बात लिखी सो दोनो सच केसें मानीजावै इसवास्ते ही २२ टोले तथा भीषमनें इन ग्रथोंकों मानना छोड दिया (उ०) हे मित्र समझोजदतो दोनो ग्रंथोंका परमार्थ एकही है दोनो ग्रथोंमें लिखा है पुष्पोको इजा नहीं पहुचती मगर तुमसें ये पूछते हैं ग्रथोंकी बाततो मिलती नहीं जद

तेरे साधोंनें ग्रथोंकों मानना छोडा मगर ३२ सूत्रोंमें आपसमें फरक है तो फेर ३२ कों तेरे साधू क्यों मानते हैं (प्र०) ३२ सूत्रमें फरक नहीं, होय तो बतावो (उ०) ले तेरे ३२ सूत्रोंमें ९१ में बोलोका फरक हम लिख दिखाते हैं अगर निरापेक्षी है तो ३२ सूत्रोकी तरै सब सूत्र तुझें मानना चहियै समवायाग सूत्रमें मल्लिनाथजीका पांच हजार सातसे मनपर्यव ज्ञानी कहा ज्ञातासूत्रमें आठसे मनपर्यव ज्ञानी कहा इन दोनोंकी बात केसें मिलै १ समवायागमें मल्लिनाथजीकै पाच हजार नवसे अवधि ज्ञानी कहा और ज्ञातामें दो हजार अवधि ज्ञानी कहा २ ज्ञाताके पाचमें अध्ययनमें कृश्नके ३२ हजार राणिया कही और अतगड दशामें १६ हजार राणिया कही ३ राय प्रसेणीमें केशीकुमारके चार ज्ञान कहा और उत्तराध्ययन ३२ में अध्ययनमें तीन ज्ञान कहा ४ भगवतीमें विराधित सजमी जघन्यसें भुवन पतीमें जाय उत्कृष्टे सौधर्मदेवलोक जाय और ज्ञातामें सोलमें अध्ययनमें विराधित सजमी सुकमालिका ईशान देवलोक गई ५ उवाईमें तापस-मरकै उत्कृष्ट जोतषी देवता होय और भगवतीमें तामली तापसमरकै ईशान इन्द्रमया ६ उवाईमें कहा है चौदै पूर्वधारी उत्कृष्ट लातक देवलोकतक जाय भगवतीमें चौदै पूर्व्वधर कार्तिकसेठ सौधर्मेंद्रही भया है ७ भगवतीमें लिखा है श्रावक होय सो त्रिविध २ कर्मादानका पचखाण करै और उपासक दशा सूत्रमें आनद श्रावकने पाचसे हलोंकी खेती करणी बाकी रखी है ८ और इसही उपासक दसासूत्रमें सद्दालपुत्रकुमार श्रावकनें नीवाडा पकाणा मोकला रखा है ९ वेदनी कर्मकी जघन्यस्थिती पनवणा सूत्रमें १२ मुहूर्त्तकी कही और उत्तरा-

ध्ययनमें वेदनी कर्मकी स्थिती अंत मुहुर्त्तकी कही १० श्रीभगवती दुसरे शतक पहिले उद्देसे खधाके अधिकारमें चारे प्रकारका बालमरण करता जीव अनता नारकी तिर्यंच मनुष्य और देवतोंका भव करै आनादि अनत चारों गतिमें रुले और ठाणाग सूत्रकै दुसरे ठाणे चोथे उद्देसे वेहासण मरण १ तथा गृद्ध पृष्ट मरण २ इन दोय मरणोंकी कारण योगसें आज्ञा करी है दस मरण निषेध है ११ भगवतीमें महाबल चौदे पूर्व्वधारी ब्रह्मदेव लोक गया और उवाईमें लिखा है चौदे पूर्व्वधर लातक देवलोकसें नीचा जावे नहीं १२ उत्तराध्ययन छत्तीसमें अध्ययनमें कादेके पत्ते प्याज लसण सन अनत काय है और पन्नवणामें लसणकू प्रत्येक कहा है १३ पन्नवणामें सत्य १ असत्य २ मिश्र ३ और व्यवहार ४ ए चारोंही भाषा बोलता साधू आराधक होय और दशमीकालिकमें लिखा है साधूकू दोयही भाषा बोलणी १४ दशमीकालिक आठमें अध्ययनमें लिखा है हाथ पग कान नाक कटी भई सो बरसकी होय एसी स्त्रीकों भी साधू छीवै नहीं और ठाणागकै पाचमें ठाणे उद्देसे दूसरे पाच कारणसें साधू साधवीकू पकडे तो आज्ञाका विराधक नहीं १५ उत्तराध्ययन दुसरे अध्ययनमें लिखा है साधूकै रोग होय तो दवा नहीं करै और भगतीमें बीजोरापाक दवा भगवान आप खाई १६ दशमीकालिकमें साधूकू दिनमें एक बेर भोजन करणा लिखा और कल्पसूत्रमें विकृष्ट तप करणेवाले साधूकू सर्व वखत गोचरी जाणा लिखा १७ कल्पसूत्रमें लिखा है मेघकी थोडी २ छींटे आती होय तो साधू भिक्षालेणे जावै और दशमीकालिक पाचमें अध्ययनमें लिखा है बरसात बरसे तो

साधू गोचरी नहीं जावै १८ भगवतीके चौदमें शतक सातमें । उद्देसेमें लिखा है भात पाणीका पचखाण करकै भी साधू अहार करलेवै और बहोत सूत्रोंमे प्रगट लिखा है पच्चखाण किये बाद फेर भागे तो महादोष लगै १९ पन्नवणाके अठारमें कायस्थिती पदमें स्त्रीवेदनी कायस्थिती पदके पाच आदेश कह्या तब शका होती है सर्वज्ञके ज्ञानमें पाच बात क्या २० ठाणागके पाचमें ठाणे दुसरे उद्देसेमें लिखा है महावीरके साधू राजाके घरका आहार नहीं लेवै और अतगड दशामें छठे वर्ग पाचमें अध्ययनमें गौतमस्वामी विजयराजाके घर श्रीदेवीके हाथसें आहार लिया २१ समवायागमें लिखा है जहा भगवान विचरै तहा ईत उपद्रव चारू दिसामें पचीस २ जोजनमें नहीं होवै और विपाक सूत्रमें जहा वीर प्रभु समवसरे थे उहा अभगसेन प्रमुख मारा गया २२ एसाही विपाकके दुसरे अध्ययनमें लिखा है २३ और भगवतीमें गोसालेनें सुनक्षत्र सर्वानुभूतिकू भगवानकै सामनें जला दिया २४ समवायागसूत्रमें उपासक दशासूत्रकी नूद है जिसमें दशश्रावकोका दशचैत्य तथा माता पिताओंका नाम कहेंगें और उपासक दशामें दशचैत्य तथा माता पिताओंका नाम नहीं है २५ भगवती शतक आठमा उद्देसे छठेमें लिखा है साधूकू अफासू असूझता आहार वहिरावे तो गृहस्थ अल्प पाप बहोत निर्जरा करै और ठाणाग सूत्रकै तीसरे ठाणे तीसरे उद्देसे साधूकू असूझता आहार वहिरावै तो अल्प आयुका बध बाधै २६ ठाणागकै पाचमें ठाणे दुसरे उद्देसे पाच महानदी ऊतरणेकी साधूकू मनाई है इसी सूत्रकै अगलै पाठमें नदी उतरणेकी आज्ञा है २७ ईसही ठाणांग सूत्रमें लिखा है साधूकू चोमा

सेमें दुसरे गाम जाणा नहीं कल्पै और आगे लिखा है पाच कारणें चोमासेमें जाणा कल्पै २८ दसमीकालिक तथा आचाराग सूत्रमे लिखा है साधू त्रिविध २ प्राणातिपातका पच्चखाण करै और समवायाग तथा दसा श्रुतस्कधमें लिखा है साधू नदी ऊतरै, तो विचारो त्रिविध-२ का पच्चखाण कियाथा सो रह्या या गया २९ कल्पसूत्रमें लिखा है साधूकू नवविगय वेर २ लेणा नहीं कल्पै और सुयगडाग दुसरे श्रुतस्कध दूसरे अध्ययनमे साधुओंके वर्णनमें लिखा है चार महाविगय सर्वथा न कल्पै ३० तेसें कल्पसूत्र तथा आचारागमें लूती विपादिक रोगादिकके वाहिर इलाजमें मछीका तथा अन्यमास लेणा कहा भगवती और आठमें शतक नवमे उद्देसेमें लिखा है मासका आहार करणेसें नरककी आयु बाधै ३१ दशमीकालिक तीसरे अध्ययनमें लिखा है साधूकू सचित्त लूण लैणा नहीं कल्पै और आचाराग दुसरा श्रुतस्कध पहलै अध्ययन दशमें उद्देसेमें लिखा है साधू लूण वहर लिया होय तो आप खावै या सभोगी साधुओंको वाट देवै ३२ भगवती अठारमें शतकमें नीबकू तीखा कह्या और उत्तराध्ययनके चौतीसमें अध्ययनमें नींबकू कडवा कहा ३३ आचारागके इर्या अध्ययनमें दुसरे श्रुतस्कधमें लिखा है साधू जाणता भया भी केई २ बातें कहदेवै की में नहीं जाणता और दशमीकालिकमें लिखा है की साधू त्रिविध २ कर झूठ नहीं बोलै ३४ समवायागमें लिखा है तेवीस तीर्थंकरोंकू सूर्य उदय होतेही केवल ज्ञान उपजा और दशाश्रुत स्कधमें लिखा है नेम प्रभूकू पिछले पहर केवल ज्ञान भया ३५ तेसेंइ समवायागमें तथा ज्ञातामें लिखा है मल्लिप्रभुकू जिसदिन दीक्षा लिया उसीदिन पिछलै पहर

केवल ज्ञान उपजा ३६ उत्तराध्ययनके बारमें अध्ययनमें लिखा है जक्ष ब्राह्मनोंकों खून वमता मरणगतीके सन्मुख किया हरकेशी मुनि की वेयावच्च करता भया और उवाई सूत्रमें दस प्रकारकी वैयावच्च लिखी उसमें मनुष्योंकों मारणेकी वेयावच्च कोनसी है ३७ ज्ञातामें लिखा है श्रीमल्लिनाथस्वामी तीनसे स्त्रीयें तीनसे पुरुष आठ ज्ञातकुमार एमें छस्से आठके संग दीक्षाली और ठाणांगके सातमे ठाणे अराजनी सातमें आप एमे सातोंनेंही दीक्षाली लिखा है ३८ ठाणागमें लिखा है छउ मित्रोंनें भगवानके सगही दीक्षाली और ज्ञातामें लिखा है भगवानकू केवल ज्ञान भये पीछे छउ मित्रोंनें दीक्षाली ३९ उत्तराध्ययनमें लिखा है साधू पशुपडग जहा रहता होय उस जगे नहीं रहै और ठाणागमें पाचमें ठाणे में लिखा है साधू साधवीके सग पाच ठिकाणे सामलमी रहै ४० सुयगडागके दुसरे श्रुतस्कध पाचमें अध्ययनमें लिखा है की दानकी जो तारीफ करै सो वृद्धि भावकू प्राप्त होता है और देतें भयेकू मना नहीं करे कारण मागणेवालेकी आजिविका भग होय और भगवतीके आठमें शतक छठे उदेसेंमें लिखा है श्रावक है सो असजतीकों दान देता एकात पाप बांधे निर्जरा नहीं ४१ समवायागमें गजदता ऊपरसें हजार जो जन पिहुला लिखा है उसमें हरी तथा हरीस्सहकूट कैसें समाया ४२ जबूद्वीप पन्नत्तीमें लिखा है नदनवन पाचसैंजोजनका है उसमें हजार जोजन नीचेसें चौडानलकूट कैसें समाया ४३ जबूद्वीप पन्नत्तीमें ऋषभ कूट नीचै मूलमें आठ जोजन चौडा है इसही सूत्रकै आगे पाठातरमें बारे जोजन मूलमें ऋषभ कूटको चौडा लिखा है ४४ जबूद्वीप पन्नत्तीमें आधे भरतकी जीवा नव हजार

सातसै अडतालीस जोजन और एक जोजनका उगणीस भाग करै एसे चौरभागऊपर है और समवायागमें ये जीवापूरीनोहजार जो जन लिखी है ४५ समवायागमें विजयादिक चार अनुत्तर विमानकी जघन्यस्थिती चत्तीस सागरोपमकी और उत्कृष्टी तेतीस सागरोपमकी लिखी है और पन्नवणामें जघन्यस्थिती इकतीस सागरोपमकी उत्कृष्टी तेतीस सागरोपमकी लिखी है ४६ समवायागमें ऋषभदेवजीकै महावीरस्वामीकै एक कोडा कोड सागरोपमका चतर लिखा और दशाश्रुतस्कधमें ऋषभदेव निर्वाण पाया पीछै बयासी पखवाडे वीतने बाद बयालीस हजार वर्षकम एक कोडा कोड सागरोपम उसमें बयासी पक्ष कम बीतनेपर महावीरस्वामी निर्वाण पाये ४७ सुयगडाग सूत्रमें लिखा है आधाकर्मी आहार करता साधू कर्म बाधे भी और नहीं भी बाधै ये एक गाथामें दोय बात केसें ४८ फेर इसही सूत्रमे लिखा है आधाकर्मी आहार करता साधू कर्मोसें नहीं लेपीजे और भगवती शतक पहले नवमें उद्देसेमें लिखा है आधाकर्मी आहार करता सात कर्म बाधै ४९ समवायागमें लिखा है तेतीस हजार जोजन कुछ कम दूर आखोंसें सूर्यका स्पर्श होय और जम्बूद्वीप पन्नत्तीमें चत्तीस हजार जोजन कुछ कम दूरसें सूर्यका स्पर्श आखोंसें होता है एसा लिखा है ५० समवायागमें मेरू पहाडकी मूल तलहटी दस हजार जोजन चोडी है एसा लिखा है और जबूद्वीप पन्नत्तीमें दस हजार ऊपर नव्वे जोजन कुछ कम लिखी है ५१ भगवतीके आठमे शतक नवमें उद्देसें जीवकू पुद्गल कहियै तैसें पुद्गलीक भी कहियै ये दोय लेख केसै मिलै ५२ समवायागमें मेरू पहाडकै सोले नाम कहे हैं उसमें आठमा प्रिय

दर्शन और चौदमा उत्तर एसा नाम लिखा है और जबूद्वीप पन्नत्तीमे सोले नाम लिखा है उसमें आठमा सिलोचय और चौदमा उत्तम नाम लिखा है ५३ पन्नवणा उगणीसमें पदमें छद्मस्थकू अणाहारी उत्कृष्ट दो समय लिखा है और भगवतीमें उत्कृष्ट अणाहारीका तीन समय लिखा है ५४ एसेंइजीवाभिगममें दो समय और भगवतीमें तीन समय लिखा है ५५ समयागमें महावीरस्वामीकू बयालीस वर्ष कुछ कम साधुपणा लिखा है और कल्पसूत्रमें पूरा बयालीस वर्ष साधुपणा लिखा है ५६ जीवाभिगममे रुचक द्वीपका असक्षाता प्रमाण लिखा है और जीवाभिगमके हिसाब ठाण दुगुणा गिणता एक निखर्व्व चार अब्ज पचासी किरोड छिहत्तर लाखकी गिणती आती है और कभी तिगुणाही गिण लेवे तो रुचक द्वीपका प्रमाण (११००८२२३४७७७ ६०००००) और भगवतीके छठा शतक सातमें उद्देसेमें तेसेंइ अनुयोगद्वारमें एकमो चोणमें अकतक तो सख्याताकी गिणती लिखी है और पालाका मान सक्षाता तो दूरही रहा तब तो रुचक द्वीप सक्षाता जो जन ठहरा तो फेर जीवाभिगममें, असक्षाता केसें लिखा ५७ समवायाग अडतीसमें समवायमें मेरूका दुसरा काड अडतीस हजार जोजनका उचा कहा है और सोलमें समवायमें मेरूका पहिला काड इकसठ हजार जोजनका उचा लिखा है और जबूद्वीप पन्नत्तीमें नीचेका काड एक हजार जोजनका चौडा लिखा है और मध्य काड तेसठ हजार जोजनका चौडा लिखा है एसें सब मेरू पहाड पूर्व पश्चिम एक लाख जोजनका चौडा लिखा है अब विचार करो एक लाख जोजनका चौडा जबूद्वीपमें लाख जोजन मील मुख्य मेरूका

ऊपर भाग लिखा है तो फेर हजारो नदियां हजारो पहाड और भरत एरवतादि क्षेत्र केसें समाया ५८ जो कहोगे की वाहुल्यपणा है सो ही उचापणा है तो वतलावो पूर्व पश्चिम लिखणेका क्या मतलव है और अगर वाहुल्यपणेकू उचापणा मानोगे तो भी समवायागमे निनाणू हजार जोजनकू दोय भागसें भाग किया है उसमें पहिला भाग इकसठ हजार जोजन और दुसरा भाग अडतीस हजार जो जनका लिखा है और जबूद्वीप पन्नत्तीमें जडम्मेतकू तीन भागसे भाग किया है उसमें पहिला भाग एक हजार जोजनका और दुसरा तेसठ हजार जोजनका और तीजा छत्तीस हजार जोजनका ये सब लेख आपसमें केसें मिलै ५९ समवायागमें नदनवनका विष्कम नव हजार नवसे जोजन लिखा और जबूद्वीप पन्नत्तीमें नव हजार चोपन जोजन झझेरा लिखा है ६० प्रश्नव्याकरण तथा समवायागमें भुवन पति-योंकै वीस इंद्र जोतपियोंकै दो इद्र घारै देवलोकोंके दस एव ३२ लिखा और जबूद्वीप पन्नत्तीमें ऋषभ प्रभूकै निर्व्वाण महोच्छवमें ३२ तो ये १६ व्यतरोंकै एव ४८ लिखा ६१ और ठाणागके दूसरे ठाणै ६४ इद्र लिखा है ६२ उवाईमें लिखा है जघन्यसें सात हाथकी कायावाला मोक्ष गया और जावै और फेर लिखा है जघन्यसें वत्तीस अगुलकी सिद्धोकी अवगाहना होय इस हिसाव जघन्यसें दोय हाथकी कायावाला भी मोक्ष जाता है क्योंकी सिद्धोकी अवगाहना तीसरे भाग कायासें ऊणी कही है ६३ भगवतीकै चौदमें शतक आठमें उद्देसे सिद्ध शिलासें अलोक एक जोजन कुछ कम लिखा है और उवाईमें पूरा जोजन लिखा है ६४ समवायागमें छठी नरककै निच ले

भागसें छठे घनो दधिका चरमात गुण्यासी हजार जोजन लिखा है और जीवाभिगममें पृथ्वीके ऊपरका घनो दधिका चरमात एक लाख छत्तीस हजार जोजनका अतर लिखा है एक लाख छत्तीस हजारका आधा करणेसें अडसठ हजार जोजन होता है ६५ समवायागके अठाणवे समवायमे रेवती नक्षत्रसें ज्येष्ठा नक्षत्रतक उगणीस नक्षत्रोंका तारा अठाणवे है और समवायागके अदरही न्यारे २ जो तारे गिणाये है सो सत्ताणवे होते हैं रेवतीके बत्तीस अश्वनीके तीन भरणीके तीन कृतिकाके छव रोहणीका पाच मृगसरका तीन आद्राका एक पुनर्वसूका पाच पुष्पका तीन अश्लेषाके छ मघाके सात पूर्वाफाल्गुनीका दोय उत्तराफाल्गुनीके दोय हस्तका पाच चित्राका एक स्वातिका एक विसाखाका पाच अनुराधाका चार ज्येष्ठाका तीन एव ९७ ये दोय बात केसें ६६ पन्नवणा के पनरमें पदमे घ्राणइद्रीका नव जोजनका उत्कृष्ट विषय लिखा है और रायपसेणीमें चारसे पाचसें जोजनका लिखा है ६७ भगवतीमें छठे शतक सातमे उद्देसे पल्योपमका मांन लिखा है तेमेंइ अनुयोगद्वारमें भी लिखा है परंतु भगवतीमें असक्षाता बालोंके (केसोंके) खडोंसें कूआ भरा जाय उससें आरोंका मान कहा है अनुयोगद्वारमें भगवतीके लिखे प्रमाणकू नि प्रयोजक कहा है सूक्ष्म अद्धा पल्योपमकू सप्रयोजक कहा है जिस करके नारकी वगेरोंकी आयूकी गिणती गिणे जाती है ६८ पन्नवणा के तेतीस में पदमें असुरकुमार जघन्यसें पचीस जोजन अवधि ज्ञानसें देखे एसा लिखा तथा सौधर्मादि देवलोकवाले जघन्य अवधि अगुलके असक्षातमा भागकू देखे ये बात केसे समवे ६९ पन्नवणामें तेउकायबादर मनुष्यक्षेत्रमें

ही है तो फेर उत्तराध्ययनकै उगणीसमें अध्ययनमें नरकमें भी अग्निका यकही ७० उत्तराध्ययनकै २२ में अध्ययनमें सोरीपुरमें पहलै नेम प्रभूका जन्म लिखा है और दीक्षा लेणेकी वखतमें द्वारिकामेंसें निकलै एसा लिखा है और रामकृश्न वदना करणे द्वारिकामेंसें निकले अब विचारो सोरीपुर पूर्व्वमें द्वारिका पश्चिममें ये बात केसें मिलै ग्रथोकी बात तो तुम मानते नही द्वारिका जाणा सूत्रपाठसें मिलादो अगर इस जगे आचार्योंके वनाये ग्रथकों सूत्रतुल्य मानोगे तब तो ग्रथोंकों झूठ कहते तुमें लज्या नहीं आती ७१ ठाणागकै सातमें ठाणे लिखा है गई उत्सर्प्पणीमें इस भरतक्षेत्रमें सात कुलगर भये और ठाणागकै दशमें ठाणे दश कुलगर भया एसा लिखा है ७२ इसी तरै ठाणागकै सातमें ठाणेमें सात कुलगर आवती उत्सर्प्पणीमें होगा एसा लिखा है और दशमें ठाणेमें लिखा है दस होगा ७३ जीवाभिगममें लिखा है सौ धर्म ईशान देवलोक बराबर है और भगवती इकतीसमें शतकमें लिखा है सौ धर्म देवलोकसें ईशान देवलोक कुछ इक उचा है ७४ भगवती पहिला शतक दूसरे उद्देसे सम्यग्दृष्टी नारकीकू माहावेदना कही और अठारमें शतक पाचमें उद्देसे मै समकिती नारकीकू अल्प वेदना कही एकही सूत्रमें दोय बात है ७५ भगवती तीजै शतक दूजै उद्देसे असुर-कुमारकी तिरछी गती असक्षाता द्वीपसमुद्रकी कही नदीश्वर द्वीपतक गया और जायगें तेसेंइ दुसरे सतक सातमें उद्देसे चमरेंद्रकी सुधर्मा सभाका प्रश्न पूछा तब भगवाननें कहा मेरू पहाडसें दक्षणदिसीमें तिरछे असक्षाता द्वीपसमुद्र उल्लघणेमें आवै उहां अरुणवर द्वीपकी बाहिरकी वेदिकासें अरुणवर समुद्रसें बयालीस हजार जोजनपर

तिगिच्छ कूड नामें उत्पात पर्वत आवे इत्यादिक इसमें असंक्षाता द्वीप समुद्र उलावके कैसे आवें ७६ अतगड दशामें नेमनाथ कृश्नकू कहा है हे कृश्न तू आवती चोवीसीमें अममनामा बारमा तीर्थंकर होगा और समवायागमें तीर्थंकर होणेवालोका जीव गिणाया उसमें कृश्न वासुदेवके जीवकों तेरमा तीर्थंकर होणेवाला लिखा ७७ भगवतीके आठमें शतक नवमें उद्देसे पचेंद्री तिर्यंचका तथा मनुष्यका विकुर्वणा काल अतर्मुहूर्त्तका लिखा और जीवाभिगममें विकुर्वणा काल चार मुहूर्त्तका लिखा ७८ भगवतीके आठमें शतक दशमें उद्देसे जघन्य ज्ञानदर्शन चारित्रकी आराधनावाला तीजे भव मोक्ष जावे सात आठ भव उलावै नहीं और बारमें शतक नवमें उद्देसे नरदेवका तर अ जघन्यसें झाझेरा सागरोपम उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त काल होय नरदेवपणा तो सम्यग्दृष्टि चारित्रिया निपजावे ए दोय बात केसें मिले ७९ भगवतीके पाचमें शतक चोथे उद्देसे नींद लेता भया जीव सात आठ कर्म बांधे और उत्तराध्ययनके छव्वीसमें अध्ययनमें साधू रातका तीजे पहर निद्रा लेवै ८० जीवाभिगममें नारकियोंकू असघयणी कह्या और उत्तराध्ययन उगणीसमें अध्ययनमें मृगापुत्र मातासें कहता है हे माता नारकीमें परमाधामी मेरा मास काट २ मुझकों ही खिलायगा ८१ पन्नवणा के दुसरे पदमें देवतोंके बाबत लिखा है (दिव्वेण सघयणेण) इत्यादि लिखा है और जीवाभिगममें देवतोंकू असघयणी लिखा है ८२ भगवतीमें पाचमें शतक आठमें उद्देसे समुछिंम मनुष्यकू अडतीस मुहूर्त्त अवस्थित काल लिखा और पन्नवणामें चोवीस मुहूर्त्तका उत्कृष्ट विरह लिखा अर्थात् न तो कोई ऊपजे और

नहीं कोई चवै और भगवतीके लेखसें चोवीस मुहुर्ततक उपजे और इतनाही चवै एसा अवस्थित काल लिखा है तो विचारो अंतर्मुहुर्तके आऊखैवालेकू ये वात केसे सभवै ८३ भगवतीके शक्रस्तवमें और ही पाठ है तो समवायागके शक्रस्तवमें और ही पाठ है ८४ ठाणांगके तीजे ठाणे उद्देसे पहले पाच देवलोकमें तीनरग लिखा है काला १ हरा २ और लाल ३ और जीवाभिगममें लाल १ पीला २ और सुपेद ३ लिखा है ८५ पन्नवणा के प्रथम पदमे पुद्गलका भेद पाचमै तीन होता है उत्तराध्ययनमें चारसैवयामी होता है ८६ पन्नवणा कै वीसमें पदमें किल्विपिया जघन्यसे सौ धर्म देवलोक जावै उत्कृष्ट लातकतक जाय और भगवतीमें लिखा है किल्विपया जघन्यसें भुवनपतीमें जावै उत्कृष्ट लातकतक जावै ८७ कल्पसूत्रमें लिपा है गर्भापहारमे जिस वखत भगवानकू हरणेगमेपी देवगर्भमेंसें सहरै वो सहरण कालकू भगवान नही जांणे और आचारांगमै लिखा है वीरप्रभु गर्भ सहरण कालकू जाणते हैं ८८ आचारागमें लिखा है भगवान पहली देवतोंकू धर्म कहै और पीछे मनुष्योंकों और ठाणागके दशमें ठाणे दश अचर जमें लिपा है (अभाविया अप्पुरसा) ए दोय वात कैसे मिलै ८९ उवाईमें शुभ मन वचन काया उदेरणा लिखा है और भगवतीमें एहिज कपता हिंसा करै ९० उपासक दशामें आनद श्रावकनें भगवानसें अरज करी में वारै व्रत उच्चरूगा एसा कहकर सातही व्रत उचरै और अतीचार वारै व्रतोका उचरा ९१ अब हे मित्र तू विचार इतने आपसके फरक तेरे माने भये सूत्रोंमें हमने देखै सो लिखाहै अगर फेर भी होगा तो बुद्धिवान जाणेगे अब तेरे ३२

सूत्रोंमें फरक है या नहीं अब सूत्र २ तू पुकारता है तो विना टीका निर्युक्ती और विना आचार्योंके बनाये शास्त्र ग्रथोंविगर तेरे मानें सूत्रोंका फरकोंका समाधान तो कर दिखावै तेरे साथ, तो हम कहे सो करणे तयार हैं, तू कहता था मिलती वातके ३२ सूत्र है सो हमारे मतकी जड रोपणेवाले लूपकनें माना सो कहणा तेरा तदन झूठ हमनें कर दिखाया इन फरकोंका समाधान विठढा नगरकी रहणेवाली जयती श्रावकणीनेंयुग प्रधान श्रीजिन दत्तसूरि महाराजकू इन सूत्रोंके फरकोका केइयक प्रश्न पूछा था तब महाराजनें टीका निर्युक्ती भाष्य-चूर्णीयोंमेंसें समाधान निकालकर प्राकृत बद्ध गाथाओंमें रचकर संदेह दोलावली नाम ग्रथ सुणाया और जिन २ फरकोंका समाधान पचागीमें नहीं मिला उसकू केवलीगम्य कहकर समाधान अपणें मनसें कुछ भी नहीं किया लेकिन् तुमारे मतार्थोंकी तरे मनकल्पित कुछ भी जबाब नहीं दिया, जयतीसें कहा है श्राविका जो प्रमाण पूर्वाचार्योंने नहीं दिया उसका उत्तरमें नहीं देसकताहू धन्य २ श्रीजिन वल्लभसूरि श्रीजिन दत्तसूरि जिनोंका एसा दृढसम्यक्त सो विना तीर्थंकरकी आज्ञा विगर एक शब्द मनकल्पित नहीं फुरमाया जिन आचार्यकू भगवत महावीरनें युगप्रधान भावी आचार्य फुरमाये इस वातकू भगवान भद्रबाहू युगप्रधान प्रकीर्ण गडिका ग्रथमें दो हजार चार युगप्रधान पचम आरेमें तेवीस वेर जिनधर्मका उदय करणेवालोंमें श्रीजिन वल्लभसूरि श्रीजिन दत्तसूरि युगप्रधान आचार्य फुरमाया जिन महाराजाके वडेरे श्रीनेमिचद्रसूरिनेंपमारवसी रजपूतोंका वरढिया गोत्रस्थापन करा वर्द्धमानसूरिनें सुचिंती गोत्र इसकेवाद श्रीजिन वल्लभसूरि ने ५२ गोत्र

श्रीजिन दत्तसूरि.ने तीनसे गोत्र साखाओ युक्त प्रतिबोधे, कुछ २ नाम लिखताहूं, सालेचा बोहरा दइयारजपूत, ठाजेडकाजलोतराठोड, सींघी निनवाणा बोहरा ब्राह्मन, डोसी सोनीगरा रजपूत, कूकड चोपडा पडिहार इदारजपूत शाखा १२, धाडेवाल खीची रजपूत साखा तीन ३, चोरडिया सावसुखा गोलछा बुचा पारख सोनी फलोधिया गोलछा खरहत्थराठोड साखा ३७ रामपुरिया वगेरे, भणसाली चडालिया भूगलिया राखेचा भूरा वद्धाणी भाटी राजपूत साखा १०, आयरिया लूणावत भाटी राजपूत साखा ५, बहु फणा नाहटा पटवा पवार राजपूत शाखा ३७, मीन्नीरजानची भुगडी तवर राजपूत साखा १५ फटी, राका सेठिया काला सेठ बोकनाका गोरादक एव साखा ७ गौड राजपूत, लूणिया मुघडामहेश्वरी, दूगड सेखाणी कोठारी सूगड शाखा १५ खीची राजपूत, दूधेडिया गाग पालावत मोहीवाल आलावत पमार राजपूत, साख १५ बोथरा वछावत दसाणी साह मुकीम गोत्र साखा ९ देवडा चउहाण राजपूत, गेलडा गोत्र खीची राजपूत, लोढा चउहाण राजपूत, दुसरा लोढा लढामहेश्वरी, नाहर गोत्र मुघडामहेश्वरी, काकरिया पडिहार राजपूत, आनेडा खटोल चउहाण राजपूत, रतनपुरा कटारिया बलाई साखा १० सोनीगरा चउहाण राजपूत, बाठीया ब्रह्मेचा लालाणी हरखावत साह मल्लावत साखा ११ पमार राजपूत, भंडारी चउहाण राजपूत, डागा गोत्र राजाणी पूजाणी जेसलमेरिया चउहाण राजपूत तथा केइयक जेसलमेरिया डागामहेश्वरीयोंमेंसे प्रतिबोधे हैं एमासुणा है राठीमहेश्वरी, मालू छोरिया कान नहीं वींधावे सो पारख भवरा गदहिया रीहड ये सब राठीमहेश्वरी, रूणवाल बेगाणी सोलखी

राजपूत इत्यादिक गोत्रोंकों जैनी महाजन गोत्रस्थापकनें इण सूत्रोंके फरकोंका समाधान किया है ग्रंथ पढजाणेके सबब जिनदत्तसूरि जीके प्रतिबोधे सब गोत्र नहीं लिखा है लाखोंपर विद्यमान है (प्र०) हमारे सम्प्रदाई कल्पसूत्रकू ३२ सोंमें नहीं मानते हैं (उ०) दसाश्रुत-स्कधका आठमा अध्ययन भगवान भद्रबाहूनें उद्धारकर अलग किया है दशाश्रुतस्कधकू तुम मानते हो तो कल्पसूत्र स्वत मानना सिद्ध होगया दुसरा नदीसूत्र तुम मानते हो उसमें कल्पसूत्र माना है तुमारे हुकमचदजीके टोलेका जुहारी लालजीनें ६२ की सालमें बीकानेरमें पर्यूषणोंमें कल्पसूत्र बाचके गृहस्थोंकों सुणाया था नहीं मानते तो कभी नहीं बाचते (प्र०) हमारी पडताणी पार्वतीजी आर्या चैइय (चैत्यशब्दका तीस पैतीस अर्थ अपणे बनाये, सत्यार्थ चद्रोदयमें लिखती है और लिखती है चैत्यशब्दका एकसो बारे अर्थ होता है अपणे किये तीस पैतीस अर्थ चैत्यशब्दका प्रमाणपर किसी वेदात मतके शास्त्रका प्रमाण लिखती है (उ०) देखिये मनलड्डु तो फेर फीका क्यों मनहलवाके पावेमें ३८ सैर मैदा बाकी सब घी सक्कर घीसक्कर वो मिसला सच्चा किया है लेकिन् हम पूछते हैं जिस ग्रथका प्रमाण लिखती है वो ग्रथ कहा है अनेकार्थकोस वगेरे बडे २ कोश जैन तथा शैवमतके बनाये ७५ पूनासहरकी सरकारी लायब्रेरीमें मोजूद है उसमें तो पार्वतीजीके दिये भये प्रमाण ग्रथका नाम निसानतक नहीं है और किस जगे है सो दिखलाणा चाहिये फकत धर्म तत्वका ग्रथ बिना, पट्शास्त्र व्याकरण कोसादि सब धर्मवालोंका एक है सबोंकों मजूर है पट्शास्त्रोंमें पार्वतीजी अपणी लिखी भई कल्पनाकों सच कर

दिखलावै इस बातका ख्यालतो आयजावै तो ताजब नहीं चेइय शब्द-ज्ञान वाचक साधूवाचक नाम किसीभी कोसमें नहीं है न पार्वतीजीका लिखा प्रमाणका कोई ग्रंथ है स्यात् पार्वतीजी अब किसी आर्यासमाजी पंडितसें अपणी कल्पनाको सच्च करणे नया ग्रंथ बनवालै तो ताजब नहीं सुधर्मास्वामीके परंपरागत संतान आचार्योंनें जो अर्थ चेइय चैत्य शब्दका लिखा है वो भगवानके मुखसें निकलाभया समझणा हेमाचार्य कलिकाल सर्व्वज्ञ बिरुद धराणेवाला अनेकार्थ कोषमें एसा लिखता है (चैत्यजिनो कस्तद्विंब चैत्योजिनसभातरू) चैत्यनाम अरिहंत चैत्यनाम अरिहंतकी मूर्ति तथा चैत्यनाम जिनराजके सभाका वृक्ष एसा लिखा है इस अनेकार्थको षट्दर्शन सब मानते हैं और पार्वतीजी झूठ लिखे तो आश्चर्य क्या है कारण स्त्रीका शरीर माया बद्ध होता है चाणक्य नीतीमें लिखा है (श्लोक) अनृत साहस माया मूर्खत्वमतिलोभता अशौचत्व निर्दयत्व स्त्रीणा दोषा स्वभावजा १ (अर्थ) झूठ बोलणा साहस माया कपट मूर्खपणा अत्यंत लोभीपणा अशोच अपवित्रता हत्यारीपणा स्त्रियोंके स्वभावी दोष है, जिन साधवियोंनें निज दोष छोडा वो मुक्तगई, दुसरा एसा श्लोक लिखा है (श्लोक) विनय राजपुत्रेभ्य, पंडितेभ्य सुभाषित, अनृत द्यूतकारेभ्य स्त्रीभ्य शिक्षेत कैतव, १ (अर्थ) राजपुत्रोंसें विनय अदब सीखणा पंडतोसें सुभाषित सीखणा झूठ बोलणा जूवारीसें सीखणा कपट स्त्रीसें सीखणा, अगले तुमारे संप्रदाइयोंनें मत निकालणेमें कुछ झूठ की कमी रखी होय तो तुमलोक आर्या पार्वतीसें पूरा सीखलो क्योंकै बडी सरमिंदगीकी बात है सो जैनधर्ममें कोई भी शास्त्र स्त्रीका बनाया

भया न देखा न सुणा न पढा और नहीं है और चोवीस तीर्थकरोंके सासनमें करोडों साधनिया भई मगर किसी साधवीनें ग्रथ नहीं बनाया और न साधवियोंका बनाया ग्रथ कभी जैनधर्मी मानते पार्वतीजीका बनाया ग्रथ माननेवालोंकों कौण धर्मवालोंमें समझा जावे ऐसे ग्रथ आपलोकोकों मुबारिकरहो अन्यमतकी सन्यासणी चोखा वद धर्मका उपदेम करती, सौच मूल धर्म थापती थी, मगर ग्रथ नहीं बणाया सब शास्त्र ऋषी ब्राह्मनोंके बनाये दीख रहे है, लोपक मत निकले बाद तुमारे सप्रदायमें अनेक साधविया भई है मगर आगू किसीनें भी गथ नहीं बणाया मलीनाथ स्त्री तीर्थकर होणा श्वेतानरी आश्चर्यवाली बात मानते हैं मगर वो भी उपदेश दीया अर्थ भाषण किया सूत्र नहीं रचा है किस प्रमाणसें तुमलोक मताधवण रहे हो (प्र०) द्रव्यपूजामें छ कायोंके जीवोंकी हिंसा है इसवास्ते आचाराग सूत्रमें लिखा है छ कारणसें हिंसा करै सो निरबुद्धिया इत्यादि इसवास्ते हम पूजाका आरभ छोड सामायक करणेमें धर्म मानते हैं और हिंसाका काम धर्मके वास्ते हमलोक नहीं करते हैं (उ०) हे मित्र हिंसा करके धर्म माने सो तुमारे जैसा मूर्ख और निर बुद्धिया मिथ्यात्वी होता है अनत ससार रुलेगा सो सुण हम सनातन जैनधर्मी तीर्थकरकी आज्ञा मुजब करणीको अहिंसा समझते हैं और मानते हैं जैनधर्मका चारित्र यथार्थ क्रिया पालणेवाले, लेकिन् किसी २ एक दोय बात जिनराजकी कही पर सका लाणेवाले सात निन्हव आगे भये जिनोंकी कथा उत्तराध्ययन सूत्रमें टीकाकार लिखते है जब भस्मग्रह उत्तरा तब धूम्रकेतु आया उस धूम्रकेतु ग्रहके पुत्र और पोते दोय निन्हव

विक्रमसंवत् पनरेसे कै पीछे भये एव ९ इनोंकी क्रिया लोचकरणा द्रव्य नहीं रखणा छाछ पीकै उघन (यानेनीवीकू उपवास मानकै करणा) गृहवास छोडणा ग्रामानुग्रामप्यादल विहार करणा वाईस परीषहमेंका केइयक परीषहसहणा घर २ में फिरकै बाई तूं सूझती है इत्यादि कहकर आहार लाणा इत्यादि क्रिया करते हैं हे मित्र तूं बतला सात निन्हव आगे भये उनोंमें भगवतीमें जमाली पहिला निन्नव भया इसकी क्रिया गौतमस्वामी जैसी थीया नहीं क्योंकै भगवती सूत्रमें लिखा है, इनोकी क्रियामें दयाथी मगर जिनाज्ञा बाहिर होणेसें स्वरूप तो दया, और अनुबंध हिंसा हम मानते हैं, जब जमालीजी गौतम जैसा चारित्र क्रिया पालते थे तो गौतम मुक्ति गये जमालीजीकू संसारमें क्यों रुलणा पडा इसवास्ते जिनाज्ञा बाहिर दया भी हिंसा है इन निन्नवोंनें एकेंद्रीसें लेकर पंचेंद्रीतक किसी भी जीवकू, हणा होय तो बतलावो ये निन्हव तुमारी तरे जिनाज्ञा लोपणेसें भाव हिंसक थे आचारांगका पाठ अक्षर २ सत्य है तुमारे गुरु गुरुकुलवास विगर मत चलाणेवाले इस पाठका आशय नहीं समझत्ते हैं भगवान कहते हैं हे गौतम केवलीकी आज्ञा विगर अज्ञानी संसारमें केइयक धर्मकैवास्ते हिंसा करते हैं जैसे घोडा बकरा गऊ आदिककों धर्मके वास्ते मारकर स्वर्ग पोहचे चाहते हैं केइयक देवी भैरवादिक देवतोंके सन्मुख भैंसाबकरा धर्म समझकै मारते हैं सौत्रामणी यज्ञकर मदिरा पीते हैं केइयक धर्म समझ पचाग्नी धूणी तापते हैं वृक्षोंकै रस्सी बांध उलटे लटकते गंगानदी कूडोंमें धर्म समझ स्नान करते हैं कंद मूल खाकर उपवास करते हैं कोई कीडीनगरा सींचते हैं दिनकू भूखा रह

रातकू खाते हैं इत्यादि केइयक हिंसा, मानके वास्ते धर्मके वास्ते पूजाके वास्ते ससारी जीव करते हैं इसीतरे ही सब गृहस्थ चारों वर्ण तथा अंत्यज आजीविका वास्ते कोई कसाई धीवर भीलवागरी तथा पनरे कर्मादानकरणेवाले अनाज घी तेल वगेरे रस बेचणेवाले असक्षा जीवोंकी हिंसा आजीविका वास्तै करते हैं इसी तरे ही डाकदरी दवा मुसलमीन हकीमी दवामें हलते चलते जीवोंका मास चरबी वगेरे खाते हैं खिलाते हैं आर्य वैद्य भी सहत कद मूल अनत कायका छेदन भेदन ससारी जीव खाते हैं खिलाते हैं इसतरे रोग मिटाणे हिंमा करते हैं निन्हव लोक मुक्तिकै अभिलापी काया कष्ट सहते जिनाज्ञा विराधकर महा हिंसक भावकरकै होते हैं हे साधो इसतरे जिनाज्ञा बाहिर लोक सब हिंमा करते हैं अब केवलीकी आज्ञामें जो साधू या श्रावक धर्म करते हींसा होती दीखे सो स्वरूप हिंसा भावमें दया समझणी जेसें साधू विहारकरै पडिकमणेमे ऊठे बैठै नदी ऊतरे साधवी डूबती होय तो नदीमें गिरकै निकालै वृक्ष नीचै साधू होय दरखतकी डाल टूटती होय तो हाथसे पकडकर नीचे धरै नदीका पूर आजाय तो साधू वृक्षकी डाल पकड चढ जावै वरसते पाणीमें दिसा फरागत जावै पैसानडाल देवै साधवी उपाश्रेका दरवाजा खोलै धधकरै विद्या पढाते शिक्षा देते चेलेकू ताडना तर्जना आक्रोस करै इत्यादि क्रियामें प्रत्यक्ष हींसा दीख रही है मगर दशवीकालिकमें लिखा है जयणासें साधु चलै जयणासे बैठै जतनसे भोजन करै इत्यादि काम यत्नसें करता पापकर्मकू नहीं बाधै जो हमने लिखै सो सब तुमनें मजूर किया लेकिन् भगवानकी आज्ञा मुजब श्रावक जिनमूर्त्तिकी पूजा करै उहा

हिंसा आयगई क्या अकल बरी है तो तू बतला साधूकू जब गृहस्थ वंदना करता है तो बैठता ऊठता है कहो हिंसा भई या नहीं साधुओंकों वांदणे जाते हो असवारी या प्यादल हिंसा भई या नहीं साधूकूं पोहचाणे जाते हो छकायकै हिंसक हो या नहीं अपणे घरसें चलाकर साधुओंकै दर्शनकू थानकमें जाते हो वखाण सुणने जाते हो धर्मकै वास्ते मुक्तिके वास्ते हिंसा करणेसे पापी ठहरै या नहीं साधू आहारकूं आता है तब ऊठकै आहार पाणी देते सामने जाते पोहचाते जीव हिंसा होती है या नहीं तुमारे मतका कोई गृहस्थ या गृहस्थणी दुख गर्भित मोहगर्भित वैराग्यसे सिर मुडवाणे तइयार होता है उस वखत लड्डू खोपरा नारेल विदाम ओला वगेरे वाटते हो हजारों गृहस्थ गृहस्थण्या नाइ धोबी सुथार कुभार असभ्य जात मिथ्यात्वी लोकोंकू देते हों असक्षा जीवोका घमसाण समर्द्दन धर्मके वास्ते हिंसा करते हो हिंसक ठहरते हो और ते दिनकू रातकू गीत गाणे आतीहै असक्षा जीव पगोंसें मारकर मरनाकर हिंसक ठहरते हो या नहीं बाजा बजाणे वाले मुसलमानोंकों रुपया देदे कर बाजा बजाते हो वो मुसलमांन उस रुपयेसें मास, कादे लसण, लाकर खाते हैं विषय कसाय सेवते हैं धर्मके वास्ते मुक्तिके वास्ते हिंसा करणेसे हिंसक भये या नहीं फेर उस भेप लेणेवाले तुमारे मतके भाव चारनियेकू हाथी घोडा रथ पालखीमें बैठाकर सहरमें फिराते हो एकेंद्रीसे लेकर पचेद्रीतक जीवोंकी हिंसा करणेसें हिंसक ठहरे या नहीं तुमारे साधू जब तुमलोकोंकै पास मकान उतरणेकू मागता है तब अंदर गउ भैंस घोडा ऊठ बधे होय उसकू और जगै बधवाते हो चीजवस्त पडी होय तो और जगै

धरजाते हो, नोकरोंके पास या आप झाडू वगेरे देकर दिराकर जीव हिंसा धर्मके वास्ते करणेसें हिंसक ठहरे या नहीं, साधू तुमारे मतका कोई मरजाता है तब हजारों रुपेकी उछाल ढेढ भगीथोरिओंकों देते हो क्या तेरे पथियोंका सुपात्रदान ईसीका नांम है धर्मके वास्ते महा हिंसकोंकों द्रव्यकी मदत देकर तुमलोक हिंसा धर्मी ठहरे या नहीं फेर उस साधकों अग्निमें जलाते हो उसमें चदन कपूर घी वगेरे डाल-कर धर्मके वास्तै छकाया की हिंसाकर नरकके अधिकारी हिंसक ठहरते हो या नहीं (प्र०) तुमारे मनातन धर्मी भी तो साधूकू इसीतरे जलाते हैं उनोंकों धर्म भया कै पाप (उ०) हे मित्र सवेग धर्मियोंकू तो देवता करै सो धर्मकाम श्रावगकू करणेकी श्रद्धा है और करते हैं जैसे इद्रादिक देवतासम्यक्ती अष्ट द्रव्यसें जिनमूर्त्ति पूजै गहणावस्त्र चढावै नाटिक जिन गुणगायन करै तब बोधबीज निर्मल करते कर्म खपावै तेसेंइसम्यक्ती श्रावक करै रायप्रश्नी जीवाभिगम अनेक सूत्रोंके लिखे मुजब, तेसेंइ श्रीजबूद्वीप पन्नत्तीमें लिखा है (अप्पे गइया जिनभत्तीए अप्पे गइया धम्मोत्ति अप्पे गइया जीय कप्पमेय) केइ-यक सम्यक्ती देवता जिनराजकी भक्ती करणे वास्ते केइयक सम्यक्ती देवता ससारतारक धर्मके वास्ते और केइयक मिथ्यात्वी देवता आपणे मालक इद्रकों ये कृत्य करते देख अपणा जीतकल्पयानें करणेका आचार व्यवहार करणा ही चाहिये इसवास्तै भगवान श्रीऋषभदेव स्वामीकानिर्व्वाण महोछव करणे अष्टापदपर आये भगवानके शरीरकू सुगध जलसें स्नान कराय गोशीर्ष चदन बावना चदनसें लेपकर निर्जीव शरीरकै सामने सौधर्मेंद्र नमोत्थुण स्तवना करै फेर तीर्थंकरकी चिता

गणधरोंकी चिता दसहजार साधुओंकी चिता चदनमई रचकर अनेक सुगध द्रव्य डालकर अग्निकुमार अग्निसिलगावै वायुकुमार हवा चलावै इसतरे देहमस्कारकर भगवानकी दाढ दात इद्र अपणे २ कायदे मुजब लेकर स्वर्गमे माणवकस्थभमे हीरे रत्नोंकेडव्वोंमें रखै हमेस गंध पुष्पादिकसें पूजे उहांपर इद्रादिक देवता हसी मस्करी ससार कथा देवागनाओंसे नहीं करै फेर इद्रादिक देवता नदीश्वर द्वीपजाके जिनप्रतिमांओंकी द्रव्यभाव पूजा अठाई महोच्छव करैइत्यादि विधि कर उन देवतोंकी तरै सनातन धर्मवाले श्रावक धर्म सम झकै और गुरुभक्तीसें साधूकै शरीरकों सस्कार करै मगर तुमलोक तो देवताकीकी भई जिन-मूर्त्तिकी धर्मकै वास्तै द्रव्यभाव पूजा और अग्नीसें देही सस्कार धर्मकी करणी करणा मानते नहीं इसवास्ते छकायाकै हिंसक ठहरते हो श्रावक साधूकू जलावै ये वात किस सूत्रमें लिखी है २४ तीर्थंकरोंकै घणे श्रावक भये किस २ श्रावकनें साधुओंकों जलाया और किस विधीमे जलाया सो सूत्रका अध्ययनका नाम बताणा एसे २ हिंसाके काम करकै तुमलोक अपणे जीमें धर्मी बणे रहते हो धर्मके वास्ते हिंसा करणेवाले आचाराग सूत्रमे लिखे मुजब तुमलोक हो, पाव जलते नहीं दिखता डूगर जलते दीखता है, डूगर तो वाजे वखत रातकू दिव्य औपधियोंकै प्रभावसें जलते दीखता है मगर फजरमें देखे तो पहाड बिलकुलजलाभया नहीं दिखता तुमलोक अनेक काम धर्मकै वास्तै हिंसा करते हो सो तो मनमें दया थाप रखी है और तीर्थंकरके कहै सूत्रोंकी आज्ञा मुजब श्रावक द्रव्यभाव पूजा करै उसमें एकात पाप ठहराया वाहरे पक्षपातियो तुमकों सत्यधर्मकी प्राप्ति केसें होसकै जेसें

रातकों वडवानलसें दरियाव जलते दिखता है मगर दरियावके किमी जीवकों तकलीप नहीं पहुचती एसें दीखतमें द्रव्यपूजा अज्ञजनोंकों हिंसा एकेंद्री जीवोंकी दरसती है मगर जिनराज गणधरोंनें आज्ञादी और हिंसाकी करणी द्रव्यपूजा होती तो महानिसीथ सूत्रमें पचकल्प सूत्रमे तीर्थंकर करणेकाहुकम कैसें देते (प्र०) सूत्रोंमें महोत जगे दीक्षाका वर्णन है मेघकुमारादिकका इसवास्तै हमलोक करते है (उ०) सूत्रोंमें तो युद्धका भी वर्णन है वैस्याकाभीवर्णन हैं इस्सें क्या बात भई कहाई एसा लिखा होय तो बतलावो श्रावक दीक्षाका उच्छव करे तो मुक्ति जावै एसा तो माता पिता कुटुबवालोंनें दीक्षाका उच्छव करा तो इसकी तीर्थंकरोंनें आज्ञा तो नहीं दी गृहस्थ आरम समारभ अपणे कुटुब वास्ते अनेकानेक करते हैं कृश्नमाहाराजने तो उपदेस देकर दिक्षा दिराई ये तो निरवद्य उपदेस समझणा दीक्षाका उच्छव करा राजानें अपणे मानके वास्ते, नेमप्रभूने एसा नहीं फुरमाया कै कृश्न तूं दीक्षाका उच्छवकर, आचारागमें लिखा है मानकै वास्ते हिंसाकरे उसकू अहितका कारण होगा एसा तुम मानतेहो (प्र०) तुमारे मतमें भी तो दीक्षाका उच्छव करते हैं (उ०) हे मित्र हमारी देखा देखी कैसें करसकता है हमतो क्रोड अथका हुकम मानते हैं हमारेपास तीर्थंकरका हुकम है तेरे पास होयतो बतला, जैसें राजाका सिपाही ५ रुपे महीना पाणेवाला राजाके हुकमसें कोव्याधिपतीकों पकडकर आगे करलेता है और निनाराजाके हुकम विगर क्रोडपतीकी मगदूर नहीं सो किसी हलके दरजेके गरीबको पकडसकै सो हिसाब सनातन धर्मियोंका हुकम तीर्थंकरका समझणा तुमारा क्रियाकष्ट विनाहुकम क्रोडपतीपना दिखा-

णेका है इहां तीर्थंकरका सिपाही सम्यक्ती गृहस्थकू समझणा मोह अज्ञान कोट्याधिपती समझणा इसवास्ते विना तीर्थंकरके हुकम विना सब करणी हिंसा है अब सुणो तुमारी सामायक भी करते हो सो नाम मात्र है प्रथम तो सामायके ३२ दोष है सो तुमारे मतमें प्राये कोई नहीं जाणता फेर जहातक श्रुतसामायकका स्वरूप नहीं जाणोगे उहातक द्रव्यसामायक होगी भावसामायक कभी न होगी सामायक शब्दका शुद्ध नामतक तुमलोकोंमें प्राये बोलणा नहीं आता समाई कहते हो दक्षणमें समाई चाराककू केते हैं मारवाडमें किसी स्त्रीके मरणेकू समाई कहते हैं सामायक शब्दकी निर्युक्ती व्याकरणी इसतरे करते हैं (समस्तरागद्वेपरहितस्य आयो ज्ञानादीना लाम प्रशमसुखरूप समायसएवसामायक) समयानें रागद्वेप रहित पणे आययानें ज्ञान-दर्शन चारित्रका लाम जिसमें उत्कृष्ट समतारूप सुख जिसमें सो सामायक कहलाती है जब सामायकमें ज्ञानादिकका लाभ लिखा तो शुद्ध अक्षरके शब्दही जिनोंकों बोलणा नहीं आता तो फेर ज्ञानका लाभ केसें होसकै जब अच्छा ज्ञान नहीं तो सम्यक्त कैसें होसकै दोनों विगर चारित्र नहीं नवकार मन्त्र जो की चवदै पूर्व्वकी विद्याका सार है वो भी शुद्ध नहीं आता नमो उझारियाण इत्यादि अनेक अपशब्द बोलणेवालोंकों यथार्थ सिद्धि केमें प्राप्त होय इसीतरे इरियावही लोगस्स करे मिभते जो सामायक सूत्रहैउसके मात्रशब्द अशुद्ध बोलते हो हमारा लिखणा तुमारेसें द्वेपकै लिये नहीं है किंतु सत्यपणे मिन-तासें है कउएकी तरै सामायक सूत्रका अर्थ विगर जाणै क्राकां करणेसें न मालम कैसी सामायक होती है फेर तुमारे मतके लोक

कायाकी शुद्धि वस्त्रकी शुद्धीविगर अप विनता पणे सामायक करते हैं तीर्थंकरोंका नाम तथा नवकार मन्त्र जपते हैं ये काम अच्छा है या बुरा है असुचि मानकी असिझाई ठाणाग सूत्रमें देखो फकत मूंके कपडा बाध एक जगे बैठणा इतना जरूर लाभ मानलो तुमारी सामायक इतनेंही मात्र है (प्र०) तुमारे धर्मके गृहस्थभी तों सामायक करते हैं (उ०) हमारे श्रावक जादा तरपढे भये बचपणसें ही होते हैं सो शुद्ध शब्द बोलते हैं न मानो तो कोचर जातकै सवेग धर्मियोंकी परिक्षा बीकानेरमें ही करलो काय शुद्धि तथा शुद्धवस्त्र पहरे विगर कोई भी सनेगधर्मी सामायक नहीं करता दुसरा तुमारी तरे एक सामायक हीं एकात गृहस्थका धर्म है एसा भी तो सनातनधर्मी नहीं मानते हैं श्राद्धविधी श्राद्धदिनकर श्राद्धकोमुदीमें जो जो श्रावकोंकै दिनकृत्य रात्रिकृत्य पर्वकृत्य चोमासीकृत्य सवत्सरीकृत्य करणा लिखा है वो जगेकी जगे सब करणेवाले धर्मी श्रावक बजते हैं दानधर्म १ देव गुरु भक्ती २ सात क्षेत्रमें धन लगाणा तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब तीर्थयात्रा रथयात्रा अनुकपा दान देणा ज्ञानभडार विद्या पढवाणा इस मुजब अनेक सुकृत धर्म करते हैं सनातन धर्मियोंकी सामायक दिनमें दो वखत जादा करे तो देसावगासी चारपर्व महीनेमें पोसा ये करणी सब जिनाज्ञा मुजब सब सफल है जैनधर्ममें प्रभात और सध्यासामायक करणेका विवहार तो दीखता है पडिक्कमणेके सग या अलग आनद श्रावकादिकोंनें १४ वर्ष गृहस्थ धर्मपाला लेकिन् हरवखत सामायक किया होय तो उपासक दशासूत्रका पाठ तो बतलाओ हरदम सामायक साधूका धर्म है श्रावक जन दुनियासें अलग

होणा धारते हैं तब इग्यारे श्रावगकी प्रतिमा धारते हैं उसमें भी सामायककी पडिमामें तादाद मुजब सामामायक करते हैं छठी पडिमामें स्नान छोडता है तबसें श्रावक जिन मूर्त्तिकी द्रव्यपूजा छोडता है पूणीये श्रावककी वीर प्रभूनें सामायक वखाणी लेकिन् दिनमें २ वखत ही निश्चलतासें करता था अब तुम कहो किस सूत्रकी आज्ञासें हरदम गृहस्थीकों सामायक करणा बतलाते हो जेसें भोजन करणेमें अनेक पदार्थ होता है वस्त्र पहरणेमें पाच वस्त्र गृहस्थ पहरता हैं कभी पगडी अगरखी पहने मगर धोती विगर सोभा नहीं पावे इसतरे अनेक दृष्टांत मुजब गृहस्थी धर्म करणीके अनेक भेद है सो तुम भी करते हो एक मंदिरमूर्त्तिके द्वेषीहोवाकीतो सब मानते हो साधुओंकों वादने जाते हो वखाण सुणने जाते हो साधूकू वस्त्र पात्र दवा मकान पाणी वगेरे चाहीये सो देते हो रात भोजन छोडते हो शील पालते हो वेलातेला वाह्यतप करते हो तुमारे साधकों परदेशी गृहस्थ वादणे आते हैं तब उनोंकों अन्नपाणी अग्नी बलीता सब देते हो ब्राह्मण मथेनोंकों पैसा देदेकर पुस्तकै मोल लेलेकर साधोंकों वहिराते हो पातरे मोल लेकर वहराते हो ऊन मोल ले ,लेकर ओघा वटनाय देते हो हा इतनी चलाकी धूर्त्तता तुमारे साध जरूर करते हैं कोई भेष लेता है उसकी आड लगाकर पातरे पुस्तक ग्रंथ पचगुणा दशगुणा लेते हैं इतनेंमें बुद्धिहीन मनमें तुमलोक,फूलते हो इसमें आड देणेकी जरूरी क्या है जब श्वेतांबरोंकों चौदे उपगरण रखणेका सूत्रोंमें हुकम है तो उसमें पात्र ओघा सब आगया फेर अपणे पास नहीं होय तो जेसें अहार वस्त्र औषधी लेते हो पुस्तक पातरे लेते तूंबीकाठरका

क्यो हमारे सनातन सवेगी साधू एसी २ धूर्तता नहीं करते हैं साधु-ओंके योग्यवस्तु गृहस्थसें मागते हैं तुमारी श्रद्धासें ही तुम झूठे हो तुम साधूकू तीन पात्र रक्षणा मानते हो तो दीक्षालेता पाचदस पात्र केसें लेसकता है खैर इत्यादि, फेर दया पलाते हो लड्डू भुजिये हलवाईसें मगाकर खिलाते हो घरके चुलेकी दया पळाई, और हल-वाईकी भट्ट झोकाई, क्योंकै अगला माल विका तो, दुकानदार तो दुसरा माल चणावेगा ही, इस भट्टकी क्रिया तीनोंकू लगे जो कहोकै करेगा सो भरेगा, तो वतलावो साधू, एक अदमीनें अपणे वास्ते चार रोटी नणाई उसमेंसे आधी चोथाई क्यों लेता है मतलव साधू जादा ले लेवे तो गृहस्थ फेर अपणे वास्ते चूला सिलगावै तो साधूकू आधाकर्म लगे इसवास्ते इतनी लेते हैं सो गृहस्थ फेरचूला नहीं सिलगावै जब नवकोटीकै पचखाणीकों चूलेकी क्रिया लगे तो तुम खिलाणेवाले और खाणेवालेकों हलवाईके भट्ट जलाणेकी क्रिया जरूर क्यो न लगेगी एसी तुम दया पलाते हो और पालते हो इत्यादि अनेक काम तुम धर्म समझकै करते जाते हो तो फेर क्या समझकै नाक फुलाते हो कै हमतो सामायक करणा ही धर्म मानते हैं किस सूत्रकी राहसें तुमने दया पलाणा नाम धरकर हलवाईका भट्ट चेताना सरूकरा सो वतलाणा भगवतीमें तुगियानगरीकै श्रावकोंनें तो साधु-ओंकों वांदकर पीछै आते रस्तेमें मुकाम किया तब सबोंने आपणा २ द्रव्य लगाय चार प्रकारका भोजन तइयार करवाकै जीमकर रातका चोपहरी पोसामें धर्मध्यान करते रहै एसा लिखा है इन श्रावकोंनें न तो किसी हलवाईकी दुकानसें मिठाई मगाई और न किसी एक

घणियेका नोताजीमें अपणी २ रसोई तो उनोंकों करवाणीहीथी रातकों प्रमाद नहीं किया धर्मध्यान किया इस लेखसें तुमारी करतूत दया पलाणे वाली एक असमे भी नहीं मिलती तुमारे सब काम मनकल्पित है जिन आज्ञामें नहीं, साधूकी भक्ती गृहस्थ धर्मोपदेशक समझके करते हैं इस धर्मोपदेश विना साधू और तो काम कुछ करताई नहीं है तो विचारो जिसने धर्मतीर्थ चलाया जिसके कहै अर्थसें सूत्र रचागया एसे उपगारीकी भक्ती करणा चाहियै वो भक्ती उनोंकी मूर्त्तिसें ही होसक्ती है क्योंके प्रभू तो मुक्त होचूकै ससारमें मग्न असत् आरभी गृहस्थकों द्रव्यभाव पूजा जिनमूर्त्तीकी ससारसें तारणे वाली हे (सुभ जोग पडुच्चअणारभा) शुभयोग मन वचन कायाका होय वो आरभकू भी अणारभ तीर्थंकर फुरमाते हैं ये पाठ भगवती सूत्रका है तो फेर तुमलोक अणारम द्रव्यपूजाकों आरभ केसा मानते हो जिस कामकाइरादा अच्छा होय उसकू बुद्धिवान अच्छा मानते हैं और सूत्रमें तीर्थंकर गणधरोंकी भी एसी आज्ञा है (प्र०) द्रव्यपूजाकी करणी देवतोंकीहै सो तो हम मानते हैं क्योकी देवतोंको सूत्रोंमें नोधम्मिया लिखा है बाकी बारा कालीपडै पीछै चैत्यकै द्रव्य खाणेवाले जती भेपधारियोंनें द्रव्यपूजा चलाई है (उ०) हे मित्र देवताकी करणी सम्यक्तीकी सम्यक्ती मनुष्यमाने, मिथ्यात्वी नहीं माने, देवतोकू सूत्रमे सम्यक्तीकू (गईकल्लाणा ठिईकल्लाणा) फुरमाया है वो देवता ही जिनराजकी तेसेंई जिनमूर्त्तिकी द्रव्यभावपूजा करते हैं धर्मसे डिगते भये साधू श्रावगको उपदेश दे कर धर्ममें मजबूत करते हैं, आपाढ भूती तेतली पुत्रादिक अनेक जीवोंकों किया, हर केसी मुनीकी यक्षने वेया-

वचकरते म्राह्मनोकों मरणमुख किया, अनेक मुनि श्रावकोंका कष्ट दूर किया, तीर्थंकर केवली साधुओंकों वदना करणे आते है, धर्म्म सुणते हैं मिथ्यात्व त्याग सम्यक्त लेते हैं, प्रश्न पूछते हैं, नदीश्वर तीर्थ रुचकतीर्थ इत्यादि तीर्थोंकी यात्रा करणे जाते हैं ये सब धर्मका काम करते हैं देवतोंकों धर्म भयाके पाप, सूत्रोंका आशय नयवाद तो तेरे साथ जाणते नहीं मगर सूत्र २ कहकर मन मत चलाणेमें हुसियार है चारित्र साधुपणा देवतोंकू उदय नहीं आता निकाचित पुन्य तपसजमसें बाधा है सो भोगते हैं इसवास्तै चोथा गुणठाणेमे समझणा चोथे गुणठाणे वालेकू तू अधर्मी कैता है एसा अवर्णवाद देवतोंका बोलै उसकू अनत ससार रुलणा पडे देख ठाणांग सूत्रका ५ मा ठाणा, तीर्थंकर २४ जबतक गृहस्थावासमें रहते हैं उहातक गुणठाणा चोथा कहा है, तो क्या तू उनोंको उस वखत अधर्मी मानता है जैसें भगवान महावीर माता पिताके स्वर्ग भये पीछे दोवर्ष ग्रहस्थमें रहे मगर सर्व ममतासें विरक्त होचूके थे राग द्वेषशात होगया था मगर गुणठाणा ४ था भरतचक्रवर्त्ति चोथे गुणठाणेसें गृहस्थपणेमें एकाएक केवली होगया इसवास्ते भावनासें मुक्ति होती है वो भावना ज्ञानदर्शनसैं होती है सो तो सम्यक्ती देवतोके हरवखत है मगर देवताके भवसें मुक्ति नहीं एसी स्थिती होणेके कारण सम्यक्ती देवतोंकों एक जन्म मनुष्यका करणा होता है मुक्तिकी मुदती हुडी उन २ सम्यक्ती देवतोंकी तीर्थंकरोंनें मजूर करली एसे देवता द्रव्यपूजा नाटक गायन स्तवना जिनमूर्तीकी करते बोधबीज ज्ञानदर्शन निर्मल करते हैं, तुम नहीं मानो तो बतलावो देवता तिर्यंच और मनुष्य समय २ सात कर्म बाधते

है और तोडते हैं तो तुम बतलावो तीर्थंकरकी चार निक्षेपेकी भक्ती जब सम्यक्ती देवता करते हैं समवसरण प्रातिहार्य रचना नाटकादि भक्ती सम्यक्ती देवता करते हैं तब उस वखत सात कर्मोंमेंका कोनसा कर्म्म बाधते हैं किसी सूत्रसें कर्म बाधणा सिद्ध तो करदो, नहीं तो जन्ममरणसें छुडाणेवाली जिनप्रतिमाकी भक्ती छोडकर क्यो मिथ्यात्वी बण बैठे हो, तुम सब देवतोंकाये जीतकल्पयानें ये काम करणेका विवहार बतलाते हो तो बतलाओ किसी मिथ्यात्वी देवताया देव्योंनें तीर्थंकरकी मूर्त्तिकी द्रव्यभाव पूजा तथा समवसरणमें नाटिक किया होय तो सूत्रका लेख बतलाओ नहीं तो हम तुमे भगवती ज्ञाता वगेरे सूत्रोंका प्रगट लेख दिखा देवै नाटक तथा द्रव्यभाव पूजा तीर्थंकरोंके चार निक्षेपेके करणेवाले सब देवी देवता सम्यक्ती थे, तुम जाणते हो मगर मिश्रमोहनीका उदय है सो झूठा पक्ष पकडा सो छोडते नहीं हो जीवाभिगम सूत्रमें देखलो बहुतसें चारों निकायके देवता अठाई पर्वपर नदीसरद्वीपधर्मे महिमा करणे जावै अगर विवहार देवतोंका होता तो सव्वे देवा एसा पाठ होता सो नहीं है बहवे देवा एसा पाठ है सो सब सम्यक्ती देव जाते हैं जबूद्वीप पन्नत्तीमे तीर्थंकरोंकै जन्म महोछवका विधान लिखा है जन्म तीर्थंकरोंका होणेसे इद्र अपणी २ घटा बजवाते हैं उस वखत सम्यक्ती देवतो उमगसें और मिथ्यात्वी दैव इद्रका काम जाणकै आवै सो (गाथा) एमपमणतवणभवण जोईसरा देव वेमाणिया भत्तिधम्मायराकेविकप्पठियाकेविमित्ताणुगाके विवर रमण वयणेण अइ उच्छगा १ (अर्थ) एसे कहते व्यतर भवनपती जोतपी ... केइयक भक्तीसें केइक धर्मका आदर

करणेकों, ये तो देवसम्यक्ती जाणना, केइयक अपणा विवहार जाणकै केइयक मित्रोंकै कहणेसें केइयक सुदरस्त्रियोंकै कहणेसें केइयक उछव देखणे ये सब देवता मिथ्यात्वी है, इसतरे नदीश्वर द्वीपपर ठहरकै मेरूपर जाते है, इसीतरें सूर्याभ देवता जब वीरप्रभूकू वादणे गया उहा भी सम्यक्ती मिथ्यात्वी दोनू जाते हैं एसाही पाठ है, प्रश्न पूछणे समवसरणमें देवता केइक जावे एसा लेख ज्यादा है, रायपसेणी सूत्रमें लेकिन् अकलसें खुदा पिछान सकते हो, जो देवता गोसालेका भक्त था उसनै कुडकोलक श्रावकके सामनें गोसालेकी तारीफ करी और जो देवता वीरप्रभूका भक्त था उसनें सद्दाल पुत्र गृहस्थकै सामनें वीरप्रभूकी तारीफ करी, ये बात उपासक दशासूत्रमें लिखी है, तो तुम विचारो तीर्थंकरकै चारों निक्षेपेकी भक्ती पूजा मिथ्यात्वी केसें करेगा जेसें सम्यक्ती आनद श्रावग अबड सन्यासी श्रावक अन्यमती हरि हरादिकके चारों निक्षेपे वदना पूजनाका त्याग करा है उपासक दशा उववाई सूत्रमें लिखा हैं, जैनधर्म माने उसकू सम्यक्ती समझो अन्यकू मिथ्यात्वी, जो साक्षात् पिताकी भक्ती सपूत पुत्र करेगा तो वो पुत्र पिताकी फोटोग्राफकू पिताकी प्रतिमा मूर्त्ति नहीं समझेगा एसा भी कभी होसकता है, अथवा उसपर लात मार सकता है जरूर अदबकै साथ उसकों उच दरजे स्थापन करकै, जो जो अपने मित्रकुटबी तथा अपणे शतानोंकों वो प्रतिमा दिखाकर कहेगा, हमारे पिताकी सूरत सिकल एसी थी, एसे गुणधारक थै, मेरेपर इनका इतना उपगार है सो जो पदार्थ मेरेपास है वो सब इनकै निमित्त अर्प्पण करदू तो भी में उसराण नहीं होसकता फैर उचित भक्तीमें वरतै इसीतरे

ही जेसे देव वेसी पूजा होती है (प्र०) साधू छकाय के बचाणेमें धर्म समझते हैं वेसाही श्रावक समझता है तेरा पथियोंनें सिझाय बनाई जिसमें लिखा है, साधूनें श्रावक रत्नारीमाला इक छोटी दूजी मोटीजी, इसवास्ते दशमीकालिक सूत्रमें फरमाया है धर्म्म उत्कृष्ट मगलीक अहिंसा सजम तपरूप सो निरवद्य काममै धर्म है और द्रव्य-पूजा सावद्य है साधू श्रावककों एकही डगर चलणा चाहिये (उ०) हे मित्र तेरा पथियोंने इस सिझायमे तो श्रावकक् रत्नोंकी माला बना डाली है, लेकिन् श्रावकको कोई श्रावक भोजन करवावे वस्त्र पहरावै अथवा साधर्मी जाण साहाय देवै तो जहरका दरखत जहरका वाटका इत्यादिकभी ओपमा श्रावकक् दीहै, श्रावकके शरीरकू पाछणेकी धार बतलाई है, कहो मित्रो एसे निरविवेकियोंके वचन पूर्वापर विरोधी जैनधर्मियोंके कभी नहीं होते, हा हम एसी मानते हैं सूत्रोके लेखसें साधू श्रावककी श्रद्धा एक है मगर दयाकी करणी एक नहीं क्रियामें जमीन असमानका फर्क है सो सुण (गाथा) जीवासुहुमाथूला सकप्पा आरभा भवे दुविहा, सवराहा निरवराहा, साविख्खा चेव निरवख्खा १ (अर्थ) जीव जगतमें दोप्रकारका है एक तो सूक्ष्म १ दुसरा बादर २ सूक्ष्म जीव ५ थावर एकेंद्री पृथवी १ अगनि २ जल ३ हवा ४ और वनस्पती ५ इन पाचोंकी दया श्रावकसें हरगिज पलै नहीं रसोई मकान कुटुब इत्यादिकके करणा कराणामें इनोंकी हिंसा त्याग नहीं होसकती तब वीस विश्वादयामेंसें दस विश्वादया रही, दस विश्वा जातेरही, फकत हलते चलते वे इद्रीसें लेकर पचेंद्री जीवोंकी दया रही, अब इसके दो भेद है, एकतो इन जीवोंकों निचारकै

मारणा दुसरा घरके आरंभमें मरता है इसमे घरके आरंभका श्रावककों त्याग नहीं है फकत यत्न करता है, इसवास्ते दस विश्वामेंसें पाच विश्वा रह गई यानें ये बात रहीके विचारकर हलते चलते जीवोंकों नहीं मारू, लेकिन् श्रावगसें ये भी दया पले नही, इसवास्ते इस दयाके दो भेद है एक तो अपराधी, दुसरा निरापराधी, इसमेंसे श्रावकके एसी धारणा होती है कै निरापराधीकों नहीं मारणा अपराधीके मारणेमे यत्न करता है, कसूर वारकी दया गृहस्थी श्रावकसें पलै नहीं जेसें चोर घरमेंसें धन लेजाता है अपणी स्त्रीसें कोई दुराचार सेवता है इज्जत लेता है अथवा कोई श्रावक राजा है या राजाका मुसद्दी है आप या राजाकै हुकुमसें लडाई करणे जाणा पडै तो श्रावक पहले तो शस्त्र चलानें नहीं लेकिन् जब शत्रु अपणेको मारणे आवै तथा सिंघ वगेरे जानवर अपणेकों मारणे आवै तब मारणा पडै तब ये दया भी नहीं रही कै विचारकै न मारू तब पाच विश्वामेंसें अढाई विश्वादया रही सो इसतरे वे कसूरवारहलते चलते जीव निजरमें आवै उसकू नहीं मारू अब इसके भी दो भेद है एक तो अपेक्षासें दुसरा निरअपेक्षासे इसमें श्रावकसें अपेक्षासें जीवोंकी दया पलै नहीं क्योंके घोडा बैली रथगाडी उठादिकपर जब सवार होता है तब उनोंकों हाकता है चाबुक वगेरे मारता है गाली देता है इन जीवोंनें श्रावकका कुछ भी कसूर नहीं करा है आपही तो ऊपर चढा है उसके चलणेकी ताकत है या नहीं लेकिन् बेकसूर मारता हैं तेसें अपणे न्याती गोतियोंकै बदनमें कीडै पडजाते हैं कठवेल नारू कान दात वगेरोंमें उसपर दवा लगाता है उन कीडोंनें श्रावकका कुछ

कसूर तो किया है नहीं अपण कर्मोके वस उस जगै पैदा भये हैं कुछ आनगका बुरा करणेके विचारमैं पैदा नहीं भये है तब उन निरापराधी जीवोकी भी दया श्रावगसें पली नहीं तब सवा विश्वा दया रहगई यानें विचारकर बेकसूर बारकू हलते चलते जीवकू वे कारण मारू नहीं, इति ॥ अब विचारकर जिनमार्गकी वीस विश्वा दया तीर्थंकरकी आज्ञामें चलणेवाला वीतराग सजमी यथा क्षात चारित्रवाला पूरी पाल सकता है बाकी श्रद्धा शुद्ध जिनमार्गका उपदेश करै आरम रहित ब्रह्मचर्यधारी भिक्षाभोजी अचित्त जलपानी सूत्रमें कहै मुजब उपगरण रखणेवाला पचम कालमें सुधर्मास्वामी तथा केसी गणधरकै अविछिन्न परपरावाले एसा होय वो साधू कहाता है, साधूकी दया श्रावकसें पलै नहीं अब विचार एसी दयावाला श्रावक जिनाज्ञा मुजब द्रव्यपूजा करै इसमें सका काहेकी, तू कहता है बाराकाली पडै पीछै जतियोंनें जिनमदिर बणाकर पूजा चलाई है, जबाबमें मालम होय ऋषभदेव प्रभूनें इस अवसर्प्पणीमें जुगकी आदिमें जैनधर्म चलाया उनके चेले पोते शतानी जती कहलायै और ऋषभदेवके सग चार हजार राजर्षियोंनें योग लिया उनोंसे ऋषभदेव जेसा तपध्यान बण नहीं आया तब वो जगलमें गगानदीकी तटपर रहकै कदमूल फल खाणा गगामें स्नान करणा उपवास भी करणा दरखतोंकी छाल ओढणा पहरणा बिछाना और आदि विष्णु आदियोगी आदि ब्रह्मा शंकर शिव बुद्ध इत्यादि एक हजार नाम ऋषभदेवके बणाकर कोई कुटीचर हस परमहस बहूदग इस मुजब तीनसें तेसठ मत चलाया ऋषभदेवके पोते मरीची दडी सन्यासीका भेष खडा किया उसके

चेले कपिलने देवता भये बाद शास्त्रका उपदेश आसुरी शिक्षकू किया साठ तन रचागया इहासें सांख्यमत प्रचलित भया, अब ऋषभदेव जेसें २४ तीर्थंकर भये उनोंमें महावीर प्रभूके शतान तथा पार्श्व प्रभूके शतान दोनोंकी परपराके जती विद्यमान है इन दोनोंके ही प्रतिबोधे भये श्रीमाल ओसवाल पोरवाल वगेरे महाजन विद्यमान है जतीलोकोंनें ताडपत्रपर पुस्तक लिख ज्ञानभडार स्थापनकरा सब जैनधर्म आज भी चलता है वो सब जतियोंका ही प्रताप समझो अन बाराकालीके पहले जिनमदिर थे इसमेंका प्रमाण ज्ञातासूत्रका उवाई सूत्रका विवहार सूत्रका प्रमाण हम पहले लिखदिया है जादा प्रमाण प्रत्यक्ष हाजर है तत्त्व निर्णयप्रासाद ग्रथमें देखलो जो बडे २ विद्वान अगरेजोंकी कलम है (प्र०) मूर्त्तिपूजामें स्याद्वाद केंसें पावै (उ०) स्यात् अस्ति जिन मूर्त्तिपूजा स्यात् नास्ति जिन मूर्त्तिपूजा इति स्याद्वाद (अर्थ) सम्यक्तधारी तथा सम्यक्त व्रतधारी श्रावग द्रव्यभावसें पूजा करणेकी वखत करै ये तो अस्तिपक्ष दिखाया अब नास्तिपक्ष दिखाते है साधू सर्व द्रव्यके त्यागी होगये सो द्रव्यपूजा नहीं करै स्यात् शब्द अस्तिमें हैं स्यात् कथचित् यानें रोगी श्रावक तथा सामायकवत पोसावत श्रावक स्नान नहीं करणेके सबब द्रव्यपूजा नहीं करै तेसें व्यवहार पक्षमें जैनधर्मके श्रावक बजते हैं मगर निश्चयसें अभ्यतर मिथ्यात्वका उदय है एसा श्रावक भी बजणेवाला द्रव्य पूजा नहीं करै इसतरे ही नास्तिपक्षमें स्यात् शब्द है सो स्यात् कथचित् साधू आप द्रव्यपूजा नहीं करै मगर उपदेश देकर करवावे और द्रव्यपूजा करते श्रावककी अनुमोदना करै इसतरै सात भग

होजाता है एसा समझै सो सम्यक्ती एकात पक्षमांने सो मिथ्यात्वी पूजा नाम अहिंसाका है श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रमें साठ नाम अहिंसाके हैं अब तुम विचारो वो कोनसे देवकी पूजा है जिसकू दया सूत्रमें लिखी है (प्र०) भावपूजाकों (उ०) हे मित्र जहा द्रव्य पदार्थसें पूजा होती होय उस पदार्थकी पूजाका परिणाम सो भावपूजा, विना द्रव्यभाव नहीं, निक्षेपेका ख्यालकर, देख दृष्टात जीरणसेठ आहारकी सब सामग्री तइयारकर उस द्रव्यआहारकी दान देणेकी भावना भाणे लगा इसवास्ते द्रव्यविना खाली भावना किस पदार्थकी होती है बारे भावना जो है सो सब द्रव्य पदार्थपर है और गुणकी प्रशसा है वो स्तुति कीर्ति भावना गुणग्राम इत्यादि कहाता है लेकिन् भावपूजा नहीं कहलावै द्रव्यपूजा करते की तारीफ करै उसका नाम भावपूजा है तब क्या साराश निकला जो द्रव्यपूजा तीर्थंकरकी मूर्तिकी सो पूजा अहिंसा ठहरी प्रश्न व्याकरणसूत्रमें लिखा है तब जिनपूजा अहिंसा दसमीकालिकके लिखै मुजब उत्कृष्ट धर्म ठहरा श्रावककै सो मगलीक है, इसवास्ते ही उत्तम काममें जाते भये श्रावकोंके अधिकारमें (न्हायाकय बलिकम्मा) स्नानकर बलिकर्म्म मगल, यानें द्रव्यपूजा करै और पीछै शुभकाम करै विना द्रव्यपदार्थ विना कोई दानकी भावना भावै सो सफल होय या निरफल जेसें (चोपई) रमक झमक बाईरै पगमें कडी, साधूजीनें देखकर बारणो जडी, डागले चढकर भावना भावै, साधूजीनें बहिराया मुगती जावै १ कहो एसी श्रावकणीकों दानका फल मिलै या नहीं, इसवास्ते वित्त चित्त और पात्र तीनों मिलणेसें दान तथा पूजाका लाभ मिलताहै इसतरे जिनमूर्त्तिकी

पूजाकों तीर्थंकरतो अहिंसा कहते है और तुम हिंसा कहकर क्यों कर्म्म बाधते हो (प्र०) चैत्य करावे जिनतणा, सो जिनमतसैं दूर लिख्यो सदेह दोलावली, भाखे जिनदत्तसूर १ इमवास्ते चैत्य कराणा अच्छा होता तो ओसवस वृद्धिकारक आचार्य श्रीजिनदत्त सूरि एसा क्यो लिखते (उ०) अरे हठनादीयेलेख वणाणे वाला करणी दान पजाबी ढूढिया महा मृषावादी था इम सदेह दोलावलीमें निर्सिं चैत्य कराणेकी आज्ञा वदन पूजनका स्वरूप दिखा देवै तो तू मिथ्या मत छोड देवै या नहीं विना उस ग्रथकू अव्वलसें आखरी तक सुणे विगर उसकै परमार्थकू तुम लोक नहीं जाणते पाच प्रकारका अविधि चैत्य तीर्थंकर परमात्मा फुरमाते हैं, चोरासी गच्छके आचार्य अपणे २ लिखे ग्रथोंसें सब मानते हैं पाच अविधि चैत्य १ जेसें कोई द्रव्य लिंगिया याने यती भेषधारी धन एकठाकरकै चैत्य करवावै सो अविधि चैत्य ये वात महानिसीथसूत्रमें लिखी है कमल प्रभाचार्यकू जैन भेषधारियोंनें कहा है हे आचार्य तुम इहा रहोगे तो बहोत चैत्य हो जायगें तब कमल प्रभाचार्यनें कहा है (सावज्जमिणचेइय) यानें भेषधारी साधू मदिरकरवावै तो उसकू सावद्य समझणा २ दूसरा जो कोइ गृहस्थ किसी कामकी बोलवा करी ये झगडा जीत जाउ या धन मिलजावै राजाका दिवान कामदार वण जाउ या मेरे पुत्र हो जावै पुन्य जोग एसी २ कामना पूर्ण होणेसें मदिर वणवावै वो अविधि चैत्य ३ तथा अपणी नामवरी कायम रखणे मदिर वण-वावै वो भी अविधि चैत्य ४ तथा विगर विधिका वणा भया विगर विधि प्रतिष्ठा किया भया अहकार इर्ष्यासें वणा भया यानें इसनें

वणवाया तो क्या में नहीं वणा सकताहू वणवावै तेसें दिगंवर चैत्य यानें इनोंकै भट्टारक मंदिरमें पट्टाविछाकै वैठता है मंदिरमें ही रहता है रात्रीकों पूजनकरवाते हैं इसकारण ये सब अविधि चैत्य है जेसें उपासक दशा उत्राई सूत्रमें आनद अवड श्रावग भगवानसें वोला है हे प्रभू अन्य तीर्थी गृहीत अरिहतका चैत्य (मूर्ति) जेसें वदरीनाथ जगन्नाथ वालाजी पडरीनाथ कल्याणरायजी वगेरे की जैसें इस वखत अन्यतीर्थी गृहीत जिनप्रतिमा है एसी जिनप्रतिमाकू वदन पूजनका इन श्रावकोनें व्यवहार नयसें निषेध करा है मगर आवश्यक सूत्रमें चैत्य वदन अधिकारमें निश्चय नय आशीवचन धरा है (जाइ जिणविंबाइ ताइ सव्वाइवदामि) याने जो जो जिनराजकी मूर्त्तिया स्वर्गमें पातालमें मनुष्य लोक (तिरछेलोक) में विराजमान है उन सर्वोकों वदन करता हू ॥ इस पाठमें सर्व जिनबिंबकों नमस्कार किया है इसमें विधिस्थापित जिनबिंबकों नमस्कार हैं यासबकों सो तत्वकेवली जाणै मगर विवहार नयसें पाच अविधि जिन चैत्य जिनाज्ञा वाहिर है अन छठा विधि चैत्य एकात भक्तीमें लीन होकर मुक्तिका अभिलाषी श्रावक जिनमदिर करवावै वो वदने पूजनें लायक है एसा श्रीजिनदत्तसूरजी सदेह दोलावलीमें लिखा है और अपणे हाथसें हजारों जिनबिंब जिनोंनें प्रतिष्ठा करी हे, वीकानेर पास भी नासर गाममें साहमलजीकोचरका कराया जिनमदिरमें पार्श्व प्रभूकी मूर्त्ति श्रीजिनदत्तसूरिजीकै हाथकी प्रतिष्ठित है दक्षण उजीणमें ब्राह्मनकै घर जमीनमेंसें एक सो इग्यारे जिणबिंब । स १९५१ सालमें निकलै सो सब श्रीजिनदत्त सूरि की प्रतिष्ठित है तुमकों

सका होय तो देखलो प्रत्यक्षमें प्रमाणकी जरूरी नहीं जो जिनदत्त सूरि' मंदिर प्रतिमानिषेध करते तो अपणे हाथोंसें जिनमूर्त्तिकी अंजन सलाका कैसें करते बडे धोखाबाज तुमारे साधू है सो एसे २ झूठे कविता वणाकर भोले जीवोंकों सत्मार्गसें भ्रष्ट करते हैं और अनंतससारी पणेका बीज बोते है (प्र०) श्रीजिनवल्लभसूरि नें संघ पट्टेमें तीर्थयात्रा मना करी है (उ०) हे मित्र वो अवधिसें जो तीर्थ-यात्रा करै उसकी मनाई है पूरा संघ पट्टा सुणलै मालमपडै तेरे पक्षका समाधान आत्मारामजीनें समकित शल्योद्धारमें संघ पट्टेके काव्यका अर्थ करके किया है इसवास्ते में नहीं लिखता में विशेष प्रमाण देताहू जो जिनवल्लभ सूरि तीर्थ नहीं मानते तो नवकार मंत्रकी महिमाका स्तोत्र उनोनें वणाया उसमें एसा क्यों लिखते (जिमसत्तुजयतित्थरायमहिमा उदयवतो सयलमतधुरिएहमतराजा जयवतउ) जेसें सब तीर्थोंका राजा महिमा करके श्रीसत्रुजय तीर्थ उदयवत है तेसें सब मंत्रोंमें धुरि श्रीनवकार मंत्र सब मंत्रोंका राजा जयवता है देखो तुमारी सिद्धि कहाई भी नहीं होते दीखती है (प्र०) व्यवहार सूत्रकी चूलकामें भद्रबाहू स्वामी लिखते हैं चैत्य द्रव्य खाणेवाले जैन लिंगी हो जायगें (उ०) हे मित्र तेरे मूसें कबूल हो चूका चैत्य तो थे मगर चैत्यका द्रव्य खाणेवाले भृष्टाचारी भेषधारी भद्रबाहू स्वामी फुरमाते हैं कै हो जायगें सच तो लिखा है इस हुंडा अवसर्प्पणीमें दस अचरज भया इसकै अनंत उत्सर्प्पणी अव-सर्प्पणी पहले भी एसें ही १० अचरज होगया था महानिशीथ सूत्रमें नवनीत सार अध्ययनमें लिखा है जिसकों वाच २ तुम लोक नाचते

हो वो दश अचरज ठाणाग सूत्रकै १० मे ठाणे जिसका सारास (गाथा) कल्पसूत्रकी टीकामें लिखी है सब जैन सघ पजूसणोमे सुणकर वाकन है उसमें असजयाण पूया लिखा है सो सुण पार्श्वनाथकै शतानी गुजरात देसमें सिथलाचारी बहोत हो गयेथे सोमदिरोमें रहणा मदिरोंका चढापाखाणा एमा अकृत्य करणे लगे रत्नप्रभ आचार्यकैप्रति बोधे भये महाजन सवालाख घर १८ गोत्रवाले उनोंको साधू करकै मानते पूजते थे भडारका धनसें जगे २ अविधि चैत्य वो द्रव्य लिंगी बनाने लगे इसकों फैलते देखा तव महावीरकै शतानी उद्योतनसूरि के निज शिष्य वर्द्धमानसूरि पाचसे पडित ब्राह्मणोंको प्रति बोध सरसा पत्तनमे दिया, उनोंमें मुख्य जिनेश्वरसूरि को तथा बुद्धि सागरसूरि.कों आचार्य पद देकर उनोंकों समझाणे गुजरातकी तरफ विहार कराया उन माहाराजानें अणहिल पाटणमें दुर्लभ (भीम) राजाकी सभामें प्रतिवाद कर ये अकृत्य छुडाया तव राजा तथा पडतोंनें सभामें जिनेश्वरसूरिकों कहा तुमें खराछो चैत्य द्रव्य भक्षकोंकों कहा तुमें कु वलाछो उसदिनसें जिनेश्वरसूरि चद्रकुल बृहद्‌गछीकों लोक खरतरगछ कहणे लगे विक्रम सवत् १०८० की सालमें ये विरुद पाया इनोंका सत्य ज्ञान और यथार्थ क्रिया देख उनोंकै श्रावक जिनेश्वरसूरि के गच्छकों वहुतोंनें कबूल किया इनोके पाटधारी चद्रसूरि ने सवगरग शाला ग्रथवणाकर चैत्य द्रव्य भक्षकोंकों उपदेश करते रहै इनोंकै पाटधारी अभयदेवसूरि उस वखतमे अन्य दर्शनीयोंनेंजवरन् जगे २ जैनसास्त्रोंकों पाणीमें गालदिये उसमें सूत्रोंकी टीका गध हस्ती लिखत सब नष्ट भृष्ट होगई फकत आचा-

राग सूगडागकी टीका शीलागाचार्यकृत किमी जगे रहगई इस वखतमें जैनके बहोत सूत्र ग्रथ निर्युक्तियें नाम होगई, मेरी समझमें ये जमाना शकराचार्यके जुलमका होणा चाहिये, क्योंकि इतिहास तिमर नाशकमें राजा शिवप्रशाद शकराचार्यके होणेका वखत हजारवर्ष करीब लिखता है तब शाशन देवताके वचनसें स्थमणा पार्श्वनाथकी मूर्त्ति प्रगटकर स्नान जलसें गलत कोढ मिटाय वो गधहस्ती टीकाकी करी भई गुरु-मुख धारणा दिव्य साहायमें नव अगकी टीका पीछी लिखी उनोंके पट्टधारी चैत्यवासी चिनाताल गछक् त्याग गुरुकी आज्ञा लेकर वल्लभसूरी भये इनोंनें चामुडा देवीकों मदिरामासका वलिदान छुडाय प्रतिबोध दे सम्यक्त धारण कराया इनोंनें राजपूतोंमेंसें ५२ गोत्र महाजन वणाया इनोंनें पिंटनिर्युक्ति सघ पट्टा वगेरे सो ग्रथ रचकर चैत्यवासियोंकों सत्य उपदेश देकर अकृत्य छुडाया इनोंके पट्टधारी श्रीजिनदत्तसूरि भये इनोंनें सवाक्रोड ह्रींकारका जाप किया तब क्षेत्र २ के देवता उनोंके पायनामी भये ५२ वीर ६४ योगनी ५ पीर जिनोंके हुकम नरदार भये जिनोंनें चितोडके वज्र खमकी उज्जीणमें महाकालके मदिरके वज्रखममें रही स्वर्ण अक्षरमई साढातीन करोड चमत्कारी विद्याकी पुस्तक पाई इनोंनें एक लाख तीसहजार घर राजपूतादि उत्तम वर्णकों जैनी महाजन वणाय दोनों भवसबधी उपगार किया इनोंनें चर्चरी संदेह दोलावली प्रमुख अनेक ग्रथ रचकर रहे खये चैत्य द्रव्य भक्षकोंकी दुर्गति मिटादी जो मार्ग महावीरके शतान पाल्ते थे वो मार्ग चैत्य द्रव्य भक्षकोंनें कबूलकरा सो धर्म अभी चलरहा है अभी भी कोइ भारी कर्मा द्रव्य लिंगिया

मगटया छुपकर चैत्य द्रव्य खाता होय मदिरोंके नामसें गृहस्थोंपास रुपया लेकर आप मदिर करवावे या जीर्णोद्धार करावे ये सब असजतीयोंमें दरज है, उपदेश देणा मदिर कराणेका साधूकू तीर्थंकरोंकी आज्ञा है लेकिन् कराणा और पूजाका काम श्रावकोंका है एसी भगवंतकी आज्ञा पालणेवाले साधू दुप्पह सूरितकरहेंगे इसवास्ते श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामीनें वीरप्रभूकै वचनानुसार चैत्य द्रव्य खाणेवाले भेषधारी होंयगें एसा लिखा सो होगया दसमा अचरज, और प्रायमिट भी गया इस लेखसें तुमारी मतकी जड कटती है, चैत्यतो थै मगर असजती उसका द्रव्य खाणे लगेगें हम ८४ गच्छ चैत्य द्रव्य खाणेवालेको भृष्ट समझते हैं जेसें तुमारे मतका मूलधा छुपकर धन रखै एक जगे विनाकारण रहै फेर प्यादल विहार करे भेष बदल असवारी चढै गृहस्थोंकै सामने लोचकरै उत्कृष्टाई दिखावै कडाके भी निकालै ठढ गरमी सहै त्यागीकै ढगसें कपडा एक गामसें लेकर दुसरी जगे किसी जाट बूटकै हाथ वेचकर लोट कराकर पुस्तकोंमें रखै फेर किसी जगे जाकर दुराचार सेवै बेटा बेटी जणावै गृहस्थोंके घरकी भिक्षा रोटी वेचै फेर परदेसोंमें जाकर पच महाव्रतीका ढग दिखाकर फेर पूर्वोक्त काम करै एसे ढूढिया ढूढणियोकों तू आखोंसें देखता है एसोंको तू क्या समझता है (प्र०) भ्रष्टाचारी द्रव्यलिंगी कुसीलिया एसोंकों साधू नहीं समझता (उ०) बस हे मित्र इसतरे ही वेष तो साधूका और लोच करै प्यादल विहार करै सूझता आहारका ढग लगावै परीसहसहै लेकिन् चैत्यकी ८४ आसातना टालै नहीं, चैत्य द्रव्य विद्धस करै चैत्यका विगाड करता होय और उसकू कुछ नहीं कहै जिन

चैत्यमें ऊनरै इत्यादि काम करणेवालेकों तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब सनातन जैनधर्मी साधू नहीं समझे बहुल मसारी भ्रष्ट समझा जावे (प्र०) हमतो २२ टोले तथा १३ पथियो साधोंसें सुणा है ऊनरणेकी दूसरी जगा नहीं होय तो जिनमदिरोंमें ऊनर जाते हैं (उ०) यक्ष चैत्योंमें साधू ऊतरते हैं मगर उस देवकूं भी पूठ देणा वगैरे अवज्ञा नहीं करते सूत्रोंमें ग्रथोंमें किसी जगे भी एसा पाठ नहीं दिखता सो साधू जिनमदिरमें उतरै, मगर जरूर हमनें पका सुणा है पहले पजाबमें मारवाडादिकमें ढूढिये तेरा पथी केइदफे जिनमदिरमें मासकल्प चोमासातक किया है मगर वेदिन अब नहीं रहे सो जिन मदिरोंमें उतरसके पहले केइदिनोंतक एसा अनर्थ भ्रष्टाचार किया क्योंके भोले गृहस्थ हियाशून्य तुमारे भ्रमजालमें फसणेसें उनोंका विवेक नष्ट होगया और अभी भी एसे सब निरबुद्धियोकी वस्तीं होगई होय उहा उतरते होगें तो कोण जाणै मगर महाराज बुटेरायका भला होय सो पजाब देसमें जिनमदिरोंमें तो अब ऊतरेणेके स्वप्ने आयगा और जिस जगे पडित जती है तथा सवेगी साधू विचरते हैं उहा भी नहीं ऊनरणे पाते दुसरा जैन कोनफ्रसका सपादक ढड्ढा गुलाबचदकों शतस धन्यबाद है सो भारतवर्षके सब जैनमदिरोंकी सार समालका प्रबध सरू है और जहा प्रचार नहीं भया है उहा उतरकर मू बधे बुद्धिहीण आप भी डूबते हैं और उहाके गृहस्थोंकों भी डुबाते हैं साधू जिन चैत्यमें ऊनरते नहीं बीकानेरमें भाडासर नामका मदिर भाडासाहनें स।१४०० सेमें कराया उस जमानेके हिसाब २५ लाख रुपे लगा होगा भाडासाह देवलोक होगया नही तो बावन जिनालयकी पुरती

लगाई थी सो रह गया, इस मदिरमें तेरा पथकों माननेवाले गृहस्थ पोसाकरणा सरूकरा था, सभा मडपमें सोणा, पेसाबउहाइ करके पालसियेमें जमीन पर डाल देकर मदिरमें पालसिया रखणा ५० अदमी प्राये हो जाते थे । इन दोनों मतकारिनाजहै पोसेमें बैठणे वाले गृहस्थ आठ पहुरतक गरम पाणी नहीं रखते हैं, पेसानके पालसियेका हाथ कहासें धोवै, क्योंके गदी कायका क्या गरू रहै दस्त लग जाय तो न मालम क्या करते होंगें उपवासमे उलटी भी वहुतोंको होती है इत्यादिक आसातना उस मदिरमें पोसेमे करते रहै पूनमचदजी उत्तमचदजी सूराणा पहलेतो सनातन धर्मी थे कर्मगति विचित्रताकै कारण भीषमपथी होगये राजकी हुकमतकैसवब कोई भी इस अवज्ञाकी मनाई नहीं करी और इस मदिरकी सारसभालभी कोई नहीं करता था वादभायचदजी साधू वीकानेर पधारे उनोंनें महा आसातना देख जीर्णोद्धारका उपदेस दिया तव जाली चोतरफलगाई वगला निवासी सेठ सावण सुखा हीरचदजीके घराणेसें पहली जीर्णोद्धार सरू भया फेर तो वीकानेरके सघनें तथा सूरजमल नाहटानें मचईसें मदत दिराई धनसुखदासजी लूणिया भीषणचदजीकोठारीके घराणे वालोंनें पूजा वगेरेका प्रवध कराया मदिरमे पत्थरकी फरस सिखरपर कली वगेरेमें रुपया हजारों लगाया गया तवसें भीषमपथी आसातना नहीं करणे पाते एक दिनकी बात है सोगयवरचदजी पारख जो की ढूढकमतकै कुछ जाण कारोमें अग्रेश्वरी पणा धराते हैं उनोंनें महा निसीथ सूत्रका ५ मा अध्ययन नवनीत सार जो की २२ टोलेका एकमताभिमानी गुजरातकै गृहस्थनें अपणे मतकों सच

दिखाणे छापा है सोलाया और मनमें फ़लता भया हमकों दिखाया और बोला देखो इसमें लिखा है साधू और श्रावक दोनों नया मदिर या जीर्णोद्धार करानैयाउपदेसदेतो अनत ससार रुलै तब हमनें विचार कीयाकि ये लोक टव्वार्थमें तों मनचाहाअर्थ आपयालिखा-रोंसें लिखाते आये क्या सूत्रमें भी कोई चालाकी करी हैं क्यों कै हमारा ये अध्ययन पहली पढा भया था, तब हाथमें लेकर देखा तो सूत्रमें तो वोही पाठ था की श्रावक नहीं होय तो साधू मदिर करवा वैया मरमतकरवावैयानहीं एसा कमल प्रभाचार्यकू चैत्य द्रव्य खाणेवाले असजतियोंनें पूछा तब वो कमल प्रभाचार्य मनमें इन असजतियोंमें डरता भया, कारण इसके चरणोंके बीचसे साधवीनें वदना करते पाव पकड लिया था, उसकों इस द्रव्य लिंगियोंने देख लिया था, तब इसनें जाणा पहले तो इसमहरमें मेंनें इन द्रव्य लिंगियोंके कराये भये चैत्य (मदिर) कों सावद्य कहाथा जिस्सें तो इन लोकोंनें जगे २ मेरानाम सावद्याचार्य (यानें पापी आचार्य जगे २ जाहिरकर दिया हैं और अब में जो कहूं दूगा श्रावक नहीं होय तो साधूकू जीर्णोद्धार कराणा तीर्थंकरोंका हुकम नहीं, तो श्रावकोंके सामनें साधवीनें चरण छू लिया इस वातकू सोगन खाकरयेलोक जाहर कर देंगें की जो हमारे सामने साधवियोंसें स्पर्श करता है तो जरूर २ छाने २ कुशील भी सेवता होगा, तो मेरी आबरू जायगी इस डरसें हडवडाकर सभामें बोल उठा उत्सर्ग मार्गमें तो साधू नहीं करवानें अपवादमें करवावें, इस उत्सूत्रसें कमल प्रभाचार्य अनत ससार बढाया, सूत्रमें तो इतना हैं, अब उस छापणे वाले मृषावादीनें इस सूत्रके लेखसें अपणा मूकाला होता देख

सूत्रके विरुद्ध नीचै अर्थमें लिखा है, साधू और श्रावक दोनों चैत्य नया तथा जीर्णोद्धारकरावै तो अनत ससारी होय, तब हमनें पारख जीकों कहा सूत्रमें तो श्रावककी कराणा साबूत होता है, साधूके वास्ते मना है तो तुमारे मतकै झूठका नमूना तो देखो, सूत्र विना जैसें मन कल्पित अर्थ इहा लिखा है एसाही सर्वजगै तुमारे मतका झूठ जाहिर है उस वखतरेखचदजी नाहटा भी हमारे पास बैठा था तब पारखजीनाजवावभयै समझदारोंका धर्म है सो सच दीखै वाद दलील नहींकरे मुक्ति पहुचणेकी इच्छावाला जैनी असत्य पक्षकों छोड मिच्छामिदुक्कडदेवै न्याय पर कायम रहै, और बहुल ससारी मतवादी झूठ जाण भी लेवै तो पकडी दुम नहीं छोडता (प्र०) बाईसटोले वालोंका त्याग किया कठिनता देखकर हमने ये मत । गृहण किया है बाकी तो हमारे वडेरे सब हमारे पितातक इसी सनातन मदिरकी भक्ती करते थे (उ०) हे मित्र अब हम इस बातका जबाब लिखते हैं सो सुणकर तेरे मतावलबीयोंकों बुरा लगेगा तेनें सवेगी साधुओंकों साधू नहीं समझा तो हम न्यायसें तेरे माने भये साधोंके व्रतमें यथार्थ खलल सिद्धकर दिखाते हैं जेसा प्रश्न तुमारा है उसका जवाब लिखा गया है, और भगवानकी आज्ञा मुजब जो तप जपसजम पालते हैं वो जगतकै पूज्य है हम उनकों त्रिकाल वदन करते हैं अन्य मतकै साथ भी द्वेष रखणा जैनियोंका धर्म नहीं क्योंके ब्रह्मचर्य द्रव्यका त्याग क्षमा वगेरे गुण धारै उसकी बलिहारी है अच्छा किया तुष्टान करणे वाले माहात्मा विवहारसें देव मनुष्यकै सुख पाते हैं और इहा लिखणा तो तीर्थ करकै आज्ञा पालै उनोंकै सबध मैं

दिखाणे छापा है सोलाया और मनमें फूलता भया हमकों दिखाया और बोला देखो इसमें लिखा है साधू और श्रावक दोनों नया मदिर या जीर्णोद्धार करानेयाउपदेमदेतो अनत ससार रुले तन हमनें विचार कीयाके ये लोक टव्वार्थमें तों मनचाहाअर्थ आपयालिखा- रोसें लिखाते आये क्या सूत्रमें भी कोई चालाकी करी है क्यों के हमारा ये अध्ययन पहली पढा भया था, तन हाथमें लेकर देखा तो सूत्रमें तो वोही पाठ था की श्रावक नहीं होय तो साधू मदिर करवा वैया मरमतकरवावैयानहीं एसा कमल प्रभाचार्यकू चैत्य द्रव्य खाणेवाले असजतियोंनें पूछा तन वो कमल प्रभाचार्य मनमें इन असजतियोंसें डरता भया, कारण इसकै चरणोंके बीचसे माधवीनें वदना करते पाव पकड लिया था, उसकों इस द्रव्य लिंगियोंने देख लिया था, तम इसनें जाणा पहले तो इससहरमें मेंनें इन द्रव्य लिंगियोंके कराये भये चैत्य (मदिर) कों सावद्य कहाया जिस्सें तो इन लोकोंनें जगे २ मेरानाम सावद्याचार्य (यानें पापी आचार्य जगे २ जाहिरकर दिया है और अब में जो कह दूगा श्रावक नहीं होय तो साधूकू जीर्णोद्वार कराणा तीर्थंकरोंका हुकम नहीं, तो श्रावकोंकै सामनें साधवीनें चरण छू लिया इस बातकू सोगन खाकरयेलोक जाहर कर देंगें की जो हमारे सामने साधनियोंसें स्पर्श करता है तो जरूर २ छाने २ कुशील भी सेवता होगा, तो मेरी आबरू जायगी इस डरसें हडनडाकर सभामें बोल उठा उत्सर्ग मार्गमें तो साधू नहीं करवावै अपवादमें करवावै, इस उत्सूत्रसें कमल प्रभाचार्य अनत ससार बढाया, सूत्रमें तो इतना है, अब उस छापणे वाले मृषावादीनें इस सूत्रकै लेखसें अपणा मूकाला होता देख

सूत्रके विरुद्ध नीचै अर्थमें लिखा है, साधू और श्रावक दोनों चैत्य नया तथा जीर्णोद्धारकरावै तो अनत ससारी होय, तब हमनें पारख जीकों कहा सूत्रमें तो श्रावकको कराणा सावूत होता है, साधूके वास्ते मना है तो तुमारे मतके झूठका नमूना तो देखो, सूत्र विना जेसें मन कल्पित अर्थ इहा लिखा है एसाही सर्वजगे तुमारे मतका झूठ जाहिर है उस वखतरेखचदजी नाहटा भी हमारे पास बैठा था तब पारखजीनाजबावभयै समझदारोंका धर्म है सो सच्च दीखे वाद दलील नहींकरै मुक्ति पहुचणेकी इच्छावाला जेनी असत्य पक्षकों छोड मिच्छामिदुकडदेवै न्याय पर कायम रहै, और बहुल ससारी मतवादी झूठ जाण भी लेवै तो पकडी दुम नहीं छोडता (प्र०) वाईसटोले वालोंका त्याग क्रिया कठिनता देखकर हमने ये मत । गृहण किया है वाकी तो हमारे वडेरे सब हमारे पितातक इसी सनातन मदिरकी भक्ती करते थे (उ०) हे मित्र अब हम इस बातका जबाब लिखते हैं सो सुणकर तेरे मतावलबीयोंकों बुरा लगेगा तेनें सवेगी साधु ओंकों साधू नहीं समझा तो हम न्यायसें तेरे माने भये साधोंके व्रतमें यथार्थ खलल सिद्धकर दिखाते हैं जेसा प्रश्न तुमारा है उसका जबाब लिखा गया है, और भगवानकी आज्ञा मुजब जो तप जपसजम पालते हैं वो जगतके पूज्य है हम उनकों त्रिकाल वदन करते हैं अन्य मतके साथ भी द्वेष रखणा जैनियोंका धर्म नहीं क्योंके ब्रह्मचर्य द्रव्यका त्याग क्षमा वगेरे गुण धारै उसकी बलिहारी है अच्छा नुष्ठान करणे वाले माहात्मा विवहारसें देव मनुष्यके और इहा [illegible] करके आज्ञा पालै उनों [illegible]

इसवास्ते हे मित्र अगर तू त्याग वैराग्य एकात क्रिया कष्ट करणेसें ही २२ टोलोंको गुरुमानने लगा तो देख वनवासी नग्न हाथमें ही भोजन करणे वाले प्राणाति पातादि पांचो व्रतके व्यवहारी रात्री भोजन त्यागी २२ परीषह सहणेवालै तपस्या मास क्षमणादिकरणे वालैं २८ मुनि गुणधारककायोसग्गध्यानी एसे दिगावर मुनिके करोडमें हिस्से तेरे साधोंकी क्रिया नहीं, तो हे क्रिया पक्षी उनोंको गुरू क्यों नही मानता तेरे साधतो स्वेतावरोंके क्रोड पुस्तकोंमेंसें ३२ मानते हैं जिस्सें तू इनोंकों गुरू मानने लगा लेकिन् दिगांबर तो क्रोडमेंसें एक भी मजूर नहीं करतै तो गुरू क्यों नहीं मानता फेर भीषमपथी कहते हैं बाईसटोले कुगुरू है हमारे जेसी क्रिया बाई-सोंकी नहीं थानकमें उतरणे वगेरेकेइयक प्रत्यक्ष दोष दिखाते हैं हुकमचदजीके टोलेवाले आज कल थानक छोडा है सोतो हमारे देखा देखी करणेसें हम उनके गुरू ठहरते हैं, हे मित्र तेरे पथियोंको गुरू क्यों नही मानता (प्र०) भप कहते हैं सो तो सव क्रिया विना श्रद्धा धूडधानी है दिगावर तो ८४ बोल सूत्रोंके विरुद्ध कहते हैं तेरा पथी दया दानकों भूष्टकर डाली अनुकपाजिनोंके चित्तसैं उठगई एसें मिथ्यात्वीयोको गुरू कोण मान सकता है इत्यादि (उ०) हे मित्र तो फेर तेरा सवाल तेरे मूसें ही झठ ठहर गयाके त्याग क्रिया कष्ट जादा करणे वालाजिनाज्ञा रहित होय सो गुरू नहीं (प्र०) वतलावो तुम गुरू किसकू मानते हो (उ०) गूमायनें अधेरा रूमा-यने प्रकास करै अर्थात् अज्ञान रूप मिथ्यात्व अधकार उसकों मिटाणे जिनवचन तत्वका प्रकाश करणेवाला गुरू कहाता है सोहमकों तो

सत् ज्ञान सम्यक्त देणेवाले तथा चारित्रके दाता जतीही गुरूहै (प्र०) जतीलोकोमें क्रिया सिथलता इम जमानेंमें दीसेहै सो कैसा(उ) हा मित्र छद्मस्थतापणेकर केइयक जती लोकोका चारित्रखुंरा दिखता है, मगर श्रद्धा शुद्ध सम्यक्त और शुद्ध ज्ञान जिम जतीमें है, वोकखुंर चारित्रवाला विराधित सजमी सात आठ भवसें मुक्ति जाता है, सुकमालिका तथा ज्ञाता सूत्रमें पार्श्वनाथकी अनेक चेलिया सजम विराधकरभी ईशान आदि देवलोक गई, कोई एका भवतारणी कोई दोय कोई तीन भवसें तिरेगी, शुद्ध उपदेस दै, वो साधू, एसा साधू शब्दका अर्थ देवचद्रजी न्यायचक्रवर्त्तीनें आगम सारमें लिखा है, क्योंके किसीएक मिथ्यात्वी जीवको जैनधर्म ग्रहण कराणेवाला तीर्थकर गोत्र बाधता है, ये तो जती आचार्योंनें लाखो मिथ्यात्वियोंको महाजन बणाया है, और अधीभी मिथ्यात्वी कुलकै, सइकडो लडकोंको, जैनधर्मका तत्वज्ञान सिखाकर, सम्यक्त सामायकवत वणा रहे हैं, जिसका पूरावा, पुस्तक सूत्र सिद्धात जेसलमेर पाटण पट्टण खभायतादिकमें भडारोंकी रक्षा करी, अन्य दर्शनियोंसें प्रतिवाद जीतकर, जैनधर्म कायम रखा, पुस्तकोंकी शुद्धि, हिफाजत, जतीयोंनें करकै, शासन चलाया, (छद) मसूरपठाणगरब्बकियो भइया बाद वदू कोई पडित जागै, साहसलेम बोलाय श्रीपूजकू मोहभरोसाचदन भागै, भट्टारगयो एक चोट शबदकी जीत भई यू जैनकै तागै, बाद जीतो जिनचद भट्टारकयूपतसाह दिल्लीपत आगै १ इसतरें मुसलमान बादसाहोंके सामनें सभा जीती स्वामी शकराचार्यकों जीता वसप्पा जगम मतवादीकों जीता अभी दक्षण नाशक गाममे बाल

चद्रोपाध्यायसूरिनें महाराष्ट्र ३२ पडितोंकों जीता हेदराबादमे आर्या-समाजी याज्ञेश्वरानद सरस्वतीकों ग्रथकर्त्तानें जीता इसतरे जिनधर्ममे सम्यक्तके प्रभावक सइकडों जती विद्यमान है बिना जिनराजके धर्म-विगर और धर्मकू जतीलोक कभी मानते नहीं खरतर श्रीजिनचद्रसूरि त्यागीप्रमुखोनें जैनतीर्थोंकी तथा जैनी महाजनोंकी बाद माहोंमें रक्षा कराई आगे तो जतीलोक त्यागी वैरागी असक्षा भये मगर विद्यमान विचरते हैं शुद्ध जिनमार्गी जिनोंके नाम मोहणजी महाराज खरतर भट्टारक जती साधूके आज ४० ठाणे विचरते हैं उपाध्याय क्षमा कल्पाणगणि जती साधूके सतान साधू साधवी डेढसे ठाणे विचरते हे शिवजी रामजी मयाचदजी किरपाचदजी जती साधूके १५ ठाणे विचरते हैं तथा तपागच्छी सत्यविजयजी जतीसाधूके सतानी बूटे रायजीके सब मिलाके ५०० सें ठाणे विचरते हैं राजेंद्रसूरि तपा-गच्छी जती साधूके ४० ठाणे विचरते हैं पार्श्वचद्रसूरिके भायचदजी जती साधूके ४० ठाणे साधू साधवी विचरते हैं मेनें प्रसिद्ध २ नाम लिखे हैं और भी बहुतसें विचरते हैं परिग्रह रहित पचमहाव्रतधारी ज्ञानयुक्त जिनाज्ञा पालक विद्यमान है सवेग तो सम्यक्तकी भावनाका विरुद है ये अव्वल दरजेके साधू विद्यमान है इनसें तेरे २२ टोलेके साधोंमें कोनसी क्रिया त्याग वैराग्य जादा है सो बतला तेरे २२ लोच करते हैं सवेगी भी करते हैं प्यादळ विहार दोनू करते हैं द्रव्य रुपया पैसा दोनु पास नहीं रखते हैं ग्रहस्थोंसें वेयावच्च दोनू नहीं कराते हैं गरमीमें खुली छत दोनू नहीं सोते हैं गृहस्थोंके घरसें दोनु भिक्षा लाके खाते हैं स्त्रीके दोनोंही त्यागी है नवकल्पी दोनों विहार

करते हैं इत्यादि क्रिया तो दोनोंकी एकसी है तो तेनें एसें बुद्धिवान महाज्ञानीयोका गुरुभाव जतीत्यागी साधुओंका क्या समझकै छोडा(प्र०) में इनोंको पडित तो पक्का समझता हू मगर साधू नहीं मानता (उ०) हे मित्र तेरा मतलब इतना है जिन प्रतिमाकी निंदाकरै द्रव्यभाव पूजा करणेवाले गृहस्थकों मूर्तिपूजा छुडावै देवर्द्धिगणि तथा खदिलाचार्य वगेरे केलिखे क्रोड पुस्तककों न मानै सूत्रोकैं पाठ मुजब जिनका भेप नहीं होय वासी विदल अभक्ष खावै एसोकों गुरु मानता है वाहरे हिया शून्यगडर प्रवाही, में ये पूछता हू तू जादा क्रियापालै उसकों साधू मानता है या जादा जैनशास्त्र पढा ज्ञानीको साधू मानता है या ज्ञानी भी पूरा और पचमकालमें सूत्रोक्त विधीकी क्रिया भी पूरी पालै एसोकों गुरू मानता है (प्र०) तीसरा भग पिछला पूराज्ञानी पूरी क्रियावालेको गुरु मानता हू (उ०) तब तो जती सवेगी साधूही गुरू ठहरते हैं क्योंकै पद्शास्त्र जैनशास्त्र अन्यदर्शनियोका शास्त्र जैसा जती सवेगी साधू पढे हैं वेसा न तो ढूढक पढे है न तेरा पथी ३२ सूत्र काटव्वार्थ भापा पढली तो जाणै बुझबुझाकड जी होजाते है मगर पंडित अन्यदर्शनियोंकै सामने पडित देखें मुकावलेमें कौण निकलता है दुसरा तेरे गुरू शास्त्रार्थमें सूर्यकैसामनें आगिये जेसें मालम पडते हैं व्याकरण काव्यकोश छदअलकार सस्कृत मागधी टीका निर्युक्ती भाष्य वगेरे तेरे गुरू कुछ नहीं पढे हैं इसवास्ते ज्ञान भी सवेगी साधुओंका अवल दरजे और क्रिया भी तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब जादा है सो सुण पहिला प्राणाति पातनत सर्वव्रतोंका मडण है दुसरा झूठका त्याग सर्व व्रतोंकी जड ... व्रत साखा है इन तीनोंमें पूरी गलत तेरे

मानें सावोमें है जहातक २२ अभक्ष नहीं त्यागै उहातक देशव्रतधारी श्रावक भी नहीं होता तो साधू कैसें होसकै जिह्वाके लालची जीवघाती, जिस चीजका रग बदल जाय गध बदल जाय स्वाद पलट जाय स्पर्श बदल जाय या दीसतमें नही भी बदले मये मालम दै लेकिन् तीर्थंकरनें बताई उस मुद्दतसें जादा दिनकी पकाईकी मुद्दत बीतजाय एसी भक्षवस्तू भी अभक्ष होती है जेसें तीन उकाला दिया भया पाणी बरसातकी मोसममें ३ पहर बाद जीव युक्त होजाता है शीतकालेमे ४ प्रहर बाद उष्णकालमें ५ प्रहर बाद इसी तरे पक्की बामणीकी मिठाईमारवाडादि क्षेत्रमें उनालेमें २० दिन ठढकालेमें १ महीना बरसातमें १५ दिन पूरब वगेरेमें जल पडा रहे एसे देसमें जलदी खराब होती है इसतरे मरणेका जन्मका सूतक श्रावका चार ग्रथोमे लिखा है सो बात डाकतरोंने यन्त्रद्वारा देखके प्रत्यक्षमें निश्चय करलिया है कै जिस जगे बच्चा जननेका घर है उहा जो दुरगधी उठती है वो सब छोटे २ जीवोंको पैदा करती है हवाके सग नाकमें जब वो जीव घुसते हैं तब मनुष्योंको गध मालम देती है तीर्थंकर परमात्मा दुरगधित मासके परमाणु उडणेमे चोदे स्थानक स मुर्च्छिम पचेंद्री जीवोंका पैदा होणा पन्नवणा सूत्रमें फरमाते है वो परमाणूके जीव दशइग्यारे दिनसें हवासें कुछ तो निकल जाते हैं बाकी शुचिपणानीपणेपोतणेसे साफ होते हैं इसी तरे ही जहा मनुष्य मरता है उहा भी दुर्गंध मृतकपरमाणूओंके बिखरणेसे वोही जीवरासी १२ दिनतक साफ बीरे २ होते है फेर सुचिताईसे, एसे जन्ममरणकै सुतकके घरका आहार पाणी जो साधू लैता है उसको मासकै दुर्गंध

पुद्गलखाणेका तथा समुर्छिम पचेंद्री जीवोकी हिंसा लगै सो बाईसटोला और तेरा पथी बेधडक बहिरके खाते पीते है ये प्राणातिपात पहला व्रत भग, चालीसदिनतक जापेवाली स्त्रीके हाथका आहार पाणी इसीतरे दुरगधित माम पुदगलका पाप लगै सो तुमारे दोनों २२। और १३ दोनों लेते हैं जापेवालीके वास्ते लड्डू जो गृहस्थ बणवाते हैं सो तेरे साध लेकै खाते हैं, ठाणाग सूत्रमें रुधिरकी असिझाई कही २२। तथा १३ दोनोंके मतमें स्त्रीके ऋतु धर्मकी छूत छात नहीं मानते हैं, बाईस अभक्ष जिसमें द्विदल यानें जिसके दो फाड होय एसी सब दालकी जात बैसण वगेरेकै सग, कच्चा दही छाछ विन अग्निपर गरम किये बिगर मिलाणेसें बे इद्री जीव पैदा होता है, सो ढूंढिये तेरा पथी साध छाछ खीचडा बहोत मिलाकै खाते हैं, डाकटर लोक भी, मूग मोठके पदार्थ सग दूध गोरस मिलणेसें, सुक्ष्म जहरी कीडे पैदा होता है, एसा साइन्ससें निश्चय किया है खाणेसें रोग होणा कहते है, बासी रोटी मालपूआ वडे खीचडादि सब बासी जिसमें तातू पडते हैं, वो सब बे इद्री जीव है एसा पाणीके गीलास वाला अभक्ष है, आर्य वैद्यक शास्त्र तथा डाकटर एसीवस्तूसैं कोढ रोग पैदा होणा कहते है, सिद्धात वोही निकला, वो जीव खुनमें जाके कोढ पैदा करता है, आचार अभक्ष सो मार्यें बहोतसे ढूढक तेरा पथी प्रगट खाते हैं, तुमलोक तो तारीफ कर २ थाकते हो धन्य २ साध सो ठढा बासी दलिया सिरावडी जो कुछ मिला सो लेकर साध खा लेते हैं जिव्हा इंद्री ... किन् जिह्वा इद्री तो कुछ जीती न जिताई, भूख तो ... इसवास्ते ठढा बासी तो गाव गोठमें सुथार

हरजातकै घर मिल जाता है इय एक तो भूख परीसहसहणेकी ढीलाई, दुसरे गिमार शोभा करे मगर बे इद्री जीवोंको खाकर महाहित्यारा पणा करणा, दुसरे तीर्थंकरकी आज्ञा तोडणी, इसतरे पहिला व्रतभग, फेर साधुओंकों तीर्थंकरका हुकम है सो दोघडी सूर्य उदय होते वखत और दोघडी दिन पिछला रहणेसें लोईसें सिरढाकै विगर साधू अछायामें नहीं निकलणा क्योंके तमस्कायकी बरसात हरवखत भया करती है मगर सूर्यकै धूपकी गरमीसें आकाशमें ही सूक जाती लेकिन् प्रभात सध्या सूर्यकी तेजी कम होणेके सबब, उन जीवोकी हिंसा साधूकै अगपर गिरणेसें होती है इसवास्ते प्रगट जैनधर्ममें लिखा है दोघडी दिन चढै और दोघडी दिन बाकी रहै तब साधू श्रावक भोजन करे तो रात्री भोजनका दोष लगै ये बात २२।१३ दोनों मानते हैं तो भी उघाडे सिर न्नेनों साध २२।१३। फिरते हैं इत्यादि महा हिंसकता तीर्थंकर आज्ञा विरुद्धपणे कर पहिला व्रत तेरे गुरुओंमें नहीं, डाकटर लोक भी हरदम पाणी बरसता है हवाकै सग एसा मानते हैं किसीकू सका होय तो एक सीसी एसी बनाई है सो उसमें हवाकू हाथकै झपट्टेसें भरते हैं अदर पाणीकी बूंदें आजाती है ये प्रत्यक्ष प्रमाणसें २२। और १३ हिंसक ठहरते हैं १ दुसरा आचाराग सूत्रमें २१ जातका पाणी साधुओंकों लेणा लिखा उसमेंका पाणी तेरे साधोंको बहोत कम मिलता है गोबर थापणेसें पीछा रहा सो पाणी हलवायोंकै कढाईका धोवण मटकेका धोवण आटे ओसणा भया कठोतीका धोवण इत्यादि धोवण कचा मिश्रजळ २२।१३ दोनों प्यास नहीं सहणेके सबब लेकर पीते हैं एक माटे पाणीमें एक मूठी

राख डालकर तइयार कियाभया पाणी मिश्रजल तेरे पथी साधोंकों लेते मेने देखा है सदा सुख नाहटेकी दादी तेरे पथ मानणेवालीनें बहिराया स १९२७ में ये पहिला प्राणातिपात व्रतका विद्रसपणा तेरे साधू करते हैं १ अब दूसरा झूठका त्याग, सो द्रव्य झूठ तो अन्य मतियोंमें त्यागणेवाले बहोत है मगरभाव झूठ तो तीर्थंकरकी आज्ञा पालनेवाला साधू ही त्याग सकता है सो तेरे साधू बेधडक बोलते हैं प्रश्न व्याकरण सूत्रमे लिखा है जहातक साधू व्याकरण नहीं पढे और सूत्र वाचकर सुणावै तो मृषावादी होता है सो तुमारे २२।१२ दोनों बिना व्याकरण पढे सूत्र वाचते हैं विवहार सूत्रमें दीक्षा कै पर्याय मुजब सूत्र वाचणा लिखा है सो मर्याद २२। १२ दोनोंमें नहीं योग उपधान वहेबिगर सूत्र नहीं पढणा सोविना उपधान वहेबिगर दोनों सूत्र पढते हैं, गृहस्थकों भी आवस्सक सूत्र उपधान वहायकर पढाणा, बाकी सूत्रोंमें जगे २ अर्थका जाणकार श्रावक पडित कहा मगर बाकी सूत्र पढाणेकी आज्ञा नहीं कोइ सका दिलमें गृहस्थकै होय तो पाचगाया श्रावक देख सकता है लेकिन् तुमारे मतकै गृहस्थ सूत्र वांचते हैं ये आज्ञा विराधकता करते हो सो भाव मृषावादी हो, तेरा पथी गृहस्थको सूत्रवाचणेकी मनाई करते हैं, क्रोड ग्रथ चोदै पूर्व धर दश पूर्वधरोंकै बनाये सो सव नहीं मानते उसमेंमें कुछ मानते कुछ नहीं मानते हो ये सब भाव मृषावादीकै लक्षण हैं दुसरा व्रतभग २ तीसरा व्रत चोरी सो द्रव्य चोरी तो अन्य दर्शनी भी त्यागते हैं, लेकिन् भाव चोरी तो जैन साधू ही टाल सकने हैं, सो तुमारे साधू तीर्थंकरकै चोर, और ठोंका गुरू तेरा उसके भी चोर, प्रथम तो

लोंका आप गृहस्थी, उसने मूणेकों भेप दिया, ये तो तीर्थकरकी चोरी, विना गुरु सूत्र तेरे मूणेनेंट्यार्थमें पढा, लोंके गृहस्थसे और निसीत सूत्रमें लिखा है, गृहस्थमें पढे तो दड आवे ये तीर्थकरकी चोरी, अब ढूढकोंकी चोरी सुण, जो लोंके बजरगका भेप था, सो लवजी २२ सोनें रखा नहीं, लोंका जती हरदम मूंके पदा नहीं बाधता, २२ सोनें बाधा, लोंकेके पडिकमणेसें २२ सोंकापडिक्रमणा जुदा पातरोंकी झोली लोंकेसें २२ गोचरीकी वखत और तरे ही रखते हैं, पातरोंका रग और, लोंके जती चदर पागरणी रखते हैं, २२ और ही तरें कपडोंके टुकडे गाठ लगाकर बाधते है, २२ टोले पडिकमणेमें अपणे गुरु लोंके लिखा रीकों वदना करते हैं या नहीं, ये सब क्रिया २२ सों की गुरु अदत्त है, और ओघनिर्युक्ती सूत्रमें भद्र बाहू स्वामी १४ उप गरण साधूके किस प्रमाणसे होणा, २५ साधवीके उप गरण किस प्रमाण होणा, इत्यादि विधिदरसाई है, इसवास्ते तेरे साध उस मुजब उप गरण तथा क्रिया नहीं करणेसें तीर्थ कर अदत्तसेवते हैं, और गृहस्थोंको जन सम्यक्त उचराते हैं तब देव अरिहत १ गुरु निग्रथ २ केवलीकथित धर्म ३ अब तू विचार तेरे २२। और १३ निग्रथकेमे हें सो लिखते हैं प्रथम तो द्रव्य निग्रथ १ दुसरा भाव निग्रथ २ तेरे साधोंमें दोनों निग्रथता नहीं है जीसके बाहर गाठहोय और अदरमें गाठ होय वो निग्रथ केसें झोलीमे गठि ओघेमें गठी और चद्दरगठि लगा करवाधे और पुस्तक रूप ग्रथ पासमें रखते हैं इत्यादिक द्रव्य ग्रथ तेरे साधोके हैं और क्रोध मान माया लोभकी देहीकी ममता रूप भाव ग्रथकायम है इसवास्ते निग्रथ नहीं अब

निग्रथ गुरू तेरे साध नही है (प्र०)तुम निर्ग्रंथ गुरू नहीं मानते हो (उ०)हे मित्र हमतो गुरु सुसाधू मानते हैं निग्रथ नामही तेरमें गुण ठाणे केवलीका है जिनोंके मोहकर्म तदननास होता है साधुओंका नाम निग्रथकेवलीकी अपेक्षा है छद्मस्थतो साधु वजते हैं जती अणगार ऋषीमुनि भिक्षुक इत्यादि सामान्य नाम साधूकै हैं निग्रथ कैकहे मुजब प्रवचनकी क्रिया करें उसकू निर्ग्रंथ कहा है जेसे इद्रका नाम मघवा है लेकिन् मघवानाम देवइद्रका नोंकर है इसवास्ते लोक इद्रकू मघवा कहते हैं इसतरे क्रिया सवधसें साधूकू निग्रथकेवलीकी अपेक्षा लिखा है अशुद्ध नैगमनयकी अपेक्षा है, साधू केवली होणेकी क्रियामें प्रवर्त्यो हैं मगर इसतरै निश्चयनयकी अपेक्षा, जिसका एक व्रतभग उसकैं पाचों ही व्रतभग और व्यवहारसे स्त्रीका त्याग धनका त्याग तो अन्य भी लाखों दर्शनियोंने भी कर रखा है तो उन दर्शनियोंकू तुम लोक साधू गुरू करकै मानते पूजते क्यो नहीं मतलब जिसका एक व्रत तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब नहीं उसका वाको भी व्रत निरफल समझणा इसवास्ते तीर्थंकरकै आज्ञा मुजब ५ महाव्रत जती सवेगी साधोंमें हैं तेंनेकाचकोंरत्न समझ ग्रहण करलिया चिंतामणी रत्नकों छोड दिया (प्र०) पचइद्रीजीते सोजती सो तो फकत नाम मात्र है गुणजतीकै कहां (उ०) हे मित्र निश्चय तो केवली जाणै मगरविवहार नयसें पूछते हैं तेरे साधु आखोंसें पाचरग देखते हैं या नहीं कानोंसें तीनों शब्द सुणते हैं या नहीं नाकमें दोनो गंध आती है या नहीं जीभसें आहारादिकरते पाच रसका स्वाद जाणते हैं या नहीं स्पर्शन इद्रीसें आठ विषयकू जाणते हैं या नहीं तो फेर जितेंद्री क्या समझकै मानता है (प्र०

पाचों इंद्रियोंके २३ विषय जांणते हैं मगरराग द्वेष इन पदार्थोंपर नहीं करते हैं (उ०) तेनें किम ज्ञानसें जाणा की सब जती तो २३ विषयोंपर राग द्वेष करते हैं ढूढक नहीं करते हैं जोजती वस्तुके स्वरूपकू अच्छीतरें जाण गया है उसका पाचो इंद्रियोंका भोग भी निर्जराका हेतू है (जेसें समयसार नाटकमें लिखा है (ज्ञानीको भोग सो निर्जराको हेतु है अज्ञानीको भोग सो बधफल हेतु है ये अचरजकी बात हिंये नहीं आवें, पूछेकोईशिष्यगुरूसमझावें १) पूर्वजन्ममें जो पुन्य प्रकृती बाधी है, उस कू भोगते अगला कर्म निर्जराते हैं दुसरानये कर्म्म बाधते नही, और त्याग वैराग्यका क्रिया आडबरतो खूब दिखावें, लेकिन् वस्तूका स्वरूप कुछ जाणे नहीं, वो अल्पभोग भोगते ही कर्म्म नये बाधलेते हैं (प्र०) वस्तूका स्वरूप क्या चीज है (उ०) उसकू जाणनेकू पहली तो नवतत्व, बाद समाधि धारण मुद्रा और बध ध्यान आसन, तीसरे दरजे अध्यात्म, चोथा दरजा पचमकालमें बणे नहीं तेरे गुरु नवतत्वके आगे कुछ नहीं जाणते, अध्यात्म जोगका स्वरूप ढूढिये तेरा पथी कोई भी नहीं जाणता और जती पडित तथा सवेगी साधू सईकडों जाणने वाले विद्यमान है इसका नाम वस्तूका स्वरूप जाणना है जतीयोंमें सम्यक्त युक्त पचखाणी सामायक पडिक्कमणा स्वाध्याय जपतप करणे वाले सज्वलनाकी चोकडी वालै बहोतसे विद्यमान है पूरा रागद्वेष तो पचमकालमें छूटणा नहीं है क्योंके मुक्ति नहीं जिससें (प्र०) हमने जतियोंकों पाचों इंद्रियोंका सुख भोगते देखा है (उ०) अरे मूर्ख क्या ढूढकोंकों नहीं देखा है अज्ञान कर्म जब धका मारता है तब

ढूढिये तेरा पथी जती औरश्रावकसब एक माजने ऊतरते हैं, तेरे त्यागी साधू उपवास विगर खुलेदिनभाग्यवानोकी वस्तीमें जादातरहमेस-तरावटमालखातेहै, जतियोकों छठे छमास, पाचों इद्रियोंमें जिह्वा इद्री वसकरणी मुसकल है (प्र०) २२ टोलेके साध थाजे बेला तेला वगेरे थाह्य तप भी तो बहोत करते हैं, (३) हा मित्र तरावटमा लखाणे वाला, जो लघन नही करते तो, आम बातकी बेमारी, मेद वृद्धि, अजीर्ण वगेरे जादा रोग भी तो होजाता है, और लुखी रोटी, तथा हमेस ऊनोदरी गोचरीमें करणे वाले जतीलोक जादा तप लघन करै तो बादीका लकवा क्षयकी बेमारी होजाणा सभव है और जो जादा पढणेमें उद्यम करेगा तथा ध्यानमें एकाग्रता करेगा उसजती सवेगी साधूसें बेला तेला वगेरे जादा लघन भी पचमकालमें बण नहीं सकेगा भापाकी रागणिया भापाकै बोल चाल सीखणे वाले तरावट खाणे वालेकू लघन करणा भी एक दवा है चरक वैद्यने लिखा है बढे दोषों कू मिटाणेमें, लघनपरमौषध, (प्र०) जतीलोक असूझता आहार पाणी बहिरते है और प्रत्यक्ष सावद्य वस्तू जाणते हैं और लेते हैं साधू कोण कहसकता है (उ०) हे मित्रसूत्रोका आशय तेरे ख्यालमें नहीं पचमकालमे सब छद्मस्थ साधू है कोईकी क्रिया उची कोईकी मध्यम कोईकी जघन्य उन सबोंका छठागुण ठाणासूत्रमें लिखा है (प्र०) छीछी एसा कमी नहीं किस सूत्रमें लिखा है ३२ सूत्रमेका पाठ बतलाओ (उ०) हे मित्र थोडा सा बतलाते हैं मगर फेर मूलकै जतीलोकोकों सिथला चारी असाधू सूत्र मर्यादा उलाघकै मत कहणा श्रीठाणाग सूत्रकै सातमें ठाणेका पाठ (सूत्र)

सत्तहि ठाणेहिं छउमस्थ जाणिज्जा, (सातथानके करी छद्मस्थजाणवा,) (पाणाअइवाइत्ताभवति,) (प्राणातिपातनो करवावालो होय) मुसव इत्ताभवति) (मृषावादनो बोलवावालो होय) अदिन्नमादित्ताभवति) (अदत्तादाननो लेवावालो होय) (सद्दफरिसरसरू वगंधे आसादित्ताभवति) (शब्द स्पर्शरसरूप सुगंधनो सेवनारो होय) (पूयासक्कारमणु बुहेत्ताभवति) (पूजा सत्कारनी वाछावालो होय) (इमसावज्जति पन्नवेत्ता पडिसेवित्ता भवति) (सावद्यवस्तु जाणतो छतो सेवनारो होय) (णोजहावादीतहाकारियाविभवति) जेहवो मुखथी उपदेसदे तेहवी क्रियापाले नहीं) अब हे मित्र तू बतला, तू जिनोंकों साधू मानता है, वो छदमस्थ है या केवली, जब छदमस्थ है तो देख, छदमस्थोंकी चलण तू यू मतकहदेणाके ये काम अजाण पणे होजावैं, सूत्रमें प्रगट लिखा है पापकारी वस्तू जाणता है तो भी सेवता है ज्ञानी ध्यानी छदमस्थ साधूतो कर्मसे केवल ज्ञान चोथे अरेमें पाते हैं पंचमकालमें भवातरसें, मगर तेरे ढूंढक साधतो, फूटीदेगची, और कलीकी भडक लगा रखी है, जती सामान्य वृत्तिवालोंनें, कपट करणा बुरा समझ छोड दीना है कपट क्रिया, बाकी उचा गिरनार तो कम आबूकू भी मत जाण (प्र०) सात बोलों में झूठ भी बोलणा लिखा है (उ०) कोई कुल साधूपणेके कलक लगणे रूप खान पान कर लिया है और कोई गृहस्थ पूछे तो मेषकी लज्या रखणे झूठ बोले मगर तीर्थकर प्ररूपित तत्वसे उलटी प्ररूपणा नहीं करै हिरणकी बाबत सिकारी पूछे तो देखा भी अण देखा कहै कारणयोग चारों भाषा मुनि बोलै एसी आज्ञा है आचा-

रागमें, लेकिन् उत्सूत्र झुठ नहीं वोलै एसा समझ तेरेपरपराके धर्मा चार्य जतीलोक है उनोंसे द्वेषबुद्धि छोड जिन मार्गमें व्यवहार बलवान है जो पालै सो अच्छा है लेकिन् ज्ञानवतकी वलिहारी है जेसे भरत राजाको आरीसा भुवनमें विना क्रिया केवल ज्ञान भया आपाढ भूत भरतराजाका नाटक करते नकलसे केवली होगये इलापूत नटवेकी तरें नाचता केवली भया पनरे भेदसें सिद्ध होते हैं इसमे ज्ञानवतोकी ही विशेषता दरसती हे, वाकी ज्ञानकेसाथ क्रियासामिल होणेसें तिरें इसमें तो सकाही क्या, जती भी छदमस्थ जैन भेपधारी सामान्य वृत्तिवाले साधु है तत्व केवली जाणे (प्र०) तुमने सव त्यागी सवे-गियोंके अव्वल गुरु जती दरसाये तो त्यागी होकरके पीला वस्त्र क्यू पहरा है, गौतमादि गणधरोसे लेके खरतर भट्टारक श्रीजिनचद्र-सूरी.जोकी विक्रमसवत् १५०० से के उतरते भये तपाहीरविजय-सूरिः इन दोनोंका त्याग वैराग्य जग जाहिर है तो उनोके वस्त्र तो सपेद ही मेनें सुणा है आचारागमें लिखा है (सुकवरायसमणा) इत्यादि अनेक प्रमाणोसे श्वेतावर पक्ष सचा मालम देता है नरगणा न धोणा एसा लिखा है इन तुमारे सवेगियोमे शिवजी रामजी भाय चदजीके साधू राजेंद्र सूरजीके साधू नहीं रगते हैं वाकी रगते हैं (उ०) रगणेका कारण अपवाद मार्ग है सो हमनें तपा सवेगियोंसें एसा सुणा है के मेडता नगरमें स १७६० की सालमें ढूढक ऋपोनेंके इयक सनातन धर्मियोके रिदयमें जिनमूर्त्तिकी द्रव्य पूजा जो अहिंसा तीर्थंकरोंनें कही उसकू हिंसा कहणे लगे तव सघने विजयसिंघ सूरिः को वीनती भेजी आचार्यने सत्यविजय अपणे शिष्यको, हुकम दिया

सत्तहि ठाणेहिं छउमत्थ जाणिज्जा, (सातथानके करी छद्मस्थजाणवा,) ("पाणाअइवाइत्ताभवति,) (प्राणातिपातनो करवावालो होय) मुसव इत्ताभवति) (मृषावादनो बोलवावालो होय) अदिन्नमादित्ताभवति) (अदत्तादाननो लेनावालो होय) (सद्दफरिसरसरू वगंधे आसादित्ताभवति) (शब्द स्पर्शरसरूप सुगधनो सेवनारो होय) (पूयासक्कारमणु बुहेत्ताभवति) (पूजा सत्कारनी वाछावालो होय) (इमसावज्जति पनवेत्ता पडिसेवित्ता भवति) (सावद्यवस्तु जाणतो छतो सेवनारो होय) (णोजहावादीतहाकारियाविभवति) जेहवो मुखथी उपदेसदै तेहवी क्रियापाले नहीं) अब हे मित्र तू बतला, तू जिनोंकों साधू मानता है, वो छदमस्थ है या केवली, जब छदमस्थ है तो देख, छदमस्थोंकी चलण तू यू मतकहदेणाके ये काम अजाण पणे होजावै, सूत्रमें प्रगट लिखा है पापकारी वस्तू जाणता है तो भी सेवता है ज्ञानी ध्यानी छदमस्थ साधूतो क्रमसें केवल ज्ञान चोथे अरेमें पाते हैं पचमकालमें भवातरसें, मगर तेरे ढूढक साधतो, फूटीदेगची, और कलीकी भडक लगा रखी है, जती सामान्य वृत्तिवालोंनें, कपट करणा बुरा समझ छोड दीना है कपट क्रिया, बाकी उचा गिरनार तो कम आवूक् भी मत जाण (प्र०) सात बोलों में झूठ भी बोलणा लिखा है (उ०) कोई कृत्य साधूपणेके कलक लगणे रूप खान पान कर लिया है और कोई गृहस्थ पूछे तो भेषकी लज्या रखणे झूठ बोलै मगर तीर्थंकर प्ररूपित तत्वसें उलटी प्ररूपणा नहीं करै हिरणकी बाबत सिकारी पूछे तो देखा भी अण देखा कहै कारणयोग चारों भापा मुनि बोलै एसी आज्ञा है आचा-

रागमें, लेकिन् उत्सूत्र झूठ नहीं बोलै एसा समझ तेरेपरपराके धर्मा चार्य जतीलोक है उनोंसे द्वेषबुद्धि छोड जिन मार्गमें व्यवहार चलवान है जो पालै सो अच्छा है लेकिन् ज्ञानवतकी बलिहारी है जेसें भरत राजाको आरीसा भुवनमे विना क्रिया केवल ज्ञान भया आषाढ भूत भरतराजाका नाटक करते नकलमें केवली होगये इलापूत नटवेकी तरै नाचता केवली भया पनरे भेदसै सिद्ध होते है इसमें ज्ञानवतोकी ही विशेषता दरसती है, बाकी ज्ञानकैसाथ क्रियासामिल होणेसें तिरै इसमें तो सकाही क्या, जती भी छदमस्थ जैन भेषधारी सामान्य वृत्तिवाले साधु है तत्व केवली जाणै (प्र०) तुमने सब त्यागी सवेगियोंके अव्वल गुरु जती दरसाये तो त्यागी होकरके पीला वस्त्र क्यू पहरा है, गौतमादि गणधरोसें लेके खरतर भट्टारक श्रीजिनचद्र-सूरी जोकी विक्रमसवत् १५०० से के उतरते भये तपाहीरविजय-सूरि इन दोनोंका त्याग वैराग्य जग जाहिर है तो उनोंके वस्त्र तो सपेद ही मेंने सुणा है आचारागमें लिखा हे (सुक्कवरायसमणा) इत्यादि अनेक प्रमाणोसे श्वेताबर पक्ष सचा मालम देता है नरंगणा न धोणा एसा लिखा है इन तुमारे सवेगियोमें शिवजी रामजी भाय चदजीके साधू राजेंद्र सूरजीके साधू नहीं रगते है बाकी रगते है (उ०) रगणेका कारण अपवाद मार्ग है सो हमनें तपा सवेगियोंसें एसा सुणा है कै मेडता नगरमें स १७१० की सालमें ढूढक ऋषोनेके इयक सनातन धर्मियोके रिदयमें जिनमूर्त्तिकी द्रव्य पूजा जो अहिंसा तीर्थकरोंनें कही उसकू हिंसा कहणे लगे तब सघने विजयसिंघ सूरिः कों बीनती भेजी आचार्यने सत्यविजय अपणे शिष्यकों, हुकम दिया

तन सत्यविजयजी क्रिया उद्धारी अपणी उत्कृष्टता दिखाणे कत्थेचूनेका वस्त्रकू रग दिया अपणा उत्कृष्ट त्यागीपणा दिखाणे कारण उस वखत सघकै आग्रहसें जतीलोक आदेसपर एकेक जगे तीन २ वरसरहणे लग गये थे इनोनें नवकल्दी विहार करुठ कराया इत्यादि निष्परि ग्रहताके कारण अपणी वैराग्नताका चिन्ह दरसाकर मेडतापहोंचते ही ढूंढिये हार गये वो पीले वस्त्रकी परपरावाले सवेगी साधू वजणे लगे इसीतेरे ही नीलणफूलणजू लीख वगेरे पडणे नहीं पावै अमृतधर्मजी कै क्षमा कल्याण गणिनें खरतर गच्छकै त्यागियोंमें कत्थेका वस्त्रकू रग दिया महानिशीथ सूत्रमें लिखा है (कत्थेणवा लुद्देणवा पउमचुन्नेनवा) इस सूत्रकी साखसें एक चद्दर रगते हैं बाकी श्वेताबरताकू कबूलकरते हैं (प्र०) इस सूत्रमें स्यात् पात्रोंका रग कहा होगा (उ०) हे मित्र पातरोंकै कत्थेका लोदका पद्म चूर्णका रग चढता नहीं हिंगलू सुपेदा कजली रोगानसें लगता है जरा अक्कलसें खुदा पहचान (प्र०) क्यों जी ये सुपेद वस्त्र रखते तो क्या कोई साधू नहीं समझता(उ०) सूत्रकी आज्ञा अपवाद मार्गमे हैं जीवोंकी जयणाके वास्ते जरा रगका पास देणेका, जादा चमकदार भी वस्त्र सामान्य साधूकू विना गीतार्थ विना रखणेका सूत्रोंमें हुकम नहीं इसवास्ते तीन प्रस्थ रग देणा लिखा है बाकी वस्त्र तो सुपेदही रखणा प्रमाण करते हैं कारणमें कार्य हो गया है लेकिन् ३२ । और १३ दोनों मूपरपट्टा बाधते हे ये किस सूत्रमे आज्ञा है उपासरा प्रमार्जना करणेकी वखत नाकमूकै साधू वस्त्र बाधै एसा हुकम तो ३२ सूत्रोंमें है इससें भी सिद्ध भयाकै हरदम मुखपर वस्त्र होता तो प्रमार्जनाकी वखत बांधणेका हुकम क्यों

लिखते कारण सचित्त रज नाकमे मुखमें जाणे न पावै फेर आचाराग सूत्र दुसरा श्रुतस्कध तीसरा उदेसा प्रगट कहता है (खासमाणे छीयमाणे उड्डुमाणे जमाई माणे हत्थेणवा वत्थेणवा इत्यादि) खासते छींकलेते डकारलेते उवासीलेते हाथ मुख सामने देवे या वस्त्र देवै) कहो मित्र मु बधा साधू होंय तो फेर हाथ और वस्त्र देणेकीं जरूर क्याथी इसवास्ते तेरे गुरू मू बाधते हैं सो तीर्थंकरकी आज्ञा विरुद्ध है थूकके भी जणेसें समुछिम पचेंद्री पैदा होता है अतर्मुहुर्त्तमे ये वात पन्नवणा सूत्र लिखता है (प्र०) मूके बधीरहै तवतक अगकी गरमीसें जीव पैदा नहीं होता (उ०) ये खूब युक्ति निकाली मगर प्रत्यक्ष प्रमाणसें युक्तिमे किरकिर गिरती है पेटमें चूरणिये गिंडोलै दातमें कानमें हरसमें सिरमें कठवेलमें जूचमजू तथा नारूयेवतलावो जीते सरीरमें जीव पैदा होते हैं या नही तो फेर ये युक्ति निकालणेसें क्या सिद्धिभई तथा तेरे पथी लोक कहते हैं खेल नाम खखारका है इसवास्ते थूकमें मूका बधाकपडा भीजणेसे समुच्छिम पचेंद्रीजीव नहीं पैदा होता, (उ०) अरे हिंसक इसजगे तो तेने खेलनामखखारका वतलाया लेकिन् पांच सुमतीमैं खेलजल्लसिंघाण पारिठावणिया सुमती इसमें फकत खखारही डालणेकी सुमती मानता है या खेल कहणेसे मूसे पैदा होता थूक खखार जीभका मैल दातोका मैल वगेरसभी आगया सो वतला अगर खेल कहणेसें खखार है तो वतला साधू थूकडाले तो सुमतीकी जरूरी रखैया नहीं और थूक न्यारा सूत्रकारनें लिखा नहीं इसवास्ते खेल कहणेसें मूमेसें खखार थूक सब एक ही पदार्थ है इसवास्ते हरदम मूपरपट्टी बाधणेवाले ढूढक तेरेपथीपचेद्रीजीवोंकी

त्रसक्षा कोटी मारणेवाले महा हिंसक है और वस्त्र रंगे भी नहीं धोवे भी नहीं ये आज्ञा वीतरागी संजमी वनोवासी उत्सर्ग मार्ग वालोंके वास्ते है और पंचम कालमें साधू सराग संजमी प्रायें अपवाद मार्गी वस्तीमें रहणेवाले छेवठे संघयणी है इसवास्ते थिवर कल्पीयों सब साधोकों हुकम है की चोमासावर्षा कालके पहले सबकों वस्त्र धोलेणा चाहिये भगवती सूत्र २५ मा शतक ६ उदेसामें देह वकुस उपगरण वकुस इत्यादि लिखा है ये पंचम आरेके साधूओंका स्वरूप लिखा है वकुस १ कुसील २ दोय ही पंचम कालमें साधू मिलेगें सपेद वस्त्र साधू रखते हैं अगर खार और निरवद्य जलसें धोडाले औरवोनिरवद्य जमीनपर जल परठ देवे अगर नहीं धोवे तो मलिनांवर कहावे श्वेतांवरीसाधूकेंसवजेगे धोणेसे श्वेतांवर पणा रहता है साधुओंकों मलीन भी नहीं रहणा सिद्ध होता कारण जलयानें शरीरका मैल परठणेकीसुमती बतलाई तो विगर मैल उतारेविगरपरठणाकेसें बणे इसवास्तेसाधुजीव नहीं पैदा होय नीलण फूलण वगेरे इसवास्ते वस्त्र धोवै और मैल भी उतारकरपरठे मगर शृंगारके वास्ते नहीं करें (प्र०) अगर प्रतिमा पूजणेसें संसारसें कोई तिरा होय तो बतलाओ और चारित्र लेकर तो अनेक जीव तिरे है (उ०) हे मित्र खाली चारित्रका भार उठाकर कोई मुक्ति गया न जाय गा देख सूय गडांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कंध आठमें अध्ययनकी २३।२४।२५ मी गाथा (सूत्र) जेया बुद्धा महा भागा वीरा असमत्तदंसिणो असुद्धते सिपरिकंत अफल होई सव्वसो २३ (अर्थ) जिके बुद्ध महाभाग वीरपुरुषजिके सम्यक्त दर्शन कर रहित देवगुरु धर्मकों चार निक्षेपेसें

सत्यतापणे श्रद्धाकर धारै नहीं एसेका तपस्यादिक उद्यम पराक्रम अनुष्ठान सर्व निरफल कर्म बंधका कारण है लेकिन् निर्जरा नहीं २३ इसीतरे ही चोवीसमी गाथामें सम्यक्तवतकी सर्व करणी निर्जराका कारण कहा २४ (सूत्र) तेसिंपितवोअशुद्धो निखता जे महाकुला जन्नेवन्ने वियाणंति नसि लोगपवेयद्द २५ (अर्थ) उसका मास क्षमणादिक तप भी अशुद्ध जिके मोटा कुल छोडके वैराग्य धार तपेश्वरी होय तो भी लेखेमें नहीं साधू एसी तपस्या करै सो गृहस्थकों खबर नहीं पडणे देवे अपणी पूजा सत्कार वास्ते सम्यक्तवत अपणा गुण आपके मुखसें नहीं बोलै २५ अब हे मित्र विचार सम्यक् ज्ञान और सम्यक्त दर्शन विना तेरा चारित्र किस गिणतीमें अब तेरा सवाल एसा हे की जिन प्रतिमा पूजणेसें कोण २ तिरा सो हे मित्र जो फल साक्षात् भाव निक्षेपे तीर्थंकरके वंदन पूजनका है तथा सम्यक्त ज्ञानयुक्त साधूकू चारित्र पालणेका जो फल सूत्रोंमें कहा, सो फल जिनप्रतिमा वंदन पूजनका सूत्रोंमें एक सदृश कहा, दसा श्रुतस्कंधके दशमें अध्ययनमें राजगृही नगरमें वीरप्रभु समवसरे तब श्रेणिक राजा सब तईयारी वंदनाकी करके चेलणा राणी पास आकर एसें कहता भया (चिलणा देवी एववयासीतमहाफल देवाणुप्पिए समण भगव महावीर वंदामो नम सामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासेमो तेण इह भवेय परभवेय हियाए सुहाए खेमाए निस्सेयस्साए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सई, इति, ॥ एसाही पाठ उवाई सूत्रमें चंपा-नगरीमें कोणिक राजाके अधिकारमें हियाए सुहाए अणुगामियत्ताए एसा लिखा है जैसा फल साक्षात् जिनराजकै वंदन पूजनका लिखा है

वैसाही फल श्रीराय प्रसेणी सूत्रमें जिनप्रतिमा वदन पूजनका साक्षात् लिखा है जराहियेसें मिथ्यात्व पडदा दूरकरके देखो (सूत्र) तएण तस्स सूरिया भस्स देवस्स पचविहाए पज्जत्ती पज्ञत्ति भावगयस्स समाणस्स इमेयारूवे अभ्मत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था किमेपुन्विकरणिज्ज किमेपच्छाकरणिज्ज किमेपुव्विपच्छाविहियाए सुहाए खेमाए निस्सेयसाए अणुगामियत्ताए भविस्सई तएणतस्स सूरियाभस्सदेवस्स सामाणियपरिसोववन्नगादेवा सूरियाभस्सदेवस्स इमेयारूव मब्भत्थिय जावसमुप्पन्न समभिजाणित्ता जेणेवसूरियाभेदवे तेणेवउवागच्छई उवागच्छित्ता सूरियाभदेव करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिंकट्टु जएण विजएण वद्धावेई २ त्ता एववयासी एवखलुदेवाणुप्पियाण सूरियाभेविमाणे सिद्धाययणसि अठसयजिणपडिमाण जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताण अठसय सन्निखित्तचिठति सभाएण सुहम्माए माणवएचेइयखभे वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुओ जिनसकहाओ सन्निखित्ताओ चिठति ताओण देवाणुप्पिया अन्नेसिंचबहूण वेमाणियाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ जावपज्जुवासणिज्जाओ तएण देवाणुप्पियाण पुन्विकरणिज्जएयण पच्छाकरणिज्ज एयणपुव्विसेय एयणपच्छासेय एयणदेवाणुप्पियाण पुव्विपच्छाविहियाए सुहाए खेमाए निस्सेयस्साए अणुगामियत्ताएभविस्सई इत्यादि) (अर्थ) तिस वखतमें उस सूर्याभदेवके पाच प्रकारकी पर्याप्ति पर्याप्त भाव प्राप्त भये बाद एसा अभ्यर्थता चिंता प्रार्थना मनोगत सकल्प पैदा भया क्या मेरे पहले करणे योग्य क्या मेरे पीच्छे करणे योग्य क्या मेरे पहले पीछै हितकारी सुखकारी क्षेम मुक्तिमणी निश्रेयसभणी आगे भवातरमें मुझकों क्या होगा तिस

वन्नतमें उस सूर्याभदेवके सामानिक पर्षदाके उत्पन्न भये देवता सूर्याभदेवताका एसा अभ्यर्थना मनोरथ पैदा भया जाणके जहां सूर्याभदेव है उहां आयकरके सूर्याभदेवकों हाथ जोड मस्तकके लगाय जय विजय शब्दमें वधावे वधाकर एसा कहते भये इसतरे खलु निश्चेसेती देवतोंके प्यारोंके सूर्याभविमाणमें एक सो आठ जिनप्रतिमा जिनराजके अग जितनी उची एक सो आठ विराजमान है और सुधर्मासभामे माणवक नामा चैत्य स्थभमे वज्ररत्नके गोलडब्नोमें बहुतसे जिनराजोंकी हड्डिया विराजमान है वो सब देवतोंके प्यारोंको तथा और भी बहुत (सम्यक्ती) वेमानिक देवी देवतोंके गधपुष्पसे पूजाकरणे योग्य जानत् सेवा करणे योग्य तिसवास्ते देवतोंके प्यारोंकों पहले करणे योग्य भी यही है पीछे करणे योग्य यही है यही पहले मुक्ति दाता है यही ही पीछे मुक्ति कल्याणकारी है यही देवतोंके प्यारोंकों पहली और पीछे हितभणी सुखभणी क्षेमभणी निश्रेयस मोक्षभणी भवातरमें होयगी, इति ॥ एसा ही पाठ जीवाभिगम सूत्रमें विजय देवताके अधिकारमें लिखा है इतना फेर जादा लिखा है श्रीजिन प्रतिमाके वदनका तथा सत्तरभेदसें पूजाकरणेका भी हियाए सुहाए इत्यादि भवातरमें मुक्तिका कारण लिखा है अब एसाही फल चारित्र पालणेवाले साधूकू ठाणाग सूत्रके तीसरे ठाणेमें लिखा है जैसा फल जिनप्रतिमा वदन पूजनका लिखा वैसा (सूत्र) ततोठ्ठाणववसियस्स हियाए सुहाए खेमाए निस्सेयस्साए अनुगामियत्ताए भवइ सेणमुडे० निग्गथेपावयणे निस्सकिते णिक्कखिते जावनोकलुससमावणे निग्गथपावयण सद्दहति पत्तियति रोएति सेतपरिस्सहे अभिजुजिय २ अभिभवति सेणमुडे० पचहिंमहव्वएहिं णिस्संकिते जावपरीस्सहे अभि

ज्ञुजिय २ अभिमवति णोतपरीस्सहा अभिज्ञुजिय २ अभिमवति २ सेणगुडे० छहिंजीवनिकाएहिं णिस्मकिते जावपरीस्सहे अभिज्ञुजिय २ अभिमवति नोतपरीस्सहा अभिमवति ३। (अर्थ) तीन थानक निश्चयकरके जाणे उसकू हितमणी सुखमणी क्षेममणी मुक्तिमणी ससारका पारपावै भवातरमे जिके दीक्षालेकर जिनप्रवचमें निसकित अन्य धर्मकी वाछा नहीं यावत् मैला भाव नहीं जिनमार्ग सरद है प्रतीतकरै रुचे परीसह उपजणेसें सहै लेकिन् परीसह पराभव नहीं कर सके वोगुड० पचमहाव्रतके विषै परीसह आके फरसणेसें सहै खमे लेकिन् परीसह साधूका पराभव नहीं कर सके २ वोमुड० छजीवनिकायके विषै निसकित यावत् निकखित परीसह आणेसें परीसह सहै लेकिन् वो परीसह घर छोड अणगार भया जिनोंका पराभव नहीं करसके ३ इसतरे सम्यक्त युक्त पच महाव्रत भाव दया पालणेसें हियाए० इत्यादि फल कहा है हे मित्र इसतरे तेरे माने भये ३२ सूत्रमें साक्षात् भगवानके वदनका तथा चारित्र पालणेका और जिन-प्रतिमा वदनका तीनोंका फल एक सा मुक्तिका फल वतलाया अब फेर क्या मिथ्यात्व मोहनी तुमारे दिलमें है सो कहो (प्र०) जिनप्रति-मामें जिनराजका जीवतो है नहीं तो फिर अजीव पदार्थ वदन पूजनसे जीवकू धर्म केसें होय (उ०) हे मित्र तुमारे २२।१३। साध जिन-प्रतिमाकू पूठ देकै नहीं बैठते है इसका कारण क्या है सो वतलाओ अजीव समझतें हैं तो पूठ क्यों नही देतै तीर्थंकर तो अनुयोग द्वारमें जिनमूर्तिकी थापनाकों सच जिनराज फरमाया हैमट्टीकाया चित्रामका हाथी घोडा अदमी वगेरे खिलोनेपर साध तुमारे पाव देवै या नहीं

किसीके हाथसें टूट जावे तो उसका पाप उसकू लगा माने या नहीं अगर नहीं माने तो दशा श्रुतस्कधके तीसरे अध्ययनमें शिष्यकों गुरूकी आशातना इसतेर लिखी है (सूत्र) सेहेरायणियस्स सिज्झासंथारग पाएण सघट्टित्ताहत्थेण अणुभवेत्तागछति आसायणासेहस्स ३१ में बोलमें (अर्थ) जो शिष्यरात्री सनधी शिज्यासथाराकों पावों करके ठोकर या स्पर्श करै या हाथोसें फैक देवे तो शिष्यकू आसातना होय इसीतेरे ही दशमी कालिक सूत्रमे (गाथा, सघट्टित्ताकाएण तहाउवहिणामवि खमेअवराहमे वइजनपुणत्तिय १ अब विचारो गूरूके शय्या सथारेके हाथ पावोसें अवज्ञाकर तो शिक्षकू पाप लगै तब सुविनीत चेला गुरूसें अपराध खमावै हे पूज्य फैर एसा कसुर नहीं करूगा अब विचारो लकडी ऊन सूतका अजीव पदार्थके पाव लगणेसें गुरूकी आशातना केसें होगई जेसें गुरूकी नेश्रामें रही वस्तू गुरु रूप तेसें तीर्थंकरकी प्रतिमा तीर्थंकर रूप है न्याय शास्त्रमें लिखा है (श्लोक) विवेकिनमनुप्राप्य गुणायातिसमुन्नतिं सुतराररत्नमाभाति चामीकरनियोजिता १ (अर्थ) विवेकी जनकै सगसैं, गुणका अधिक प्रकास, निजप्रकास हुय रत्नमे, सुवरण सग उलास, १ जेसें गुणवत नर कदरदान विचारवतकी सोहवतसे जादा सोभा पाते हैं जेसें रत्नको सोनेकै सग जडणेसैं (श्लोक) नार्घतिरत्नानिसमुद्रजानि परिक्षकायनतसतिदेसे आमीरदेशेकिलचद्रकात त्रिभिर्वराटै प्रवदतिगोपा २ (रत्न मोल जहा नहीं लहै, नहीं पारख जिण देश, चद्रकात आभीरमें, कोडी तीन लहेस, २ आभीर देशमें दरियावकै चद्रकात रत्न[illegible] की गोवालिये लोक तीन कोडी मोल कहा करते हैं क्योंकी विना

परिक्षाकारक झवरी विगर रत्नोंकी कदर, गधा सद्दा क्या जाणे ३ (श्लोक) कुटिलगति कुटिलमति कुटिलात्मा कुटिल शीलसपन्न सर्व्वं पश्यति कुटिल कुटिल कुटिलेन भावेन २ (अर्थ) कुटिल चाल बुद्धि कुटिल, कुटिल जीव आचार, सवही देखै कुटिल सो, कुटिल अधम विवहार ३ जिस मनुष्यकी बुद्धि चलण स्वभाव आत्मा कुटिल यानें टेढी तिरछी होती है सो अदमी सब वस्तूको कुटिलही देखता है २ (प्र०) पाच सवर द्वारमें प्रश्न व्याकरणमें चैत्य नहीं लिखा और आश्रव द्वारमें चैत्य लिखा है इसवास्ते चैत्य कराणा पाप है (उ०) भला गूगे वेटेनें माकही येभी एक खुस वखतीकी वात भई क्योंकि इस आश्रव द्वारका जो म्लेच्छोकै वनाये मडप गुड्डीमसीत, इहा तो चैत्यका अर्थ तुझे देव मदिर सूझ गया और सवर द्वारमें साधूकी चैत्यकी वेयावच निर्जराके वास्ते कही उहा चैत्यका अर्थ जिन मदिर तुझें सूझा नहीं क्या एक तरफ वस्ती दुसरी तरफ उजाड एकातरे दिखता होगा द्वेप बुद्धिसें विवेक नष्ट होगयाहैतेरा एसी २ गपा एक मार २ भोले जीवोंको वहकाते हो आश्रव द्वारमें म्लेच्छोकै चैत्य लिखा है (सूत्र) कयरे जेते सो परिया मच्छ बधा साउणिया जाव कूर कम्मकारी इमेय वह वे मिलेख जाती किंते सव्वे जवणा-अर्थ, किसकै वो चैत्य जो कसाई वागरी मच्छी पकडणेवाले धीवर सकुनी याने चिडी वगेरे पकडणेवाले जावत कूरकर्मोंके करणेवाले इत्यादिक वहोतसे म्लेच्छ जाती क्या वो सर्व जवन लोक जो देवलप्रतिमावास्ते पृथ्वी कायादिकहणे वो सव आश्रव द्वार है एसा लिखा है लेकिन् श्रावक लोक जिन चैत्य करावै वो आश्रव है एसा लिखा होय तो किसी सूत्रका पाठ वतलावो सूत्रकार म्लेच्छ और सर्व यवन जाती

लिखा है, श्रावक तो दूर रहा मगर अन्य दर्शनी ब्राह्मनादिकोंका भी नाम नहीं लिखा है क्या तुम श्रावकोंकी करणी म्लेच्छोकी सर्व करणी एक तुल्य मानते हो, क्या तीर्थंकर गणधरोंको कुछ किसी श्रावकनें रुमपत दीथी और म्लेच्छोंनें कुछ बिगाड किया था सो श्रावकोंका चैत्य आश्रवमें नहीं लिखा और म्लेच्छोंका आश्रवमें लिख दिया मतलब जो आश्रव था सो आश्रव लिख दिया और श्रावकका चैत्य आश्रव नहीं था तो नाम नहीं लिखा और सवर द्वारमें चैत्यकी टहल बदगी उपदेश देकर आशातना ८४ टलावै चैत्य द्रव्य कोई खाता होय तो उपदेशद्वाराहिफाजत करवावै इत्यादि चैत्यकी वैयावच्च निर्जराका अर्थी साधू करै एसा प्रगट सूत्रमें लिखा है प्रश्न व्याकरणमें (सूत्र) अहकेरिसह पुणाहि आराहिए वयमिणे जेसिं उवहि सगहण दाण कुसले, अच्चत, बाल दुव्वल गिलाण वुड्ढखवग पवत्ति आयरिय उवझाए सेहे साहम्मिए तवस्सी कुलगण सघ चेइय अट्ठेय निज्जरट्ठी वेयावच्च अणिस्सिय दसविह बहुविहपि करेई इति, (अर्थ) अब वो कोणसा साधू फेर आराधे तीसरे व्रतकू जिनोंके उपधि भात पाणी ग्रहण करणेमें तथा देणेमें चतुर अत्यत बालक दुर्व्वल रोगी वृद्ध मासक्षमणी प्रवर्त्तिक आचार्य उपाध्याय शिष्य साधर्मी तपस्वी कुल गण सघ और चैत्यानि इत्यादिक जो अर्थ तिणा विषै निर्जराका अर्थी कर्म क्षय चाहता जसमानादिक अपेक्षारहित दश प्रकारकी वैयावच्च या बहुत प्रकारकी वैयावच्च करै ये बहुत प्रकारकी वैयावच्च जो लिखी है वो जिन प्रतिमाकी अपेक्षा लिखी है कारण बालकादिक सघपर्यंत जो साधुओंका समुदायकी तो दश प्रकारकी

यावचमें सब आगई वैयावच्च लेकिन् अनेक तरेकी वैयावच्च चैत्यकी पेक्षा होती है इहा पापडी निन्हव ज्ञानके अर्थ वैयावच्चकरै एसा त्सूत्र अर्थ करते हे सो ज्ञान शब्दमें बहु वचन नहीं आता है और हा चेइय अठेय बहु वचन है इसवास्ते टीकाकार जिनमदिर प्रतिमा अर्थ व्याकरणसे करते हैं दुसरा तुम कहते हो ज्ञानके अर्थ वेयावच्च रै तो बतलावो साधु, अत्यत बालक साधूसें, तथा शिष्य, यानें पणे चेलेसें, कोणसा ज्ञान पढणा है, सो ज्ञानके अर्थे, इनोंकी वेया-च्च करै, तथा आचार्य उपाध्याया दिककी, वेयावच्च ज्ञानके वास्ते करे ो, क्या सम्यक्त निर्मल वृद्धिके वास्ते, तथा क्या चारित्र वृद्धीके ास्ते वेयावच्च नहीं करै, इसवास्ते हे मित्र, चैत्य नाम ज्ञानका किसी ी सूत्रमें नहीं करा है, तू मृषावादी है, सवर द्वारमें सर्व अधिकार ाधुओंका है और मदिर कराणा काम श्रावकोंका है साधूके सर्व सवर है श्रावक सवरा सवरी है इसवास्तै साधूकों चैत्यकी वेयावच्च करणेका हुकम है चेत्य शब्दका बहोत जगे अर्थ प्रतिमा तुम कबूल करते हो और जहा ना जवाब होते हो उस जगै चैत्य बावत मृषा-वाद बोलते हो नदी अनुयोग द्वारादिक जगे २।८४ आगमोंमें महा ज्ञानका सबध चला है उस जगे नाण २ करकै लिखा है और जिस जगे जिनप्रतिमा मदिरका दाखला चला है उस जगै चेइय सिद्धा यतन जिन घर लिखा है जो ज्ञानकै वास्तै गणधर देवजीकों लिखणा होता तो नाणठे निज्जरठी एसा शब्द लिखते जो सूत्रकी आज्ञा मानते हो तो गणधर देवजीका लिखा परमार्थ मानों और लूकेकों केवली मानते हो तो तुम जाणो टीकाकार अभय देवसूरि आत्मार्थी गीतार्थ

जिनोंके साक्षात् रूबरू शासन देवता आई और टीका नव अंगकी लिखणेका कहा वो जैनेंद्रव्याकरणके वेत्ताने तो चेइय अठे शब्दका जिनप्रतिमाकी वेयावच्च अर्थ टीकामें लिखा है ये बातको हजार करीब वर्ष होणे आये ओर तुमारा मत ४ से वर्षका उनोंका किसीसें झगडा तो थाई नहीं एका भवावतारी जो चोथे देव लोक पधारे एसे सम्यक्ती त्यागी वैरागी जिनवचनसें विरुद्ध कभी लिखे नहीं जिनोंकी सेवा सम्यक्ती देवतोनें करी हमतो अनेक सूत्रोका चैत्य शब्द मदिर बावत देखा है तुमारा वचन माननेमें भी हमारे कोई इतराज नहीं है मगर किसी जगे ज्ञानके अधिकारमें सूत्रोंमे ज्ञानका नाम चैत्य लिखा दिखा तो देवो, नहीं तो उत्सूत्र बोलणेका प्रायश्चित्त लेणा चहियै हमारा मत सच्चा ये अहकार दुख दाता है हमतो सनातन प्रवाहमें चलते धर्मको सच्च मानते हैं हमारे किसी भी आचार्यनें मदिर मांनणेका नया धर्म चलाया होय तो किसी भी प्रमाणसें सबूत तो कर दो नहीं तो लाखों हजारों वर्खोंकी जिनप्रतिमा तथा तुमारे माने ३२ सूत्रोंमें मदिर मूर्त्तिया जिनराजकी हमने सिद्धकर दिखाई है प्रत्यक्ष प्रमाण आगम प्रमाण और पृथ्वीके बादसाह महाबुद्धिवान बढे २ डाक दरोंका लाट साहिबकी गवारूप हस्ताक्षर छपा तुमें दिखा सकने हैं वो लिखते है छ हजार वर्षके सिल मिलेवार मूर्तियानिश्चतमें जैनियोंकी मिली है और लदनमें मोजूद है तो तुम जैसोंके नहीं कहणेसें क्या नहीं हो सकती है, कहाईतो चैत्यका ज्ञान अर्थ कहाई साधु अर्थ कहाई वृक्ष अर्थ कहाई छद्मस्थ अरिहत अर्थ इत्यादि मनमाने बक देते हो लेकिन् पदशास्त्री निर्लोभी पक्षपात रहित एसे

मतकै पडितकै मूसे सिद्धकर दो तो वलिहारी है वाकी तो वो हाल तुमारे साथोंने वणाया है आप डूवतो पाडियो लेडूवोजुजमान सगमें तुमारे जेसे अल्पज्ञोकोंभी ले वैठै, ये तुम अर्थ करते हो सो किस कोसमें लिखा है सो नाम वताणा, या स्वामी दयानदजी वाला जवाब देणा, कोस फोस हम नहीं मानते, वस इतनेपर ही आपके वचनकी सत्यताकी कसोटी विद्वान लगालेंगें महा निशीथमें मदिर कराणा लिख प्रश्न व्याकरणमें साधूकों चैत्यकी वैयावच करणी लिखी इसही सूत्रमें पूजा करणेंको दया वतलाई समवायागनदीमें उपासग दशाकी नूदमे दस श्रावगोंके दस चैत्य वतलाया (सूत्र) सेकित उवासगदसाओ उवासगदसासुण उवासगाण नगराणि उज्जानतिचेइयाइवणसडाई राया अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाई परलोगाई इड्ढिविसेसो इति, अर्थ, वो उपासग दशामें क्या है उपासग दशामें श्रावकोंके नगर उद्यान जिनमदिर वणषड राजा माता पिता समोसरणादिक धर्माचार्य धर्मकथा परलोकादिक ऋद्धि विशेष एसा लिखा है वतलानो इहा चेइयाइ इसका क्या अर्थ करोंगे इसवास्ते दश श्रावकोंनें दश जिनमदिर कराया नदी सूत्र समवायाग सूत्रकै लेखसें सिद्ध है उपासग दशामें न चैत्यका वर्णन लिखा न सव राजोंका न माता पिताका, कारण पूरे वारे व्रत भी आनदके अधिकारमें नहीं है सात व्रत लेणा लिखा १२ का अती चार लिखा है सक्षेप सूत्र पाठ लिखा गया इससे क्या नदी समवायागका सूत्र पाठ झूठा है तो फेर ३२ भी तेरे माननेमें खलल है जो समवायाग नदीका पाठ न मानो तो (प्र०) चैत्य शब्दकी व्युत्पत्ती व्याकरणमें

किसतरे होती है (उ०) चितेर्लेप्यादिचयनस्य भाव. कर्म्म वेति चैत्य सज्ञा शब्दत्वात् देवबिंब तदा श्रयत्वात् तत् गृहमपि चैत्य मित्यादि ये व्युत्पत्ती भगवतीकी टीकामें अभय देवाचार्य लिखते हैं (प्र०) तपस्या करते तथा साधु ओंके दर्शनसेंकेइएकोंको अन धितथा जाती स्मरण ज्ञान उपजा है लेकिन जिनप्रतिमाके दर्शनसें किसीकू ज्ञान उपजा होय तो बतलावो (उ०) अव्वल तो आर्द्र कुमारजीकों जिनप्रतिमाके दर्शनसें जाती स्मरण ज्ञान उपजा सूयडांग सूत्रकी टीका १२०० वर्षकी लिखीमें लिखा है फेर भगवान महावीरके चोथे पाट धारी शय्यभवसूरि'कों जिनप्रतिमाके दर्शनसें बोध बीज चारित्र उदयआया चौदे पूर्व धारी एका भवावतारी भये हैं ये अधिकार कल्प सूत्रकीथविरावलीकी टीकामें भाष्यमे हैं और दरियावोमें सब आकारकी मच्छिया होती है एक तो चूडीकी सिकल दुसरी खपरेलकी शिकल ये दोतरेकी नहीं होती उसमें जिनप्रतिमाके आकारकी मच्छियाकू देख बहोतसे भव्यजीव मछियाकू जाती स्मरण ज्ञान होता है वारे व्रत धारकर सम्यक्त सहित आठमें देवलोक जाती है ये कथन द्वीप सागर पन्नत्ती आदि सूत्रोंमें तथा हरि भद्राचार्य आवश्यककी बडी टीकामें लिखते हैं इसतरे जिनप्रतिमाके दर्शनसें जब तिर्यंच जातीकों ज्ञान होकर ससारके पार जाते हैं तो ज्ञान प्राप्तकर मनुष्य तिरै यामें तो सकाही क्या बादल 'बैल वगेरे प्रलय पाकर अनेक भव्य जीव तिरे हैं तो जिनप्रतिमा तो साक्षात् सिद्ध स्वरूप है सूत्रोंके लेख मुजब साक्षात् तीर्थंकरके सामने जब इद्रादिक देवता नमो त्थुण भाव स्तवना करते हैं तब कहते हैं ठाण सपाविउकामस्स याने हे प्रभु मुक्ति

पहुचणेकी कामना याने वाछा है और रायपसेणी जीवा भिगम आदि सूत्रोंमें जब जिनप्रतिमाके सामनें भाव स्तव सूर्याभदेव विजयदेवनें द्रोपदी नमो त्थुण पढा है तब कहा है ठाण संपत्ताण यानें आप-मुक्ति पहुच गये हो इसवास्ते जिन प्रतिमा सिद्ध स्वरूपके दर्शनसें अनत कालमें मनुष्य तिर्यच मच्छिया अनत जीवोंकों ज्ञान भया और मुक्त भये (प्र०) तीर्थंकरकी प्रतिमा पूजनें वालोंकी तारीफ तीर्थंकरोंने कहाई करी है तो बतलावो (उ०) प्रथम तो जब दृढ सम्यक्तीकी तारीफ श्रावकोंकी करी है तो जिन प्रतिमाका कराणा और वदना पूजनाकी तारीफ कुदरतही हो चूकी जेसें चारित्रकी तारीफ करणेसें लोच उग्र विहार पडिलेहण वगेरे कर्त्तव्यताकी तारीफ आपही हो चूकी नहीं तो बतलावो लोच करणेका हुकम दिया है मगर एसी भी तारीफ किसी सूत्रमें तीर्थंकरोनें करी है धन्य है जिके महात्मा सो केसोंकों खोसे उनोंकों हियाए सुहाए इत्यादिक मुक्ति लोच पहुचावै एसा लिखा होय तो बतावो इस तरे जब सर्वाग सुदर सोभनीक बता दिया तो फेर मस्तककी शोभा क्या अलग रह गई एसा समझो जिस उप्रात तीर्थंकर माहावीरनें जिन प्रतिमा वदनेवालोंकों मुक्ति जाणेका निश्चय बतलाया है, इससें जादा क्या तारीफ करेगें, जब गौतम स्वामीके हस्त दीक्षित अयमत्ता कुमारकों केवलज्ञान भया तब-गौतमनें दिलमें विचार कियाकै मुझें केवल ज्ञान होगाया नहीं मुक्ति जाऊगाया नहीं तब भगवान गौतमकी सका मिटाणे वास्ते पर्षदाकै सामनें उपदेश किया हे देवतोंके प्यारे जो आत्म लब्धिसें अष्टापद तीर्थपर चढकै भरत राजाकै कराये जिन प्रतिमाकू वदे भाव करकै

सो इस ही भवमें मुक्ति जावे एसा सुण गौतमस्वामी अपणी निश्चय करणे भगवानकी आज्ञा लेकर अष्टापद पहाड पर सूर्य किरणकै आतप पुद्गलके साहरेसें चढे और पनरेसें तीन तापसोकों शिक्ष करकै लाये ये लेख आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तीमें है इससें निश्च होता है जिन प्रतिमा भावसे वदै सो निश्चै मुक्ति जावे ये वात भगवाननें कही सिद्ध है, फेर तारीफ सुण, जो तीर्थकरनें जिन प्रतिमाकी करी यानें जो जिन प्रतिमाका शरणा भाव करकै धारै उसकों देव दानव तक लीप नहीं दे सकै सो भगवती सूत्रमें चमरेंद्रकै अधिकारमें एसा लिखा है अरिहतका शरण १ अरिहतका चैत्य (मूर्त्तिका) शरण २ भावितात्मा छद्मस्थ साधूका शरण ३ लेकर असुर कुमार सौधर्मादि देवलोक जावै फैर आनद श्रावग उपासग दशामें अवड सन्यासी श्रावग उवाईमें कहते हैं हे प्रभु हरिहरादिक देवनपूजू न वदू जिन चैत्य (प्रतिमा) अन्य तीर्थी जो गृहण कर लेवै उसकू भी नहीं पूजू इहा निन्हव चैत्यका साधू अर्थ करते हैं साधूकू अन्य तीर्थी ग्रहण कैसें करते हैं जब जैन साधूकों अन्य तीर्थियोंनें गृहण किया तो वो अन्य दर्शनी हीहो गया जेसें अवडसन्यासी सातसे श्रमणोपासक (श्रावक) हो गये जो कदास जैन मतका साधू अन्य तीर्थीका भेष पहर लेवे तो वो अन्य दर्शनी हो जाता है, अन्य तीर्थी गृहीत नहीं वजता है, वो उस दर्शनवाला वजेगा जेसें सुक देव सन्यासी थावच्चा पुत्रपास जब दीक्षा लेली तो फेर जैनकै साधू कहलाये मगर जैन परिगृहीत सन्यासी नहीं कहलाते थे, इसतरे आनद अवडजी कहते हैं जिन मूर्ति अन्य दर्शनी लेकर पूजेतो में एसे चैत्यकोंभी पूजूं तो मिथ्यात्व लगै, एसे अन्य

दर्शनियोंनें लाखों जिन मूर्त्तियों लेकर अभी पूज रहे हैं, दक्षणमें, जगन्नाथ बद्रीनाथ पार्श्व प्रभूकी मूर्त्तिया एसी मूर्त्तिया वावत आनद अवडादिक श्रावकोनें नियम लिया है फेर तुमसें पूछते हैं आनदजी अवडजी जो हरिहरादिक देवोंकों वदन पूजनका निरेध किया है सो उनोंकी मूर्त्तियोंका किया है या साक्षात् विष्णु साक्षात् रुद्रकै वदन पूजनका त्याग किया है, जो कहोगे साक्षात विद्यमानका तो उस वखत कोई विष्णु साक्षात विद्यमान नहीं था तो विचारो सूत्रमे तो फकत हरिहरादिक कहा है, इस कहणेसे उनोंकी मूर्त्ति स्थापनाको साक्षात विष्णु और रुद्र लिखा है, जो उनोंकी मूर्त्ति पूजणेसें आनद अवड श्रावकको मिथ्यात्व लगै तो जिन मूर्त्ति पूजनेसें सम्यक्त क्यों नहीं होगा क्योंकै किसीनें कहा में रात्री भोजन नहीं करता तो निश्चयसें सिद्ध हो गयाकै दिनको भोजन करता है, वो कहे तो क्या और नहीं कहे तो क्या इसतरे आनदजी अवटजीके हरिहरादिक मूर्त्तिके त्यागणेपर अरिहतकी मूर्त्ति वदनीक पूजनीक आपहीसें सिद्ध होती है न्यायसैं अवइससें जादा क्या तारीफ चाहिये सुयगडाग सूत्रमें (चेइयमहेतिना) यानें चैत्यका उच्छव लिखा है (प्र०) जिन प्रतिमाके वदक पूजकोको कोई लब्द्धिभी उपजी है तपस्या करते तो अनेकोंको उपजी है (उ०) अरे मित्र, तें वडा सठ है हम हजारों पुरावै लिख आये है तोभी तेरा अधकार रिदयसें नहीं हटता रावण दवदती श्रीपाल वगेरोंनें मुक्तिकी लब्धिही पैदा करली तो वाकी लब्धिया क्या वाकी रही अज्ञान कष्टसें अन्य दर्शनियोंको तेजोलेस्या वगेरे केइ २ लवधिया पैदा हो जाती है जेसें अग्नि वैश्यायन

ऋषीको तेसें भगवानका अवर्णवादी सदा हराम करणेवाला गोसाळेको तेजोलेस्या पेदा हो गई थी तो जिन मूर्त्तिके भक्त सम्यक्तीको लब्धि या पैदा होय इसमें शका ही क्या देख रावण लकामें शातनाथ स्वामीके मदिरमें बहुरूपणी विद्या साधी सिद्ध होगई रामचरित्रमें लिखा है रामचद्रनें मूर्तिके सामने लका जाते दरियापार उतरणे तीन उपवास किया धरणेंद्रनें पार्श्वनाथकी मूर्त्तीदी उसके प्रताप दरियासें पार पाये पद्मचरित्रमे लिखा है, श्रीकृष्णकी फोजमें जरासिंधनें जरा डाली सब फोज अचेत भई नेम प्रभूके कहणेसें कृष्णनें तीन उपवास किया धरणेंद्रने सखे सरा पार्श्वनाथकी मूर्त्ती दी उसके स्नपन जल छिडकतेई जरा भागगई ये हरिवंश चरित्रमें लिखा है, नागार्जुन जोगी कहाई भी सोना सिद्धी नहीं पाई तब श्रद्धा पूर्वक पादलिप्तसूरि के वचनसें पार्श्वनाथकी मूर्तिके सामनें एकाग्रता करते ही स्वर्ण सिद्धि होगई ये कथन पाद लिप्त चरित्रमें हैं, उस योगीनें परम सम्यक्त धारकर गूरूका नाम का यम रखणेकों सत्रुजयकी तलहटीमें पालीताणा नगर बसाया सो अभी विद्यमान है अभय देवसूरिका थमणा पार्श्वनाथकी मूर्तिके स्नानजलसे गलतकोढ गया पीछे उन्होंनें नव अग सूत्रोंकी टीका बनाई राजा श्रीपाल तथा सातसे कोढियोंके अठारे जातका कोढ उजीण नगरमें केसरिया नाथजीकी मूर्तिके सामनें सिद्धचक्र यत्रके स्नानजलसें गया वो मूर्त्ति अब उदयपुर धूलेवे विराजमान है, अतरीक पार्श्वकी मूर्त्तिके जलसे चद्रसेन राजाका गलत कोढ गया अन्यमतकी मूर्त्तियोंके भक्तोंमे श्राप देणा धन पुत्र देणा वगेरे लब्धिया हाजर है तो जिनमूर्त्तियोंके भक्तोंमें तो कहणा ही क्या चोरासी गच्छके सब जती

जिनमूर्त्तिके भक्त है, तीनसे तेसठ पाखटी तथा छनदर्शनमें जेसे लब्धिवत चमत्कारी जती लोक भये और है एसा किसी दर्शनमें नहीं जेस रत्नप्रभसूरि श्रीजिनवल्लभसूरि के चामुडा देवी सेवा करती थी जिनोंने लब्धिसें राजन्य वसी अन्यधर्मी वालोंकों जैन महाजन बणाया दादा श्रीजिनदत्तसूरि की चमत्कार लब्धि जगत् प्रसिद्ध है क्षेत्र २ के देवता जिनोंका हुकम चर दार थे किसीका कोढ किसीका जलदर किसीका भगदर किसीका सापका जहर किसीका भत राक्षस पीडा कोई शस्त्रके जखमसें मरता किसीका नगर अग्निसें जलता कोई नगर पाणीसें वहताथा इत्यादि अनेक कष्ट राठोड चउहाण तमर गौड चद्रावत भाटी शोलखी राजपूतोंका महेश्वरी ब्राह्मनोंका मरणात कष्ट देखते २ मिटाकर जैनी महाजन बणाया सो ओस वाल वश प्रसिद्ध खरतर गच्छके आभारी है और मानते हैं निलकुल मरे भये मुगल नव्वावके पुत्रको परकायप्रवेशनी विद्यासें सजीवतकर छमहीना रखा बीज-लीकों पात्रके नीचै दबा रखी जिनदत्तसूरिका जो नाम लेगा उस परकभी गिरूगी नहीं एसा वचन लेकै छोडदी जिनमदिरकै सामनें मरी गऊ धरणेवाले ब्राह्मन लोकोंकों मरी गऊकू परकाय प्रवेशनी विद्यासे उठाकर रुद्रकै मदिर पर जा गिराई आसर ब्रह्मसेन वगेरे ब्राह्मण केइ वातोंकै परचै देखकै गुरूकै सेवग भये देवेरागोत्र भोजग बनाये जो अभी सेवक वीकानेरकै जैनमदिर पूजते हैं, ये महा-जन रूप कल्पवृक्ष उनोंनें साखा प्रसाखासें फैलाया किसीकू लक्ष्मी किसीकू पुत्र इसतरे तरे २ कै मनो कामना पूर्ण कर दिया वो श्राव-गोंनें असख्या रुपया सात क्षेत्रोंमें लगाया दीन हीनोंका उद्धार

किया अश्वपति विरुद पाया, वावन वीर चोंसठ योगणी पाच पीरोंकू
वस किया एसे लद्धिवत युग प्रधान परम गुरु भये इसीतरे सवत सोलेके
लगतेही श्रीजिनचद्रसूरि अकव्वर वादसाहकों अनेक चमत्कार दिखाया
जलपर लोवडी तिराकर पुरुषोंको जमुनाके पार उतारा वादसा जमीनमें
एक वकरी डालके ऊपर विछायत कर महाराजकू वैठणैका निमंत्रण किया
महाराजनें कहा इस जगे तीन जीव पचेंद्री हैं वादसाह झूठ जाण
विछायत अलग कर देखा तो गर्भवती वकरीनें दो वचा जण दिया
तव काजीनें अपणा इल्म दिखाणे अपणी टोपी आकासमें उडाई तव
गुरूनें ओघेसें ठोकते २ टोपीकू नीचै उतार मगाई अमावसकी पूनम
लद्धिस कर दिखाई तव वादसाह अपणा गुरू वणाकर माहीमुरात
वा चमर छत्र पालखी नजर कर नवरोजे फुरमाणका खलीता लिखा
गुरूनें इन चीजोंकों नहीं ग्रहण किया वादसाहनें वहोतही आग्रह
किया हे गुरू, वादसाहोंके गुरूका निसाण मेरी भक्ती आपकी शता-
नोंकै लिये आवाद सदाके लिये कायम रहै राजाभियोगके कारण
गुरू कुछ वोले नहीं माहाराज सग वादसाही नोकर इन चीजोंको
लिये फिरणे लगे वाद आचार्योंकी धर्म महिमा करणे सघनें वो सिल
सिलापाटानुपाट जारी रक्खा वो माहीमुरतवा और खलीते वीकानेरके
भडारमें करमचद वछावतनें स्थापन किये सो मोजूद है अमारि उद्-
घोषणा हिंदमें फिरायी उस वखत जतीरासा वणाणेवाले चारणनें
ये सवाल पढा है (पडताल करै झड पावसमें, मझचद उगाय अमा
वसमें, चढ गयण करीगविसुचरचा, पतसाहा दिया इसडापरचा १
जसुवावन वीर ~ , चोसठ सकत्तिमदत्त चलै, इत्यादि इसतरे

जती लोकोंनें एक रातमें मईकडों कोस मकानकू उडाके ले आये सोनाडोल गाम गोढ वाडमें वावन जिनालय मदिर मोजूद है, अजमेरमें अढाई दिनका झूपडा मोजूद है इत्यादि अनेक करामात जतियोंकी विद्यमान है आज कालके जघन्य जतियोका वयान जतीरासेमें लिखा है जोकी देहीकी शोभा करणेवाले (चाव पान मुख चोल दात मिसिया रग देवै कुल अधम व्रत किया धम चाहै और केवे, करै खतकोरणी उभय चक्षसुरमो आजै, करै चूडावणकेदभूत राक्षस वल भाजै, उडाय दे खाताज अन्न उडेज देवल अवरां, मजवूत वडा ठगकि सबमें सरव धूर्त श्वेतांवरा १ हे मित्र ये पडते कालका अस्त समनके जतियोंका स्वरूप अन्य दर्शनियोंनें देखावेसा कहा सरीरकी शोभा करै मगर भूत प्रेत वस करै अनाजकी रास और देवलोंका उडाणा इत्यादि करामात और धर्मका उपदेश देवे क्रिया धर्म पालणेकी चाह रखै ये भी लबधी समझ, फेर जोधपुर नरेस मानसिंघजीनें जतियोंका देखा सो स्वरूप लिखा है, काहूकी न आस राखै काहूपै न दीन भाखै करत प्रणाम सब रावराणा जे वडा, सीधीही आरोगै रोटी वैठा करै वात मोटी पातळा दुसाला अग ओढण पिछे वडा, खमा २ करै लोक कदेय न राखै सोक वाजत मृदग चग करा माती जे वडा, कहै राजा मान पेखो चित्तमें विचार देखो दुखी तो जगत दुखी सुखी एक से वडा १ एसे लबधिधारी जिन प्रतिमाके भक्त जती आचार्य जिनोंके प्रतिबोधे भये श्रीमाल ओसवाल पोरवाल वगेरे श्रावकोंसें जैन शासन अभी साडी १८ हजार वर्ष चलेगा अगर लद्धिवत जिन प्रतिमा भक्त जती नहीं होते तो क्या मगदूर है ढूढक तेरा पंथियोंकी सो

राजन्य कुलियोंको प्रतिबोध देकर जैन धर्म चलाते राधेकू राधणा करते हैं उदर निमित्त बहु कृतवेषा सिरस्तु मुडित लुचित केसा अवला उलटा समझाकर गुजरान करते है पक्षपात छोड अग चूलिया सूत्र सुणो भगवान फुरमाया है २१ हजार वर्ष जैन शासन जती मेरे निज शतानोंसे चलेगा, चट्टे पट्टे उखड जायगें, दूब रहेगी खूब,(प्र०) पांचमा प्रश्नमें ढूढकोंनें लिखा है भगवानकी वाणी द्वादसांगी सो सब मागधी प्राकृतमे हैं सस्कृत टीका निर्युक्ती नहीं है भाषाभी नहीं है सो जवाब प्राकृतसें देणा (उ०) अरे अज्ञात मित्रो वाणी तो द्वादशांगी है लेकिन् तुमसें पूछते हैं तेरे गुरुओंनें ३२ सूत्र केसें माना है इग्यारे अग तो अस भाग रहा और बारमा दृष्टिवाद सो विच्छेद गया तो वतलावो वाकी २१ सूत्र कहासें आये तुमकों जैन सासनके ग्रंथों की कुछ खबर नहीं है निर्युक्तिप्राकृत भाष्यभी प्राकृत है हाटीका जरूर सस्कृत है, भाषा नहीं पूछते तो सस्कृत प्राकृत क्या चीज है षट् भाषा है, प्राकृत १ सस्कृत २ पिसाची ३ मागधी ४ सौरसैनी ५ और अपभ्रम ६ (जो मुलकोंमें बोले जाती है) लेकिन् ये बात पडित जाणते हैं तेरे गुरू विचारे क्या जाणै छउ भाषामें व्याकर्ण है छउका कोस है, इत्यादि फेर तू भाषा नहीं पूछता तो तेरे गुरु पार्श्व चद्रसूरिकृत टव्वार्थ वाचकर तुम लोकोंकों वखाण सुणाते हैं वो क्या चीज है अपभ्रस भाषाकी रागें गाते हैं और कहते हो हम भाषा नहीं पूछते प्राकृत कोण तुमारे साधोंमें पढा है सो समझेगा सरव हम प्राकृतकी एक गाथा लिखते हैं तेरे गुरुओंसे अर्थ तो कर टव्वार्थ नहीं लिखा होगा उस जगे तेरे गुरुओंसें तज्ज

घधका ढूढक तेरा पथी कोईभी अर्थ नहीं कर सकेगा, अधा चूआ योधा धान, जेसे गुरु जेसे जुजमान, एसे चेकूनों विगर एसा सपाल बुद्धिमान तो नहीं करता देख समझ चारमे दृष्टिवादका ५ हिस्सा जिसमेंसें १ हिस्सेमें चौदे पूर्व हे जिसमें पहले पूर्वके आदमे प्रथम मगलाचरणमें गणधर देवजीने नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व्व साधुभ्य एसा सस्कृतसें पूर्व सरू किया है केवली भगवान् तो सर्वज्ञ सर्व दरसी हैई मगर द्वादशागी रचणेवाले गणधर देवजी चोदे पूर्वसें बाहिर कोई भी विद्या मत्र जत्र तत्र व्याकरण कोश छद अलकार नाटक चपू ७२ पुरुपकला ६४ स्त्रीकला जो अक्षर विज्ञान हैं सो बाकी नहीं रहा तो फिर नतोतू सस्कृत टीका निर्युक्ती भापा पूछता तो बोल क्या प्राकृतका व्याकरण ढूढक भीपमपथी पढे है सो प्राकृत पूछता हे अगर प्राकृत मानता है तो निर्युक्ती भाष्य प्राकृत है फेर एसा क्यों बोलाकै निर्युक्ती नहीं पूछता फेर देख टीका पहिले (अर्थ) तीर्थंकर फुरमाते है सूत्र पीछे गणधर रचते हैं अत्थभासई अरहा सुत्तरयति गणहरा सव्वे नदीकी टीकामें अर्थागमकू नित्य कहा सूत्र आगमकू अनित्य कहा कारण तीर्थंकरोंके चेले सूत्र नये २ शब्दोंसें रचते हैं, और अर्थ तो अनत तीर्थंकरोंका एक होता है, इसवास्ते सूत्रोंकी टीका अर्थ है सो विशेषपणे मानने योग्य है, टीकाकार लिखणेवाले उदाहरण अन्य २ दे देते हैं, मगर शब्दार्थ व्याकरण तीर्थंकरनें फुरमाया वो ही है, तू कहता है टीका नहीं पूछता हू, तो बतला, टीका विना भापा टव्वार्थ कहासे वणा (प्र०) तुम तो टीका तीर्थंकर भाषित कहते हो, तो [illegible] अभयदेवसूरि

हरिभद्राचार्य, हेमाचार्य, मलयगिरी वगेरोने, टीका वनाई प्रसिद्ध है (उ०) हे मित्र, इहां वणाणा उदाहरण शब्दोंका सिद्ध करणा लिखणेका नाम है, वाकी अर्थ तो सूत्रपर लिखा है सो तीर्थंकर भाषित है, जो आचार्योंकी टीका नहीं मानता, तो फेर, पन्नवणास्यामाचार्यकी दशमी कालिक शय्यभवसूरि का, व्यवहार भद्रवाहूका और सब सूत्रोंके अर्थोकी टीका निर्युक्ति भाष्यादिकोंके लिखणेवाले, रधिलाचार्य, देवर्द्धीगणि भी, आचार्यथे, इनोका लिखा उनमेंसें ३२ तो टालकर, सच्च किस प्रमाणसें और वाकी सूत्र टीका निर्युक्ती झूठ किस प्रमाणसें तुम लोक कहते हो, सो जवाब दो, जब आचार्योंके लिखे ३२ सूत्रोंकों गणधररचित मानते हो तो टीका तीर्थंकर भाषित माननेमे, आनाकानी क्यों, अनुयोग द्वारमें ढोढणिया, नदीसूत्रमें चलतेइ, २४० अक्षरोंमे दुर्विनीतपर उदाहरण दिया है, १४ ये कथाओ टीकाविना, कहासें आई है, भगवतीमे, कुक्कडमसे, मजारमसें, इसमेंसें एकमस वीर प्रभूनें खाया है, रेवतीकै घरसें, वतलावो, टीका विना इस पदका निरधार कोण कर सकता था, आचारागमें मच्छीमस तथा मस काटे विगरका साधुओंकों भुजिजा एसा लिखा है, अठि २ परिठविजा मस २ भुजिजा कहो एसे पदोंसें जैन धर्मकों कलक लगता सो टीका विना कोण मिटाता अभी अगरेजीमें आचाराग छपा उसमें सूत्रपर अर्थ अगरेज विद्वानोंनें कर दिया था कै जैनके साधू पहली मास खाते थे आचाराग सूत्रमें लिखा है तब टीका निर्युक्तीके अजाणे ढूढकोंने मच्छी मांसकों वनस्पती ठहराई, गुठलीकों अठि ठहराई, मगर प्राकृत व्याकर्ण पढे और संस्कृत व्याकर्ण पढे अगरेज विद्वान, एसी कल्पनाकों कब

माननेवाले थे ये झमेला बहोत दिन चला तब जतीपणेकी उत्कृष्टी क्रिया धारणेवाले क्रिया उद्धारी पन्यास गंभीर विजयजीनें टीका निर्युक्ती प्रमाणसें सिद्धकर दियाके लूती विष नामका महारोग होणेसें धर्म ध्यान स्वाध्यायमें अंतराय जाण वैद्य वचनसें मच्छीका या और मास गृहस्थसें लेकर एकात जगे जाकर उसमेंका हाड चुनके डाल दे बाकी माससें व्रणोंकोंसेकै सुक्र धातु भोग अर्थमे हैं इसवास्ते भुजिज्ञा याने बाहिर भोगमें ग्रहण करे भोग उपभोग फकत खाणा इतनाहीं अर्थवाचक नहीं किंतु सरीरकै जो जो पदार्थ काम आवे मकान वस्त्र गहणा स्त्री अतर पुष्प पगरखी ये सब पदार्थ भोगमें गिणे जाती है सब अंगेरेज विद्वानोंनें यथार्थ अर्थ जाण दुसरी वेर छपणेसें सुधारणा कबूल करा क्योंके ठाणाग वगेरे सूत्रमें प्रगट लिखा है मास खाय सो निश्चै नरकका आयू बाधे और जब साधू मास खाय तो अहिंसा परम धर्म्म केसें ठहरे सवेगी जती साधू तो अद्यापि परिपक्व कादा लसण अचित्त है तथापि व्यवहार अशुद्ध है लोकविरुद्ध है सो नहीं लेते हैं नहीं खाते हैं और तुमारे ढूढक तेरा पथी साधु प्रगट लेकर खाते हैं इसवास्ते टीका निर्युक्ती नहीं होती तो सूत्रोंमें जो सकेतक शब्द है उसका असली परमार्थ केसें निकलता और विना जती पडित कोण ये रहस्यको पहुचता और अंग्रेजी विद्वानोंका सशय दूर करता इसीतरे सूर्यपन्नत्ती सूत्रमें रेवती नक्षत्रकी शाति करणेका बलिदाणमें मियमसे (मृगमास) लिखा है दशमी कालिक सूत्रमें साधूकू लिखा है (पिट्टमस नभुजिज्ञा) यानें सूत्रका सीधा अर्थ तो पीठका मास नहीं खाणा एसा होता है तो हे मित्र टीका नहीं होय तो अर्थका अनर्थ हो जाता

एसा सूत्रोंमें सांकेतिक शब्द टीका विना केसें खुलता तू प्राकृतका स्वरूप कुछ नहीं जाणता प्राकृत तीन तरेका है एक प्राकृत तो एसा है सो जिसका कचा रूप सस्कृत सूत्र लगकर पक्का रूप प्राकृत होता है एक प्राकृत एसा है सो कचा रूपही प्राकृत जिसका सूत्र लगकर पक्का रूपभी प्राकृत होता है एक सम सस्कृत प्राकृत है सो सस्कृत प्राकृत दोनोंका एकही स्वरूप है (जेसें ससार दावानल दाहनीर) पाणिनी व्याकरणका कर्त्ता अष्टाध्याईकै अतमें एसा लिखा है (श्लोक) त्रिषष्टि चतुषष्टिर्वा वर्णा शभुमते मता प्राकृते सस्कृते चापि स्वय प्रोक्ता स्वयभुवा १ इसवास्ते सस्कृत प्राकृत वगेरे भाषा स्वयभू भगवान ऋषभ देवनेही चलाई अठारे लिपी चलाई नदीसूत्रमें दरज है इसवास्ते सस्कृत प्राकृत सब भगवद्वाणी है आठ वर्षके महावीर भगवानकू मातापिता मोहकै वस जब पढाणे भेजा तब इद्रका आसन डोला वृद्ध ब्राह्मनकै रूपसें इद्र आया जो प्रश्न इद्रनें पूछा सो अध्यापक जुबाब नहीं दे सका तब भगवाननें जबाब दिया भगवाननें सूत्र कहा इद्रने वृत्ती करी सो जैनेंद्रव्याकरण प्रसिद्ध भया उसमें सस्कृत प्राकृत दोनों शब्द सिद्ध किया है जब वो व्याकरणकों जैनियोंकै द्वेषियोंनें नष्ट करदी तब पाटण नगरमें सिद्धराज जयसिंहकी सभामें ब्राह्मणोंनें हस्सी करीकै जैनमतकै ८४ सूत्र व्याकरण रहित है तब श्री हेमाचार्यने सिद्ध हेमव्याकर्ण स्वोपज्ञ टीका समेत अष्टाध्याई ८४ हजार श्लोक प्रमाण रचकर पंडितोंको दिखाई सब ब्राह्मनोंने इस व्याकरणकी एसी तारीफ लिखी है के सात व्याकरण तारागण है सिद्ध हेम व्याकारणकू सूर्य या चद्रकी उपमा दीजाय तो यथार्थ है एसा प्रबध

चिंतामणीमें लिखा है इस व्याकरणमें भी सस्कृत प्राकृत दोनो सिद्ध कर दिया है जैन धर्मका साकटायन व्याकर्ण सब ब्राह्मणोंके व्याकरणोंसे पहले जमानेका व्याकर्ण अगरेजी विद्वानोने प्रमाणोंसें सिद्ध किया है उसके साहारेसें पाणनीनें अष्टाध्याई व्याकरण वेदके शब्द सिद्ध करणेको चद्रगुप्त राजाके जमानेमें वणाया जिसको २२ सो वर्ष भया एसा अगरेजी विद्वानोंने प्रमाणोंसे सिद्ध किया हे क्योंके साकटायनके सूत्रोंका वहोत जगे अपणे व्याकरणमें प्रमाण दिया है मेक्ष मूलर जेकोवी वूहलर वगेरे विद्वानोनें एसा निश्चय किया है सस्कृत हो चाहे प्राकृत होय प्रमाण युक्त सब विद्वाच मानते हैं तें प्राकृत २ सूत्र २ पुकारता था तो हमनें सूत्र पाठसे जिनमदिर जिनमूर्त्ति द्रव्य भावसें पूजा इत्यादि सन तेरे माने ३२ सूत्रोंसें सिद्ध करदी सूर्य जगत्प्रकाशक है घूघूको नहीं सूझे तो सूर्य क्या करै सस्कृतमें तत्वार्थ १०सूत्र दश पूर्वधारी श्रुत केवली उमा स्वातीजीनें वनाया ए सासुणा है सो सव जैन सघ मानता है सस्कृत माननेमें विद्वान तो सका करे नहीं मूर्खसें वचे नहीं आपही नामजूर है सूत्र सस्कृत प्राकृत दोनोंमे वणे भये हैं मिथ्यात्वके कारण मिश्र मोहनीका तेरे उदय है सो सत्यधर्मपर सका हो रही है मूर्के कहणेसें दया नहीं परमेश्वरकै कहे सन सूत्र माने सका कखा त्यागे तब दयाका मार्ग सूझे वाकी तो द्रव्य दया है ॰अधर्म बुद्धि त्याग जिन प्रतिमाकू जिनराज समझ कल्याण होगा अभी विक्रम सवत १९।६२ में पजाब देश नाभा नगरमे आत्मारामजीकै प्रशिष्य पडित श्री वल्लभविजयमुनि अमरसिंह ढूढक साधके सो वनलाल पूजके उदयचद ऋपसें राजा हीरासिंघके सामनें शास्त्रार्थ भया राजा साहिब तथा पडितोंनें निर्धार कर दिया साधू श्री वल्लभ

निजयका पक्ष अक्षर २ सच सच्चा है सोवनलाल पूज उदयचदका पक्ष तदन झूठा है हे मित्रो राजाओंकी सभामें हार चूके तोभी झूठा पक्ष नहीं छोडते हो क्या करोगे तुम, मति जेसी गती आनुपूर्वीद्वारा खिचे जाती है पजाब देशमें बहोत भव्य जीव सत्यधर्म कबूल करतेही जाते हैं सत्य जयति ओं शाति' ओ शाति. ओं शाति

श्री विक्रमपुर नगरमें गुणधर भूपतगग श्री जिनकीर्त्ति सूरीश्वरु प्रतपै सुजस अभग १ प्रश्न पाच हमसें किये, पारख गेवरचद, ताको उत्तर सच लिख्यो, सूत्र पाठ सुखकद २ ज्ञानयुक्त किरियासही, पाले सो गुरु होय, तीर्थंकरकी थापना, गुरु जनकी गुरु जोय ३ नदी सूत्रमे नूद है, सूत्र ८४ साख, उन सबकों मञ्जूर कर, जिन वच अमृत चाख ४ ज्ञान विना अधी क्रिया, क्रिया रहित नहीं ज्ञान, दोनू श्रद्धा धारकर जिन प्रतिमा पहचाण ५ ओ छ अधिक परमाद वस, जो लिखणेमें होय मनसु मिथ्या दुष्कृत पाप आलोयण जोय ६ सवत श्री महावीरका चोवीस सय पैंतीस, असाढ सुदि द्वितीया दिने, लिख्यो ग्रथ सुजगीस ७ जेसे तुमारे प्रश्न थे, यथार्थ उत्तर दीन, अहकार इर्ष्या नहीं, समझो तत्व प्रवीण ८ खरतर भट्टारकगणी, धर्म शील गुरुराज, समकित जिन वच कुशलमें, भयो निधान समाज ९ उपाध्याय सुक्ति जलधि, राममणि ऋद्धिसार, प्रश्नोत्तर सिद्ध मूर्त्तिकर, दियो जगत सुखकार १० साड केसरीचदकै, आग्रह तें यह कीन, शुद्ध श्रद्धा धारण करो, जिन प्रतिमा गुणचीन ११ पडित जीवण प्रेमचद, अमरचद उपदेश, देते जग मगल करो ऋद्धि सिद्धि लहो हमेस १२ इति श्री जिनाज्ञाप्रदीप सिद्ध मूर्त्ति विवेक विलास भाग २ सपूर्ण ॥

अनुक्रमणिका।



ग्राहक महाशयोंके नाम.

राक्षापु॰

११	श्रीमेघराजजी खजानची	बीकानेर
११	श्रीकेवलचदमानमल साड	बीकानेर
११	श्रीमाणकचदजी बोथरा	बीकानेर
११	श्रीमाहहसराजजी वरढिया	बीकानेर
११।	श्रीसुगणचदजी सावणसूक	बीकानेर
११।	श्रीपूनमचद बलदेवदास सेठी	बीकानेर
११।	श्रीसुगणचद रूपचद रामपुरिया	बीकानेर
११।	श्रीआसकरण अमीचद कोचर	बीकानेर
११।	श्रीमु। मानमलजी कोचर	बीकानेर
११।	श्रीजेठमलजी कोचर	बीकानेर
११।	श्रीआसकरणजी वरढिया	बीकानेर
११।	श्रीसा। मोजराजजी कोचर	बीकानेर
११।	श्रीरामचद भेरू दान राखेचा	बीकानेर
४।	श्रीमाणकचदजी नाहटा	बीकानेर
५।	श्रीनेमीचद लूणकरण कोचर	बीकानेर
२।	श्रीवछराज भूरसी नाहटा	बीकानेर
२।	श्रीलाभचदजी पारख	बीकानेर
२।	श्रीसूरजमलजी खजानची	बीकानेर
२।	श्रीतेजकरण मूलचद रामपुरिया	बीकानेर
२।	श्रीविरधीचद लूणकरण कोचर	बीकानेर

२। श्रीमुनीलालजी भूरा	बीकानेर
२। श्रीचूनीलालजी गोलछा	बीकानेर
२। श्रीतेजकरण मगलचद कोचर	बीकानेर
२। श्रीचूनीलाल जेठमल कोचर	बीकानेर
१ श्रीमेघराजजी नाहटा	बीकानेर
२। श्रीमान कनरबाई	बीकानेर
१। श्रीसेठ नेमीचदजी धाडेवाल	बीकानेर
१। श्रीमोजराजजी गोलछा	बीकानेर
१। श्रीमोतीलालजी बाठिया	बीकानेर
१ श्रीदीपचद अमरचद कोचर	बीकानेर
१ इदराजमलजी कोचर	बीकानेर
१। श्रीकुदणमलजी सुसरप	बीकानेर
१। श्रीपीरचदपेमचद गोलछा।	हेदराबाद
४। श्रीसूरजमलजी बडेर	बीकानेर
१। श्रीचूनीलालजी बानेल	हनूमानगढ
१। श्रीलछमनदास सिवलालसेठ	परभणी
१। श्रीमूलचदजी कोचर	बीकानेर
२। श्रीजैनमित्रमडल सभा	भोपाल

२। श्रीगुनीलालजी मूरा
२। श्रीचूनीलालजी गोलछा
२। श्रीतेजकरण मगलचद कोचर
२। श्रीचूनीलाल जेठमल कोचर
१ श्रीमेघराजजी नाहटा
२। श्रीमान कनरवाई
१। श्रीसेठ नेमीचदजी धाडेवाल
१। श्रीमोजराजजी गोलछा
१। श्रीमोतीलालजी वाठिया
१ श्रीदीपचद अमरचद कोचर
१ इदराजमलजी कोचर
१। श्रीकुदणमलजी सुमरप
१। श्रीपीरचदपेमचद गोलछा।
४। श्रीसूरजमलजी वडेर
१। श्रीचूनीलालजी वावैल
१। श्रीलछमनदास सिवलालसेठ
१। श्रीमूलचदजी कोचर
२। श्रीजैनमित्रमडल सभा